मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

# शाबर मन्त्र-संग्रह

## भाग ८

मेरी भक्ति-गुरू की शक्ति-फुरो मन्त्र-ईश्वरो वाचा

कल्याण मन्दिर प्रकाशन
इलाहाबाद-२११००६

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

# शाबर मन्त्र-संग्रह

मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।
मेरी भक्ति। गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

(आठवाँ भाग)

आदि-सम्पादक
'कुल-भूषण' पण्डित रमादत्त शुक्ल
सम्पादक
ऋतशील शर्मा

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

दूरभाष (०५३२)२५०२७८३
मोबाइल : ९४५०२२२७६७

सर्वाधिकार सुरक्षित

चौथा संस्सकरण
गुप्त नवरात्र, सं० २०६९ वि०
(२० जून, २०१२)

मूल्य : ३५-००

मुद्रक :
परा-वाणी प्रेस
अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

# अनुक्रम

१ पाठकों के पत्र ... ७

२ शाबर मन्त्रों का प्रभाव और साधना ... ८

❀ श्री जेरामभाई लक्ष्मणभाई भरद्वाज, राणीप, अहमदाबाद

[ १ सर्व-सिद्धि-दायक 'शबरी-यन्त्र' की प्रतिष्ठा, २ धन-प्राप्ति के प्रयोग ]

३ भूल-सुधार (शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ७) ... ११

४ सिद्ध कामाख्या मोहन-मन्त्र ... १३

❀ श्री महावीर पोद्दार, पो० बारा पलासी, दुमका (बिहार)

[ १ नारी-मोहन-मन्त्र, २ अधिकारी-मोहन-मन्त्र, ३ ग्राम-मोहन-मन्त्र, ४ सभा-मोहन-मन्त्र, ५ शत्रु - मोहन - मन्त्र, ६ गुड़-मोहन-मन्त्र ]

५ सिद्ध शाबर मन्त्र-कल्पतरु ... १७

❀ पं० ओङ्कारप्रसाद शुक्ल, जैतहरी, शहडोल (म० प्र०)

६ गुप्त शाबर मन्त्र ... २०

❀ पं. रामशरण शर्मा, पो. रुड़की, हरिद्वार (उ. प्र.)

[ १ मन्त्र द्वारा हनुमान जी की चौकी, २ शरीर रक्षा-मन्त्र, ३ बिच्छू-दर्द-निवारक मन्त्र, ४ खून की धार बाँधने का मन्त्र, ५ भूत-प्रेत उतारने का मन्त्र, ६ छावा - मन्त्र, ७ सिर-दर्द, फोड़े-फुन्सी-निवारक मन्त्र ]

७ नाथ-पन्थीय साधना-क्रम ... २५

❀ श्री अनिल गोविन्द बोकील, हडपसर, पुणे (महा-राष्ट्र)

[ १ नव-नाथ-पन्थ, २ नित्य की साधनाएँ, ३ कुछ नाथ-पन्थी सङ्केत, ४ 'राम'-नाम का नाथ-पन्थी रहस्य, ५ श्री नव-नाथ-कृपा-प्राप्ति-प्रयोग, ६ नव - नाथ - पन्थी शक्ति-साधना, ७ नाथ-पन्थी श्रीदत्तात्रेय-साधना, ८ नाथ-पन्थी सिद्ध-उपासना, ९ नाथ-पन्थी चामुण्डा-उपासना, १० अनुभूत साधना - क्रम, ११ साधना - क्रम का विश्लेषण, १२ वृश्चिक दंश का अनुभूत मन्त्र, भूल - सुधार, शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ७ (पृष्ठ ७५) के कठिन शब्द । ]

८ प्रचलित शाबर मन्त्र ... ४९

❀ 'कुल-वाणी-रत्न' पं. रामशङ्कर उपाध्याय, बक्सर (बिहार)

[ १ विषैले जन्तुओं का विष - निवारण, २ बाई - पीड़ा (वात-दर्द) निवारण, ३ लङ्घन-निवारण, ४ चोर (चमक) दर्द-निवारण, ५ कटे - जले घाव की चिकित्सा, ६ टोना-निवारण, ७ शिर - दर्द - निवारण, ८ आधा शीशी, ज्वर, चमक, पेट-दर्द-निवारण, ९ दृष्टि - दोष आदि से दुधारू पशु के दूध न देने पर, १० आत्म-रक्षा ]

९ बङ्गाली शाबर-मन्त्र-संग्रह ... ५३

❀ श्री सन्तोषकुमार धुटके, महात्मानगर, नासिक (महा-राष्ट्र)

[ १ साँप के जहर को बाँधना, २ अञ्चल में बाँधने का मन्त्र, ३ जल को अभिमन्त्रित करने का मन्त्र, ४ विष को फूंक से उतारना, ५ थप्पड़ मारने का मन्त्र, ६ फूंकने का मन्त्र, ७ थूक से विष हटाने का मन्त्र, ८ विष को झाड़ने का मन्त्र, ९ जल पिलाने या तेल लगाने का मन्त्र, १० घाव को फूंकने का मन्त्र, ११ थाली चिपकाने का मन्त्र, १२ दर्द दूर करना, १३ पेट से आँव, खून निकलना

बन्द करना, १४ बगली - दर्द का मन्त्र, १५ सर्व-रोग-निवारण चुटकी - मन्त्र, १६ अतिसार - नाशक मन्त्र, १७ क्रोध शान्त करना, १८ कुत्ते और गीदड़ का विष उतारना, १९ ततैया भौंरे का विष उतारना, २० सुख-प्रसव मन्त्र, २१ बोड्डा सांप का विष उतारना, २२ रक्षा-मन्त्र, २३ भौतिक आत्म-रक्षा मन्त्र, २४ भूत छुड़ाने का मन्त्र, २५ विष - नाशक मन्त्र, २६ धनुष - विद्या मन्त्र, २७ खड्ग-स्तम्भन मन्त्र, २८ शरीर - वेध - मोचन मन्त्र, २९ सर्व प्रकार के बन्धन-छेदन का मन्त्र ]

१० छत्तीसगढ़ के शाबर मन्त्र ... ६५

❀ पं. कान्तिकुमार दुबे, बालकोनगर, बिलासपुर (म. प्र.)

११ दुर्लभ शाबर मन्त्र ... ६९

❀ श्री प्रदीपकुमार नन्दगोपाल व्यास, कोट, डीडवाना (राज.)

[ १ देह - रक्षा - मन्त्र, २ नृसिंह-मन्त्र, ३ हनुमान जी का सर्व-कार्य-सिद्धि मन्त्र, ४ अभिचार निवारक मन्त्र, ५ सर्व-आधि - व्याधि रक्षा - कारी मन्त्र, ६ पीलिया झाड़ने का मन्त्र, ७ सर्व - सिद्धि-प्रयोग, ८ देवाङ्गना - प्राप्ति मन्त्र, ९ आकर्षण-मन्त्र, १०-११ बावन वीर का शत्रु - नाशक प्रयोग, १२ मणि-भद्र क्षेत्रपाल-मन्त्र, १३ आत्म-रक्षा मन्त्र १४ वशीकरण - मन्त्र, १५ पञ्चांगुलि देवी की साधना, १६ हाजरात के मन्त्र, १७ 'मूठ' उतारने का मन्त्र, १८ सर्व - कामना - सिद्धि-मन्त्र, १९ अति-वृष्टि-शान्ति-प्रयोग ]

१२ भैरव जी का शाबर मन्त्र ... ८०

काली के प्रत्यक्ष दर्शन का मन्त्र ... ८०

❀ डा. जगदीशशरण बिलगइयाँ, चामुण्डा-शक्ति-पीठ, दतिया

१३ सर्व-कार्य-कारी सिद्ध मन्त्र ... ८१

❀ पं. रामजी पाठक, दारागञ्ज, प्रयाग-राज (उ. प्र.)

१४ विविध कार्य-साधक अम्बिका-मन्त्र ... ८२

❀ पं. रामलखन उपाध्याय, बँधवा, मेजा रोड, प्रयाग (उ. प्र.)

१५ शीघ्र फलदायी शाबर-प्रयोग ... ८४

❀ पं. भूपेन्द्रदत्त शर्मा, नदी मार्ग, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)

१ हनुमान जी की कृपा - प्राप्ति, २ पीर मजार की कृपा-प्राप्ति, ३ चमत्कारी प्रयोग, ४ तान्त्रिक सुगन्ध, ५ भूल-सुधार ]

१६ सिद्ध जञ्जीरा मन्त्र ... ८७

❀ श्री प्रदीपकुमार नन्दगोपाल व्यास, कोट, डीडवाना (राज.)

[ १ हनुमान जञ्जीरा, २ भैरव जञ्जीरा, ३ साँगलियाँ की धूनी का जञ्जीरा, ४ सिद्ध भैरव-मन्त्र, ५ श्रीबटुक-भैरव उतारा विधि, ६ कृत्या-निवारण हेतु प्रयोग]

१७ बगला महा-विद्या शत्रु-विध्वंसक-प्रयोग ... ९१

❀ श्री कौशिकाचार्य जी महाराज, नैनी, प्रयाग-राज (उ. प्र.)

१८ जिज्ञासाएँ और समाधान ... ९३

# पाठकों के पत्र

कल्याण मन्दिर प्रकाशन, प्रयाग ने 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' प्रकाशित कर बहुत बड़ा उपकार किया। 'तन्त्र-शास्त्र' में श्रद्धा तो सबकी है, किन्तु कठिनाइयों से जन-साधारण मन मसोस कर शान्त बैठा था। शाबर मन्त्रों में कठिनाइयाँ तो हैं ही नहीं और परिणाम इतने शीघ्र और सफल कि पाठकों का मन ललचाए बिना नहीं रह सकता। जनता-जनार्दन की कामना उक्त प्रकाशन ने पूरी कर दी है। तथापि अभी बहुत बाकी है। शाबर मन्त्रों की इति नहीं है, अतः प्रकाशन की समाप्ति भी नहीं हो सकती, यदि 'कल्याण मन्दिर प्रकाशन' उदार रहा, तो 'शाबर - मन्त्र - संग्रह' की अनेकों पुस्तकें प्रकाशित होंगी। इसकी माँग और प्रशंसा के पत्र हम प्रस्तुत-कर्त्ताओं को बड़ी संख्या में प्राप्त हो रहे हैं।

श्री ब्रह्मप्रकाश सोनी, आयुर्वेद - रत्न, ३/३३६ वृन्दावन पार्क, हाउसिंग बोर्ड, पाली-मारवाड़ लिखते हैं कि—"···आप सबके जीवन में त्रिविध ज्योति का उद्‌भव हो।" ··

आपने 'शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ५ में प्रकाशित मेरे मन्त्रों से लाभान्वित होकर धन्यवाद-ज्ञापन किया है और भविष्य में कुछ और प्राप्ति हेतु आकांक्षा की है। आपके पत्रों का तार-तम्य चल रहा है।

एक अन्य सज्जन गुजरात के हैं। आप गोण्डल के सम्भ्रान्त एडवोकेट हैं एवं अच्छे साधक भी। आप अपने पत्र में लिखते हैं—"परम पूज्य श्री रामशङ्कर उपाध्याय, अनन्त कोटि साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम! मैं 'हाजरात' या दर्शन के शाबर-मन्त्रों की खोज में जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। कल्याण मन्दिर प्रकाशन, प्रयाग-राज से प्रकाशित 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के सभी भाग मेरे पास हैं। पढ़कर बहुत - बहुत आनन्द हुआ। शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ६, पृष्ठ ५३ पर 'हाजरात मन्त्र' है, लेकिन उसमें बताया है कि बच्चे और स्त्रियाँ ही देख सकती हैं, पुरुष नहीं। पुरुष देख सकें, ऐसे 'हाजरात' का शाबर मन्त्र मिले, तो मेरा

( शेष पृष्ठ ८ पर )

# शाबर मन्त्रों का प्रभाव और साधना

**प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री जेरामभाई लक्ष्मणभाई भारद्वाज**

श्री चामुण्डा ज्योतिष-केन्द्र, 'देवी-कृपा',
ए-१६० नेमीनगर, राणीप, अहमदाबाद (गुजरात)

'शाबर'-मन्त्रों का प्रभाव अचूक होता है। इस विद्या के पितामह भगवान् दत्तात्रेय हैं। भगवान् दत्तात्रेय ने भगवान् मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षनाथ आदि नव-नाथों को यह विद्या बताई थी। आदि - शङ्कराचार्य ने भी तपस्या करके 'शाबरी माता' का आशीर्वाद प्राप्त किया था। 'नव-नाथ-पन्थ' में 'शाबर' - मन्त्रों को ही प्रमुखता प्राप्त थी, परन्तु इनका दुरुपयोग न हो, इसलिए यह विद्या गुप्त ही रही।

'शाबर - मन्त्र - साधना' का प्रारम्भ मङ्गलवार या शुक्रवार से करना चाहिए। सबसे पहले 'सङ्कल्प' करे। यथा—'हे माता! आज से मैं तेरे मन्त्र का 'जप' आरम्भ करता हूँ। मेरी आधि-व्याधि, दुःख-दारिद्र्य से रक्षा करना और हमें दर्शन देना।'

---

(पृष्ठ ८ का शेष)

शेष जीवन आनन्द-सुख-प्रगति-मय बना रहेगा। अगर आपके पास ऐसा मन्त्र हो, तो कृपा करें क्योंकि बिहार-बङ्गाल में शाबर-मन्त्रों का व्यवहार बहुत है···।"

उक्त विवरणों से स्पष्ट है कि शाबर-मन्त्रों के लिए कितने सज्जन लालायित हैं और किस सिनिमेष दृष्टि से अग्रिम प्रकाशन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं तो यथा-शक्ति अपने सञ्चित हृदयागार के सभी मन्त्रों से सेवा करता ही रहूँगा। साथ ही अन्य सज्जनों से आग्रह करूँगा कि उदार हृदय से गुप्त मन्त्रों का प्रकाशन कर जनता - जनार्दन की सेवा करें। सम्पादक या प्रकाशक महोदय भी लेखकों या मन्त्र-प्रस्तोताओं को उचित सम्मान देते हुए उन्हें प्रोत्साहित करते रहें। तभी लोकप्रिय प्रकाशन की सुन्दर प्रस्तुति हो सकेगी।

—रामशङ्कर उपाध्याय

'सङ्कल्प' के बाद ६, १८ या २१ दिनों का अनुष्ठान करे। नित्य ११ माला 'जप' करे। इसके बाद नित्य ३ या ७ बार 'जप' करता रहे। 'जप' पूर्वाभिमुख होकर करना चाहिए।

## सर्व-सिद्धि-दायक शाबरी यन्त्र' की प्रतिष्ठा

'शाबर' - मन्त्रों के अनुष्ठान की पूर्ण सफलता के लिए 'शाबरी यन्त्र' को सिद्ध करना चाहिए। इसके लिए अपने सामने लकड़ी का एक पाटा रक्खे। पाटे पर पीला रेशमी वस्त्र बिछाए। रेशमी वस्त्र पर तीन या पाँच मुट्ठी अक्षत रखे। अक्षत के सामने कागज पर छपा हुआ या धातु पर उत्कीर्ण सर्व-सिद्धि-दायक 'शाबर-यन्त्र' (देखें चित्र, आवरण पृष्ठ पर) रखे। 'यन्त्र' यदि धातु का हो, तो गङ्गा - जल या शुद्ध जल से उसे स्नान कराए और स्वच्छ वस्त्र से पोंछ दे। फिर उस पर चन्दन, रोली आदि लगाए। यन्त्र के सम्मुख दीप जलाए और अगर-बत्ती-धूपादि से सुगन्धित करे। पुष्प और बिल्व-पत्रादि चढ़ाए। तब 'गण-पति' और 'गुरु' का स्मरण कर 'यन्त्र' के सम्मुख हाथ जोड़ कर निम्न मन्त्र पढ़े—

**ॐ ह्राङ्क ह्रीङ्क क्लीङ्क ह्रौङ्क ब्ल्युङ्क ह्रौङ्क हुँः।**

उक्त मन्त्र पढ़ने के बाद निम्न मन्त्र जपे—

**ॐ नमो शाबरी-शक्ति ! मम अरिष्ट निवारय, मम सर्व-कार्य सिद्धं, सिद्धं कुरु-कुरु स्वाहा।**

'जप' के बाद 'यन्त्र' को प्रणाम कर स्वच्छ वस्त्र या डिबिया आदि में अपने पास रखे। इससे सभी कार्य शीघ्र सिद्ध होंगे। सङ्कटों का निवारण होगा। दुःख-दारिद्र्य की निवृत्ति होगी और धन की प्राप्ति होगी। 'यन्त्र' जहाँ भी होगा या स्थापित होगा, वहाँ की सभी प्रकार की अला-बला, भूतादिक उपद्रव नष्ट हो जाते हैं।

## धन-प्राप्ति के लिए प्रभावी 'शाबर'-मन्त्र

'शाबर-मन्त्र-साधना' में धन - प्राप्ति के लिए प्रभावी मन्त्र इस प्रकार हैं—

१ **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रिये नमो भनवति ! मम समृद्धयो जवल जवल, मा सर्व सम्पद देहि, ममालक्ष्मी नाशय नाशय, हुँ फट् स्वाहा।**

**विधि :** उक्त मन्त्र को उपर्युक्त विधि से २१ माला २१ दिनों तक नित्य जपे। २१ दिन तक मन्त्र जप करने के बाद धृत से १०८ आहुतियाँ दे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। इसके बाद नित्य एक माला 'जप' करने से धन-धान्य की वृद्धि होती रहेगी।

**२ कुबेर ! त्वं धनाधीश, गृहे ते कमला स्थिता, ता देवी प्रशयाशुं, त्वं मद गृहे ते नमो नमः ॥**

**विधि :** उक्त मन्त्र का २१ दिनों तक नित्य ९ माला जप करे। इस प्रकार मन्त्र-जप करने के बाद गो-घृत, दूर्वा (दूब) और पुष्प से १०८ आहुतियाँ दे। इससे दरिद्रता दूर होगी।

**३ ॐ तारत्रि नमः। ऋद्धि-वृद्धि कुरु-कुरु स्वाहा।**

**विधि :** पवित्र भाव से रात्रि के १२ बजे के बाद (मध्य-रात्रि में), धूप-दीप जलाकर उक्त मन्त्र का १,१८८ बार जप करे। ऐसा २१ दिनों तक करे। इस मन्त्र से शीघ्र प्रगति होती है और अनायास धन की प्राप्ति होती है। 'ग्रहण-काल' में घृत-दूर्वा-काली मिर्च-जटामांसी मिलाकर १०८ आहुतियाँ दे। नित्य १ माला 'जप' करता रहे।

**४ ॐ अैं ह्रीं श्रीं सं सिद्धिदा ! साधय साधय स्वाहा।**

**विधि :** पूर्वोक्त विधि। यह मन्त्र ऋण - मुक्ति हेतु विशेषतया लाभ-कारी है।

**५ आं ह्रीं क्रौं श्रीं श्रियै नमः। ममालक्ष्मी नाशय नाशय। माम ऋणौतीर्ण कुरु कुरु, सम्पदं वर्धय वर्धय, स्वाहा।**

**विधि :** उक्त मन्त्र की जप-संख्या दश हजार है। ४४ दिनों का अनुष्ठान है। नित्य २२८ बार ४३ दिनों तक 'जप' करे और ४४ वें दिन १९६ बार 'जप' करे। बाद में नित्य दस बार मन्त्र जपता रहे। इससे धन-सम्पदा की प्राप्ति होती है और ऋणों से निवृत्ति होती है।

# भूल-सुधार

**१ शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ७, पृष्ठ १०५—'सर्वार्थ-सिद्धि-दायक यन्त्र'** छपा है। यह यन्त्र अशुद्ध छपा है। 'काम-रत्न-तन्त्र' (वाराणसी से प्रकाशित) आदि ग्रन्थों में भी यह अशुद्ध छपा है। ऐसे ग्रन्थों के कारण ही लोग निरन्तर भूल करते जा रहे हैं, जिससे अभीष्ट की सिद्धि नहीं होती। अतः यह आवश्यक है कि भूल को सुधारा जाए।

उक्त यन्त्र वस्तुतः 'श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी देवी' का पूजा-यन्त्र है। यह यन्त्र शीघ्र लक्ष्मी-दायक '३५ अक्षरी नानक-मन्त्र' से भी सम्बन्धित है। दुःख की बात है कि यह मन्त्र भी 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६, पृष्ठ ७०-७१ पर अशुद्ध एवं अपूर्ण छपा है। ३५ अक्षरों के स्थान पर केवल ३० अक्षर हैं! पञ्चम में 'ता था दा धा ना' छूट गए हैं। मन्त्र अपूर्ण है। (पूरे मन्त्र का शोध कर उसे 'शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ६' में पुनः प्रकाशित किया जाएगा।—सं०]

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ १०५ पर छपे 'सर्वार्थ-सिद्धि-दायक यन्त्र' का शुद्ध स्वरूप निम्न प्रकार है—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ईशान | | पूर्व | | आग्नेय |
| | अं अः<br>ळ क्षः | अ आ<br>क ख ग घ ङ | इ ई<br>च छ ज झ ञ | |
| उत्तर | ओ औ<br>श ष स ह | | उ ऊ<br>ट ठ ड ढ ण | दक्षिण |
| | ए ऐ<br>य र ल व | ऌ ॡ<br>प फ ब भ म | ऋ ॠ<br>त थ द ध न | |
| वायव्य | | पश्चिम | | नैऋत्य |

उक्त यन्त्र में कुल २५ कोष्ठ हैं—दश प्राण, दश इन्द्रिय, पाँच तन्मात्राएँ। १६ स्वर—सोलह कला और शक्ति-मय ३५ व्यञ्जन हैं।

यह पूर्व से प्रारम्भ होता है और ईशान में लय होता है। आठ दिशाएँ—आठ योगिनियाँ हैं। इस यन्त्र को सिद्ध करके मध्य में 'साधक' या 'धारक' का नाम लिखकर धारण किया जाता है अथवा पूजन में रखकर पूजन-ध्यान (त्राटक) किया जाता है।

उक्त यन्त्र का एक बहुत सुन्दर प्रयोग है। इस प्रयोग में साधक को नित्य २१ दूर्वांकुर २१ दिनों तक चढ़ाने चाहिए। चढ़ाए हुए दूर्वांकुरों का संग्रह कर २२ वें दिन उन्हें जल में प्रवाहित करना चाहिए। एक-एक करके दूर्वांकुरों को प्रवाहित करे। जो दूर्वा विपरीत गति से लौट कर वापस आए, वह प्रयोग-कर्त्ता साधक के लिए सिद्धि-मयी होगी। प्रयोग में एक बार में सफलता न मिले, तो दुबारा-तिबारा करे। तीसरी बार अवश्य सफलता मिलेगी।

**२ 'शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ७, पृष्ठ ११८—**

(१) 'विशेष' के अन्तर्गत छपा है—'उक्त मन्त्रों का एक ही 'जप' करने मात्र'। इसके स्थान पर कृपया निम्न प्रकार सुधार कर लें—

"उक्त मन्त्रों का एक ही रात्रि जप करने मात्र"

(२) प्रस्तुत-कर्त्ता श्री के० के० दुबे के पते में 'टिस्ट्रा' के स्थान पर 'नया रिस्दा' कर लें।

**३ 'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७, पृष्ठ ११२, पंक्ति २-५ को निम्न** प्रकार पढ़े—'भुवनेश्वरी बीज 'ह्रीं' भी लिखे। दस हजार 'यन्त्र' लिखते ही साधक की वाणी सिद्ध हो जाएगी और उसके पश्चात् प्रति - दिन ११ यन्त्र लिखे और एक माला मन्त्र जपे। भूत-भविष्य-वर्तमान कथन का आश्चर्य-जनक फल प्राप्त होगा।...'

एक दुर्लभ पुस्तक के आधार पर :

# सिद्ध कामाख्या मोहन-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री महावीर पोद्दार
पो० वारा पलासी, दुमका (बिहार)

## १. नारी-मोहन मन्त्र

"आ चन्दा की चाँदनी, होकर उन्मादिनी। सतगुरु की है पुकार। मान-मान मानिनी॥ तुझे कामाक्षा की आन, छोड़ हठः चीर घटा-पट। आ जा नदी के किनार, गा ले प्रीति रागिनी॥ ॐ नमः कामाक्षाय अंकंचंटंतंपंयंशं ह्रींक्रींश्रीं फट् स्वाहा॥".

**विधि :** किसी पूर्णिमा की रात को नदी के किनारे, एकान्त स्थान में पूर्व की ओर मुख करके आसन पर बैठे। १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़कर एक फूल नदी में डाल दे। इस क्रिया से यह मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। फिर जब चाहे, इस मन्त्र से अभिमन्त्रित फूल या रूमाल आदि कोई भी सुहावनी वस्तु, किसी भी युक्ति से, साध्या के हाथ में दे। साध्या मोहित होकर उसकी आज्ञानुवर्तिनी बन जायगी।

## २. अधिकारी-मोहन-मन्त्र

"ॐ नमो प्रजापत्यै नृपति-मन मोहय सर्वं सेद्धय नमः। कामाक्षात अंकंचंटंतंपंयंशं ह्रींक्रींश्रीं फट् स्वाहा॥"

**विधि :** शुक्ला पञ्चमी की रात्रि में 'चन्दन-काष्ठ' के पीढ़े पर बैठकर उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करे। जप करते समय श्री कामाक्षा देवी का ध्यान करता रहे, तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। जिस अधिकारी के गले में उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित फूलों की माला पहनाएँगे, वह मोहित हो जाएगा।

## ३. ग्राम-मोहन-मन्त्र

"जल - जल—जीवन - दाता जल। जल के राजा कूप, जहाँ बसे वरुण भूप॥ दोहाई कामाख्या की, मोहनी चला दे। भूप को फँसा

कूप में, माया फैला दे ॥ तेरी महिमा महान, रख ले सतगुरु की आन ॥ ॐ नमः कामाक्षाय अंकंचंटंतंपंयंशं ह्रींक्रींश्रीं फट् स्वाहा ॥"

**विधि :** शुक्ला एकादशी की अर्द्ध-रात्रि में किसी कुएँ के पास सवा सेर शक्कर (चीनी) लेकर जाए और पूर्व की ओर मुख कर, उल्लू के पङ्ख पर पाँव रखकर बैठे। १०८ बार उक्त मन्त्र पढ़ कर शक्कर को कुएँ में डाल दे। जितने नर-नारी उस कुएँ का जल पिएँगे, सभी जप - कर्ता पर मोहित होकर उसकी आज्ञा से प्राण तक देने के लिए सदा तैयार रहेंगे।

### ४. सभा-मोहन मन्त्र

"गङ्गा किनार की पीली - पीली माटी। चन्दन के रूप में बिके हाटी-हाटी ॥ तुझे गङ्गा की कसम, तुझे कामाक्षा की दोहाई। मान ले सत-गुरु की बात, दिखा दे करामात। खींच जादू का कमान, चला दे मोहन बान। मोहे जन-जन के प्राण, तुझे गङ्गा की आन। ॐ नमः कामाक्षाय अंकंचंटंतंपंयंशं ह्रींक्रींश्रीं फट् स्वाहा ॥"

**विधि :** जिस दिन सभा को मोहित करना हो, उस दिन उषा-काल में नित्य-कर्मों से निपट कर 'गङ्गोट' (गङ्गा की मिट्टी) का चन्दन गङ्गा-जल में घिस ले और उसे १०८ बार उक्त मन्त्र से अभि-मन्त्रित करे। फिर श्री कामाक्षा देवी का ध्यान कर उस चन्दन को ललाट (मस्तक) में लगा कर सभा में जाए, तो सभा के सभी लोग जप-कर्ता की बातों पर मुग्ध हो जाएँगे।

### ५. शत्रु-मोहन मन्त्र

"चन्द्र-शत्रु राहू पर, विष्णु का चले चक्र। भागे भयभीत शत्रु, देखे जब चन्द्र वक्र। दोहाई कामाक्षा देवी की, फूंक-फूंक मोहन-मन्त्र। मोह-मोह—शत्रु मोह, सत्य तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र ॥ तुझे शङ्कर की आन, सत-गुरु का कहना मान। ॐ नमः कामाक्षाय अंकंचंटंतंपंयंशं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा ॥"

**विधि :** 'चन्द्र - ग्रहण' या 'सूर्य - ग्रहण' के समय किसी बारहों मास बहनेवाली नदी के किनारे, कमर भर जल में पूर्व की ओर मुख करके खड़ा हो जाए। जब तक ग्रहण लगा रहे, श्री कामाक्षा देवी का ध्यान करते हुए उक्त मन्त्र का पाठ करता रहे। ग्रहण का 'मोक्ष' होने

पर सात डुबकियाँ लगाकर स्नान करे। आठवीं डुबकी लगाकर नदी के जल के भीतर की मिट्टी बाहर निकाले। उस मिट्टी को अपने पास सुरक्षित रखे। जब किसी शत्रु को सम्मोहित करना हो, तब स्नानादि से निपट कर उक्त मन्त्र को १०८ बार पढ़ कर-उसी मिट्टी का चन्दन ललाट (मस्तक) पर लगाए और शत्रु के पास जाए। शत्रु इस प्रकार सम्मोहित हो जायगा कि शत्रुता छोड़कर उस दिन से उसका सच्चा मित्र बन जाएगा।

## ६. 'गुड़'-मोहन मन्त्र

"बन में उपजे बन की घास, जिसके रस में भारी मिठास ॥ पी-पी पथिक मिटाए प्यास। घास पुराए सबकी आश ॥ रस से गुड़, गुड़ से बन शक्कर। मोहे सुर-नृप-योगी-फक्कर ॥ दोहाई कामाक्षा देवी की, गुड़ में कर दे माया। जिस-जिसके मुख में पड़े, मोहे मन-काया ॥ मन्त्र फुरो, ईश्वरो वाचा—शब्द न होवे काँचा। जा-जा रे गुड़ ! कर सत-गुरु का वचन साँचा। ॐ नमः कामाक्षाय अंकंचंटंतंपंयंशं ह्रींक्रींश्रीं फट् स्वाहा ॥"

**विधि :** रविवार या मङ्गलवार को एक छटाँक गुड़ खरीद लाए। उसी दिन अर्द्ध-रात्रि के समय, गाँव के बाहर, पीपल के नीचे, दक्षिण दिशा की ओर मुख कर आसन पर बैठे। पीपल के पत्ते पर गुड़ को रख दे। इसके बाद कुश लेकर उक्त मन्त्र पढ़ते हुए, कुश से गुड़ को स्पर्श करता जाए। १०८ बार मन्त्र पढ़ कर उस 'गुड़' को घर ले आए। ध्यान रहे, मन्त्र पढ़ते समय श्री कामाक्षा का ध्यान करता रहे। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। फिर जब किसी को सम्मोहित करना हो, चमेली के तेल को ७ बार अभिमन्त्रित कर किसी युक्ति से इच्छित व्यक्ति के सिर में डाल दे, तो वह व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) साधक पर मोहित हो जाएगा। इस मन्त्र का प्रयोग स्त्री - पुरुष दोनों कर सकते हैं।

## ७. मोहन मन्त्र फकीरी

(१) "नबी का है यह फरमान, खुदा का रूप है इन्सान। इसकी ताकत है ईमान, जिससे चलता है जहान ॥ जहान में खुदा का टोना है, आस्मान में आफताब की शान। चाँद नूर बरसाता है, चलाता है

जादू का बान ॥ चल - चल बिहिश्त की हूर, फैला दे नूर, मोह ले जमीन - आसमान । तुझे अली इमाम की आन । तुझे कुरआन की कसम, पाक परवर - दिगार की कसम । रख ले ईमान, झूठी न हो फकीर की जुबान—फुः फुः फुः ॥"

**विधि :** ईद की रात में किसी कब्रिस्तान में, किसी कब्र के पास, पच्छिम तरफ रुख कर आसन पर बैठे । लोहबान की धूनी देते हुए उक्त मन्त्र को १०८ बार पढ़े । इसके बाद जब कभी किसी को मोहित करना हो, तो पानी को ७ बार अभिमन्त्रित कर इच्छित व्यक्ति को पिलाए या किसी फूल को ७ बार मन्त्र पढ़कर उसके हाथ में दे या ७ बार धूल को अभिमन्त्रित कर उसके बदन पर उड़ाए, तो वह व्यक्ति जप-कर्ता पर मोहित हो जाएगा । स्त्री - पुरुष—दोनों इस मन्त्र का प्रयोग कर सकते हैं ।

(२) "नबी को मोहे खुदा की शान, चल पड़ी नबी की जुबान । मोहे इन्सान, मोहे मुसलमान, मोहित हुआ सारा जहान । चल - चल जादू का बान, मान ले फकीर का फरमान । तुझे कुरआन की आन, मोह ले जमीन - आसमान, मोह ले ( अमुक ) की जान । फकीर का कहा न मानै, तो दोजख की आग में जले ···फू···फू···फू···॥"

**विधि :** उक्त मन्त्र भी ऊपर लिखी विधि से सिद्ध किया जाता है । दोनों एक ही मन्त्र हैं । दो फकीरों की सिद्धि से सिद्ध हुए हैं । इसलिए इन दोनों की आयत में थोड़ा अन्तर है । इस मन्त्र का प्रयोग भी उसी प्रकार किया जाता है ।

# सिद्ध शाबर मन्त्र-कल्पतरु

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० ओङ्कारप्रसाद शुक्ल
जैतहरी, जि० शहडोल (म० प्र०)-४८४३३०

(१) ॐ गुरू जी काल-भैरव ! काली लट हाथ, फरसी साथ, नगरी करहुँ प्रवेश। नगरी की करो बकरी। राजा को करो बिलाई। जो कोई मेरा जोग भङ्ग करै, बाबा कृष्णनाथ की दुहाई।

विधि—किसी ग्राम या नगर में किसी विशिष्ट काम से जाएँ, तो उस नगर या गाँव में प्रवेश करते ही ७ बार उक्त मन्त्र को पढ़कर फूँक मार कर प्रवेश करें। सभी काम अवश्य पूर्ण होंगे। प्रयोग करने से पूर्व मन्त्र को होली, दीवाली, मङ्गल या अमावास्या को १००८ बार जप कर, हवन कर, सिद्ध कर लेना आवश्यक है।

(२) आत्म-बल, स्व-शरीर-रक्षा का अनुभूत मन्त्र : ॐ गुरू जी गनेपाइयाँ, रिद्धि-सिद्धि आइयाँ। रिद्धि-सिद्धि भरै भण्डार, कमी कछू की नाहीं। पीर-पैगम्बर औलिया-सबको राह बताई। हाथा तो हनुमन्त बसै, भैरो बसे कपाल। दो नैनन बिच, नाहर सिंह, मोह लीन संसार। बिन्द्रा लाव, सिन्दूर का सोहै माँग लिलार। बज्र लँगोटा, जङ्गल बासा, भूत - प्रेत नहीं आवैं पासा। चार जोगी चौबीस पीर, रक्षा करै बावल्दा बीर। हाथन के हथेली बाँधो, नैनन के बाँधो जोत। बाँध-बूँध कर करौ उ गुलाम, बैरी दुश्मन करै प्रणाम। राजा-प्रजा लागै पाँव, तहाँ बजै गनेश जी की तालियाँ।

विधि—उक्त मन्त्र से लक्ष्मण-रेखा की भाँति अचूक रक्षा होती है। सिद्ध पर्व-काल में १००८ बार मन्त्र जप कर हवन करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

**(३) स्थान बाँधने का मन्त्र : उतरे पाँव परन्ते जी, सुमिरन सुग्रीव लाभा होय। चौगुना सान्से परे न जीव, धरती करो बिछौना। तम्बू तनू आकाश, सूर्य - चन्द्रमा दीपक-सुख, सोमै हरी के दास। पाँच पुतरी के रखवार, भाग-भाग रे दुष्ट ! हनुमन्त बिराजे आय। जहाँ बजी हनुमन्त की ताली, तहाँ नहीं दुष्टन पैठारी।**

विधि—उक्त अनुभूत शाबर - मन्त्र को मङ्गलवार को हनुमान जी की मूर्ति के सामने १००८ बार जप कर दशांश गुग्गुल से हवन कर सिद्ध कर ले। तदनन्तर इस मन्त्र से किसी भी स्थान में, अपने चतुर्दिक् रेखा १२ अंगुल आम की कलम से खींचकर बैठने से, सोने से किसी भी प्रकार का कोई भय नहीं रहता। जङ्गल या वन - पर्वत में निर्भय शयन कर सकते हैं।

**(४) दिशा, स्थान बाँधने का मन्त्र : काला गुरू, धर धतूर तै। जान बास - बसेरू, अमली खेरू। वन देउता आकासे लाग, दशो दिशा दशो देउता। मोरे गुरू, तोर गुरू। मैं जानो शपथ साँची। कहु राख धरू मार, बन्धान पर ओर - छोर। मोर देउता, गौरा पार्वती, महादेव की दोहाई। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरै मन्त्र, ईश्वरो बाँचा।**

विधि—शिव-मन्दिर में बैठकर नित्य उक्त मन्त्र की १ माला जप करें। ३० दिन में मन्त्र की पूर्ण सिद्धि होती है। किसी भी साधना के पूर्व मन्त्र को पढ़ते हुए पीली सरसों फेंककर दशों दिशाओं को बाँध देना चाहिए। इस प्रकार दिग्-बन्धन का यह सिद्ध शाबर-मन्त्र है।

(५) आकस्मिक आसन्न सङ्कट से रक्षा करनेवाला मन्त्र : आवत देखो, उध-मुध बैठत, पथरा सुहान। हाथ बाँधौ, मुंह बाँधो, आठो दन्त बन्द कराऔ। अहो नारसिंह नाथ! इस बन से उस बन चली जाई, काल दाग को दीन्हो छिपाई। जै बजरङ्ग बली की दोहाई।

विधि—उक्त मन्त्र को एकान्त में हनुमान जी की मूर्ति के सामने या मन्दिर में मङ्गलवार को रात्रि में १००८ बार जप कर, गुग्गुल व गुड़ से हवन कर सिद्ध करना चाहिए। तदनन्तर किसी भी स्थान में, गली में या स्थल में आपत्ति या सङ्कट आने पर मन्त्र का स्मरण करते ही तुरन्त रक्षा होती है। भयानक सर्प के सामने मन्त्र पढ़कर धूल उठाकर फेंक देने से या उसकी दिशा में फूंक मारने से वह तुरन्त दूर हट जाता है।

६— ऐसी तोही न बूझिए, हनुमान हठीले!
साहिब कहू राम सों, तोसो न बसीले।
तोही देखत, सिंह के शिशु मेढक लीले।
जानति हो कलि तेरो, मन गन-गुन कोले।
हाँक सुनत दस - कन्ध के, भय-बन्धन ढीले।
सो बल गयो, कीधो गयो, अब गर्व गहीले।
सेवक को पर्दा फटे, तू समरथ सीले।
अधिक आफतैं आपने, सुनि मान सहीले।
साँसत तुलसीदास की, सुनि सुजस तुहीले।
तिहू काल तिनको भलो, जो राम रँगीले।

विधि—पूर्ण ब्रह्मचर्य-युक्त होकर, लाल वस्त्र धारण कर हनुमान जी के परम तेजस्वी चामत्कारिक उक्त अनुभूत छन्दात्मक मन्त्र का २१,००० जप करें, तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र से सभी प्रकार की आपत्ति, भूत-प्रेतादि की भय-बाधा तुरन्त दूर हो जाती है।

# गुप्त शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० रामशरण शर्मा
२०६ मकतूलपुरी, पो० रुड़की (खास), जि० हरिद्वार (उ. प्र.)

## १. मन्त्र द्वारा हनुमान जी को चौकी

हनुमान जी सहाय, जाग-जाग हनुमान हठीले ! माता अञ्जनी का जाया, ओखी वेले सिमरिया, दौड़ता आया—लङ्का-सी कोट, समुद्र - सी खाई, जहाँ फिरी हनुमान की दुहाई। रक्षा करें श्री राम-लक्ष्मण भाई। लोहे सङ्कल—सार का, मार हनुमान जी ! किलक मार, लौंग-सुपारी-जायफल—तीनों पूजा लेओ। एक राजा राम की आय, दिखाली देहो।

**विधि**—चन्द्रमा ६-८-१२ न हो, शुक्र - गुरु अस्त न हों। शुभ समय देखकर या किसी पण्डित से पूछकर या अपने गुरु की अनुमति लेकर अनुष्ठान प्रारम्भ करे। प्रारम्भ करने से पूर्व 'चण्डी - कवच' या 'जगन्मङ्गल कवच' का पूर्ण अनुष्ठान या 'रक्षा-कवच-मन्त्र' सिद्ध कर ले।

**सामग्री**—एक माला फूलों की, देशी घी, लाल चन्दन, गुग्गुल, केसर, सिन्दूर, गुड़, लड्डू।

मङ्गलवार के दिन शुद्ध होकर लाल कच्छा या तहमद पहनकर लाल टोपी व बनियान भी लाल पहने। बनियान न हो, तो कोई बात नहीं, परन्तु टोपी सिर पर अवश्य रखे। लाल कम्बल या कुशा का आसन बिछा कर उस पर लाल कपड़े का आसन बिछाए। पहले हनुमान जी की मूर्ति या फोटो को स्नान कराकर सिन्दूर का तिलक कर एक माला प्रातः - काल और एक माला सायं - काल अर्पित कर जप करे। धूप या अगरबत्ती से वातावरण को सुगन्धित रखें। माला जपते समय हृदय में हनुमान जी का ध्यान करते रहें। मन्त्र - जप से पूर्व व

पश्चात् हनुमान जी से प्रार्थना करें कि मेरी शक्ति के अनुसार ही दर्शन दें।

**सायं-काल जप से पूर्व :** केसर, लाल चन्दन, गुगल, देशी घी मिलाकर सामग्री बना लें और अङ्गारी बनाकर उक्त सामग्री द्वारा उस पर धूप उठाएँ। जब तक जप समाप्त हो, धूप बन्द न हो। जप के अन्त में घी, गुड़ और सिन्दूर मिलाकर पहले हनुमान जी को तिलक करें। फिर वही तिलक अपने माथे पर करें। रात्रि में वहीं शयन करें। उस कमरे में किसी अन्य का प्रवेश न हो।

मङ्गलवार का व्रत रखें। लड्डू का बचा हुआ भोग बच्चों को वितरण करें। ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है। अन्य दिनों में नमक, मिर्च कम खाएँ। शेष दिनों में रामायण के 'सुन्दर - काण्ड' का पाठ नित्य करें। अन्य पूजा-पाठ बन्द रखें। हनुमान जी के दर्शन स्वप्न या जप के समय होने पर निर्भीक होकर लड्डू का प्रसाद उनके आगे रखें और इच्छित वर प्राप्त करें।

सम्भव है, पूर्व-जन्मों के पाप अधिक होने के कारण दर्शन न प्राप्त हो, किन्तु उक्त विधि का पालन करने से मन्त्र सिद्ध हो जाएगा।

**सिद्ध मन्त्र का प्रयोग :** किसी प्रकार का ज्वर आने पर उक्त सिद्ध मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित जल पिलाएँ, फूंक द्वारा झाड़ें। भूत-प्रेत इत्यादि का शमन करने में प्रयोग करें। सर्विस - नौकरी के लिए प्रार्थना-पत्र को अभिमन्त्रित करें और साक्षात्कार ( इण्टरव्यू ) में मन-ही-मन पढ़कर सामने बैठे हुए अधिकारियों को फूंक द्वारा वशीकरण करें। मुसीबतों में घिरने पर या यात्रा इत्यादि में सङ्कट-निवारण के लिए प्रयोग करें। मुकदमें आदि में भी विजय के लिए प्रयोग करें। अन्य भी बहुत से लाभ-प्रद प्रयोग हैं। जो सिद्धि के पश्चात् स्वयं अनुभव होंगे। जीवन में बहु-मुखी प्रतिभा प्राप्त करने के लिए दोनों पाठ करते रहें और चमत्कार देखें।

रक्षा के लिए धागा भी बनाकर दे सकते हैं। सब कार्यों में धूप का प्रयोग करें। कार्य सिद्ध होने पर लड्डू व फलों का प्रसाद मङ्गलवार को वितरण कराएँ।

होली, दिवाली, दशहरे में रात को ११ बजे के पश्चात् जप प्रारम्भ करें। 'ग्रहण' में 'स्पर्श' से 'मोक्ष' तक जप करें।

## २. शरीर-रक्षा-मन्त्र

तेल मा तेल, राजा - रानी हाथा पेल। तक्षीर हनुमन्त वीर ! बन्ध किस जगह लगाऊँ ? 'नाड़ प लगाओ।' तक्षीर हनुमन्त वीर ! बन्ध किस जगह लगाऊँ ? 'छाती प लगाओ।' तक्षीर हनुमन्त वीर ! बन्ध किस जगह लगाऊँ ? 'तगड़ी प लगाओ।' तक्षीर हनुमन्त वीर ! बन्ध किस जगह लगाऊँ ? 'पैर के जोड़े प लगाओ।' तक्षीर हनुमन्त वीर ! बन्ध किस जगह लगाऊँ ? 'पैर के गट्टे प लगाओ।' तक्षीर हनुमन्त वीर ! बन्ध किस जगह लगाऊँ ? 'पैर के अँगूठे प लगाओ।' लोहे का लङ्गर, लाल लँगोट, देखूँ बाबा हनुमान ! तेरे शब्द की चोट। सरो वाचा, पिण्ड काचा। देखूँ बाबा हनुमान ! तेरे शब्द का तमाशा।

(३) बिच्छू - दर्द से आराम : काला बिच्छू, धोला बिच्छू। बिच्छू खड़खड़ाया, कोरा घड़ा इमरत भरा ला। गोरजा आगे धरा। गोरजा मल-मल नावन लगी। बिच्छू की पैर पाताल में जावन लगी। फुर मन्त्र, फुर वाचा। चलो मेरे गुरू का शब्द साचा।

(४) धार बाँधना : धार में धार, धार बाँधूँ सात बार। आड़ी बाँधूँ तीन बार। पक्के न, फूटे न, कत्तर न छुटे। फुर मन्त्र, फुर वाचा। चलो मेरे गुरू का शब्द साचा।

कट जाने पर यदि खून बन्द न हो, मिट्टी या राख से, जिस चीज से कटा है, उसकी धार को मन्त्र द्वारा बाँधने पर खून तुरन्त बन्द हो जाएगा। डाक्टर भी देखकर हैरान रह जाएगा।

(५) बन्ध लगाना, भूत - प्रेत उतारना : दर बाँधूँ, दरियाई बाँधूँ। नो लख बाँधूँ तारे, तीस कोस की गर्दन

बाँधूँ। भूत-प्रेत बाँधूँ सारे। मेरे बाँधे न बँधे, शिव भोले की लटा टूटे। चलता बाँधूँ नीर, चार कदम रस्ती के बाँधूँ। मोहम्मदा वीर झड़-झड़ पड़े, टोप के काल। भैरव के सिर पे लगा गोदड़ा, हनुमान का पड़े सातवें पाताल जाके। सरो वाचा, पिण्ड काचा, मेरे गुरू का शब्द साचा। देखूँ बाबा हनुमान ! तेरे शब्द का तमाशा।

(६) छावा-मन्त्र : गौड़ बङ्गाल से चल के कँरू देश में आई। दुहाई तेरे काले कुत्ते की। अपने सब्जी गुरू को मान के काली-काली, माँ काली, इन्द्र की बेटी, ब्रह्मा की साली, जा बैठी पीपल की डाली। खाली कण्ठ बजावे ताली। छल को, छपट को, छावा को, छलोनी को, नाली को, ननाली को, गली को, डाल आरी को, मैदान को, चुगान को, सबको मार के हनुमन्त करो 'गुरू की शगत, भारी भगत। आटा नार सिंह, दुहाई हनुमान वीर की। सरो वाचा, पिण्ड काचा, मेरे गुरू का शब्द साचा। देखूँ बाबा हनुमान ! तेरे शब्द का तमाशा। मेरे झाड़े से न झड़े, तो नूना दे, चमारी की कुण्डी में गले।

विशेष : माई ( माता निकलना ) में भूल से छोंक लगाने पर 'छाव' पड़ जाय, माता बिगड़ जाएँ, बदन में आग-सी लगने लगे, तो कष्ट दूर करने में उक्त मन्त्र का प्रयोग करें।

(७) बाय-चीस, सिर-दर्द, फोड़े - फुन्सी,नजर, टोक निवारक मन्त्र : कँरु-पाण्डू कहाँ गए ? बन में गए, बन में क्या करेंगे ? बन कटाएँगे। बन कटा के क्या करेंगे ? सहंसर मण कोयले करेंगे। सहंसर मण कोयले का क्या करेंगे ? ५६ छुरी बनाएँगे। ५६ छुरी का क्या करेंगे ?

**बाय को, चीस को, भड़क को, फुन्सी को, फोड़े को, टोक को, नजर को, सिर-दर्द को, काट-पीट के खारे समन्दर में बहाएँगे। खारे समन्दर में बहा के क्या करेंगे ? बहोड़ के उल्टे न आवे। सरो वाचा, पिण्ड काचा, मेरे गुरू का शब्द साचा। देखूँ बाबा हनुमान ! तेरे शब्द का तमाशा।**

**विशेष :** मन्त्र में जितने कार्य बताए हैं, वे सभी मन्त्र के प्रभाव से पूर्ण होते हैं। होली, दिवाली, ग्रहण में उक्त मन्त्रों को नदी के किनारे बैठकर, लँगरी देकर, शक्ति-शाली बनाए रखें। मन्त्रों का चमत्कार देखें और यश प्राप्त करें।

सभी छः मन्त्रों को सिद्ध करने की विधि यह है कि गुरु-शुक्र अस्त न हों, चन्द्रमा ६, ८, १२ में हों - ऐसे शुभ समय में नदी - किनारे, नहर-किनारे या राजवाहे के किनारे अर्थात् जहां बहता हुआ जल हो, वहाँ जाकर पहले एक सराही मिट्टी की लें। उस सराही में एक मुट्ठी चावल रखकर थोड़ा बूरा उसके ऊपर रखें। देशी घी डाल दें। फिर आटे से बने हुए दीपक (चिराग) में चौमुखी बत्ती लगा कर, जला कर सराही के ऊपर ( चावल, घी, बूरा पर ) रखें। आसन बिछा कर अभीष्ट मन्त्र को सात या ग्यारह बार या अधिक-से-अधिक इक्कीस बार पढ़कर जलते हुए दिए समेत नदी या नहर में दोनों हाथों से उठा कर कहें—"हे दरिया-बादशाह ! ये अपनी लँगरी लो। मेरे मन्त्र व कार्य को सिद्ध करो।" यह कह कर लँगरी को दरिया में छोड़ दें।

**विशेष :** प्रत्येक मन्त्र के लिए लँगरी अलग-अलग देनी पड़ेगी। प्रारम्भ में मन्त्र सिद्ध करने के समय होली, दिवाली, ग्रहण में एक ही लँगरी देकर छहों मन्त्र सिद्ध या जागृत कर लें। चलते समय पीछे मुड़ कर न देखें।

कोई शङ्का हो या सिद्ध करने में कोई कठिनाई ज्ञात हो या लिखी हुई कोई बात समझ में न आए, तो पत्र द्वारा सम्पर्क कर सकते हैं।

सावधान ! पहले अपने घर को बाँध लें। धागा या ताबीज अपने घर के प्रत्येक सदस्य को पहना कर रखें क्योंकि कभी-कभी उग्र प्रेतात्मा साथ आकर घर या प्राणी को उपद्रव व सङ्कट-ग्रस्त कर देती हैं। मैं स्वयं इस सङ्कट को झेल चुका हूँ। अतः सावधानी बरतें। ● ●

# नाथ-पन्थीय साधना-क्रम :

**प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री अनिल गोविन्द ओकील**
१८/१३-गोंधलेनगर, हडपसर, पुणे-४११०२८ (महा-राष्ट्र)

( १ )

## नव-नाथ-पन्थ

'नाथ-पन्थ' का अर्थ है—'न + अथ = नाथ' अर्थात् जिसका 'अथ' या आदि या आरम्भ नहीं है और 'अनादि' होने के कारण जिसका अन्त भी नहीं है अर्थात् जो 'अनन्त' है—वह है 'नाथ - पन्थ'। इसके प्रवर्त्तक हैं स्वयं आदि-नाथ शिव। 'शिव' का एक तत्त्व है, जिसे नाथ-पन्थ में प्रमुखता से अपनाया गया है। साथ ही 'आत्म-तत्त्व', 'विद्या-तत्त्व' और 'शक्ति-तत्त्व' की भी प्रधानता है। ये सभी तत्त्व आपस में इतने मिले-घुले हैं कि इन्हें एक दूसरे से अलग करना या उन पर नाथ-पन्थीय दृष्टि-कोण से अलग से विचार करना प्रायः असम्भव है। इन सभी तत्त्वों को अपना कर 'पूर्णत्व-प्राप्ति' ही नाथ-पन्थ का मुख्य लक्षण है। इसी से इसका महा-वाक्य है—'अलक्ष - निरञ्जन'। परमात्मा के 'निरञ्जन' (माया-रहित) स्वरूप को लक्ष्य बनाकर उसी से एकता की अनुभूति करना ही इस पन्थ की प्रमुख साधना है।

'निरञ्जन' स्वरूप का ध्यान कठिन है। इसलिए साधक को किसी 'प्रतीक' का सहारा देकर गुरु उससे साधना करवाते हैं। गुरु वास्तव में अज्ञान-रूपी अन्धकार को नष्ट करनेवाला ईश्वर का प्रत्यक्ष प्रतीक है। इस प्रकार गुरु, परमात्मा और स्वयं साधक—इन तीनों में एकता की अनुभूति शिष्य को होती है। इसके लिए 'दीक्षा' लेनी होती है।

'दीक्षा' के कई प्रकार हैं, परन्तु सबका वर्गीकरण दो प्रकारों में हो सकता है—(१) व्यावहारिक कर्म करते-करते सिद्धि - प्राप्ति के बाद स्वरूप जानने की और (२) स्वरूपानुसन्धान तक तुरन्त पहुँचने

की । पहले प्रकार के कुछ उप-प्रकार हैं -- ब्राह्मण-गद्दी, क्षत्रिय - गद्दी आदि । ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि शब्द व्यक्ति के 'भाव' के सूचक हैं, जाति के नहीं । दूसरे प्रकार में स्पर्श-दीक्षा, सङ्कल्प-दीक्षा, दृष्टि-पात द्वारा दीक्षा आदि हैं ।

## 'दीक्षा' का पहला प्रकार

'दीक्षा' के लिए उदुम्बर (गूलर) का पेड़ या दत्त - मन्दिर, शिव-मन्दिर आदि को चुनते हैं । शुभ मुहूर्त में शिव-लिङ्ग के सामने नदी में स्नान कर गुरु-शिष्य बैठते हैं । आवश्यक क्रिया सम्पन्न कर गुरु मन्त्र-जल तथा भस्म से शिष्य का मार्जन करते हैं । फिर शिव-पूजन कराते हैं । गुरु कहते हैं : "हे वत्स ! तुम्हें जो भी सिद्धियाँ चाहिए, उनके लिए भगवान् शिव से प्रार्थना करो ।" शिष्य वैसा करता है । फिर गुरु-शिष्य दीक्षा-कार्य में लग जाते हैं । अन्त में गुरु शिष्य के कान में गुरु-मन्त्र सुनाकर जोर से फूंक मारते हैं । कान फूंकते ही कभी घण्टा-नाद, शङ्ख-नाद या ॐकार-ध्वनि हो उठती है । कुछ समय बाद इस स्थिति से शिष्य को मन्त्रों द्वारा जागृत करके गुरु फिर से सामान्य स्थिति में लाते हैं और इष्ट - देव की साधना विधि - वत् बताते हैं । मन्त्र-जप के अभ्यास से साधक को वाचा-सिद्धि प्राप्त होती है और ऐसी सिद्ध वाणी द्वारा इष्ट-साधना फलने लगती है ।

बाद में कुछ नाथ - पन्थीय सङ्केत शिष्य को बताए जाते हैं ।

(देखिए, क्रमाङ्क ३, पृष्ठ २९)

## 'दीक्षा' का दूसरा प्रकार

गुरु - गृह में जाकर शिष्य दीक्षा देने की प्रार्थना करता है । तब गुरु केवल उसकी आँखों में टकटकी लगाकर देखते हैं । उनकी आँखों से दिव्य प्रकाश-किरण निकल कर शिष्य की आँखों में प्रवेश करती है । शिष्य के माथे या भ्रू-मध्य में गुरु-देव आशीर्वादात्मक स्पर्श करते हैं । अथवा गुरु केवल सङ्कल्प करते हैं कि शिष्य दीक्षित हो जाए । अथवा वे शिष्य का आलिङ्गन करते हैं ।

गुरु कोई भी क्रिया करें, क्षण-मात्र में शिष्य को कुण्डलिनी-जागरण की अनुभूति होने लगती है । शिष्य आसन पर दृढ़ता से बैठा रहता हैऔर उसे ज्योति-दर्शन, इष्ट-दर्शन होते हैं । साथ ही अनेक

प्रकार की मन्त्र-ध्वनि, मुरली की ध्वनि, शङ्ख-ध्वनि आदि सुनाई देती है। तरह - तरह के आसन, प्राणायाम, स्तुति आदि क्रियाएँ साधक अपने आप करने लगता है।

अन्त में गुरु-मन्त्र दिया जाता है और विधि - वत् साधना बताई जाती है।

इसी प्रकार 'दीक्षा' का एक अन्य उप - प्रकार है—मन्त्र द्वारा 'शक्ति-पात।' 'दीक्षा' के इन सब भेदों के सम्बन्ध में 'दीक्षा - प्रकाश' (मूल्य २० रु०) जैसी पुस्तकों से पाठक विस्तार से जान सकते हैं।

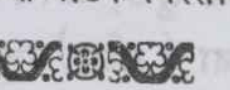

( २ )

# नित्य की साधनाएँ

'ब्राह्म-मुहूर्त' में उठकर साधना करे। लघु-शङ्का के समय निम्न मन्त्र १ बार पढ़े—

**सोने की इन्द्री, रूपे की धार, धरित्री माते को नमस्कार। नाथ जी, गुरु जी को आदेश।**

दीर्घ-शङ्का के समय निम्न मन्त्र १ बार पढ़े—

**उत्तम धरित्री, मध्यम काया, ऊपर आकाश मण्डप।**
**छाया उठो देवी-देवता, हम झाडा जङ्गल को आया॥**

फिर स्नान के समय 'जल-गायत्री-मन्त्र' पढ़े—

**जल-गायत्री-मन्त्र : ॐ श्री सत् नमो आदेश, गुरु जी को आदेश, ॐ गुरु जी, जल - मञ्जन जल - देवता, गुरु-मञ्जन गुरु - ज्ञान, हात - मञ्जन धरित्री, अलख-पुरी से ध्यान, पाणी-पाणी महा-पाणी, सुरती काया अमर को जाने उडेन हंसा बिरखे काया, शिव-शक्ती से ध्यान लगाया, ॐ आदेहे अलिल पितायती नितो जोगी, धरे ध्यान बाला बजर**

जोगी, शरीर ये अलील प्रचोदयात् । जल - गायत्री - जप सम्पूर्ण हुआ । नाथ जी गुरु जी को आदेश-आदेश-आदेश ।

स्नान होने तक उक्त मन्त्र का जप करता रहे । स्नान के बाद निम्न मन्त्र से 'भस्म' लगाए—

सत् का नाथी, धरम का पूत, काल - कण्ठ मार कर भया अवधूत । अम्बर बरसे, धरित्री पुरे । पान - फूल गौ-माता चरे । सूरज मुख सुखे, अगन-मुख जले । तू जसमन्ती, तू ससमन्ती, तू राजा - प्रजा महन्ती । भगवती जाप पूर्ण हुआ । नाथ जी गुरु जी को आदेश ।।

इसके बाद 'श्रीगुरु-मन्त्र' का 'जप' करे । 'श्रीगुरु - मन्त्र - जप' के बाद 'गुरु द्वारा बताई साधना' करे ।

सायं-काल 'श्रीगोरक्ष-गायत्री' का 'जप' करे । यथा—

ॐ श्री सत् नमो आदेश, गुरु जी को आदेश, ॐ गुरु जी, ॐकार शिव-रूपी संख्याने, साद-रूपी मध्याने, हंस-रूपी हंस, परम-हंस, दो अक्षर गुरू शिव - गोरक्ष, काया गायत्री ।

ॐ ब्रह्मा, सोऽहम् शक्ति, शून्य-माता, अभिगत पिता, अभेद पन्थ, निरञ्जन गोत्र, विहङ्गम जाती, अनन्त शाखा, सूक्ष्म-भेदी आत्म-ज्ञानी, ब्रह्म-ज्ञानी, ॐ ह्रीम्, गो गोरक्ष-नाथाय, विघ्नाय, शून्य - पुत्राय धीमहि, तन्नो गोरक्ष-निरञ्जन प्रचोदयात् । तन्तु का बीज, कमल का फूल, सब गायत्रियों का यही मूल । इतनी गोरक्ष - गायत्री, गङ्गा-गोदावरी, त्र्यम्बकेश्वर क्षेत्र, कैलास-गिरी पर्वत, अनुपान शिला गादी बैठकर गुरू गोरक्षनाथ जी ने नव - नाथ ८४ सिद्धों को सुनाया । नाथ जी गुरु जी को आदेश-आदेश-आदेश ।।

उक्त गोरक्ष-गायत्री मन्त्र का 'जप' यथा-शक्ति करे। जब साधक को डर लगे, तब 'श्रीशिव - गोरक्ष' का उच्चारण करे। इससे साधक का भय दूर हो जायगा।

जिसे गाने से रक्षण हो, वही 'गायत्री' है। नाथ-पन्थ में कहा है—

"ॐ तो ब्रह्मा, सोम तो शक्ति, काया तो गायत्री ॥"

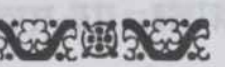

( ३ )

# कुछ नाथ-पन्थी संकेत

(१) नाथ-पन्थ में 'आदेश' शब्द का बार-बार प्रयोग किया जाता है। 'आदेश' का अर्थ है 'नमस्कार।' नाथ - पन्थी व्यक्ति कहीं जाए और उसे अपने ही पन्थ का कोई साधु या व्यक्ति मिले, तो 'आदेश' किया जाता है। १२ ज्योतिर्लिङ्ग तो विश्व-विख्यात हैं ही। प्रत्येक 'ज्योतिर्लिङ्ग' के निकट 'नाथ-पन्थी अखाड़ा' या सङ्घ होता है। यदि नाथ-पन्थी व्यक्ति को कुछ कठिनाई होती है, तो वह सीधे इस अखाड़े में जाकर सहायता पा सकता है। अखाड़े के महन्त (पीठाध्यक्ष) उसे 'सङ्केत' द्वारा पहचानते हैं। ये 'सङ्केत' गुप्त हैं। शाबर-मन्त्र-संग्रह के पाठक-बन्धु सज्जन हैं। जो सङ्केत यहाँ बतलाए या कहे हैं, उन्हें वे केवल जिज्ञासा-पूर्ति हेतु जान लें। अदीक्षित व्यक्ति इनका उपयोग भूलकर भी नहीं करेंगे, इस विश्वास से यहाँ कुछ सङ्केत बताए जा रहे हैं। महन्त को खड़े शब्दों में 'आदेश' करते ही, वे 'आदेश-उपदेश' अर्थात् साङ्केतिक प्रश्न निम्न प्रकार करते हैं—

"आओ साधु ! बैठो साथ—एक वचन सेने का भाव। कहाँ से आयो बाबा ? कौन तुम्हारा ध्यान ? कौन तुम्हारी मुद्रा ?"

इस पर व्यक्ति निम्न प्रकार उत्तर देता है—

"निर-शून्य से आयो बाबा, शून्य हमारा धाम।
अलख हमारी मुद्रा, निरञ्जन हमारा ध्यान ॥"

बस, महन्त जी समझ जाएँगे कि यह 'अपना ही है।' फिर अखाड़े के सब व्यक्ति उसकी सहायता करते हैं। उक्त प्रश्नोत्तर "सत् नाथ ब्रह्मा की जोगी, ब्राह्मण-गादी" के हैं। एक अन्य प्रकार के प्रश्नोत्तर निम्न प्रकार हैं। 'आदेश' पर महन्त पूछते हैं -

**"किसने दिया दण्ड-कमण्डल, किसने दिया जल-धारी ?**
**किसने दिया भगवा वाणा, गुरु-मुख काया हो ब्रह्मचारी ?"**

इस पर 'उत्तर' होना चाहिए—

**"शिव जी ने दिया दण्ड - कमण्डल, ब्रह्मा ने दिया जल-धारी, विष्णू ने दिया भगवा बाणा, गुरु-मुख काया हो ब्रह्मचारी।"**

ऐसे साङ्केतिक प्रश्नोत्तर से पहचान हो जाती है। इसके बाद कुछ अन्य सङ्केत होते हैं और एक दूसरे पर विश्वास हो जाता है।

नाथ-पन्थी 'शिव' को महत्त्व देते हैं और 'भस्म' लगाते हैं क्योंकि भगवान् शिव श्मशान में घूमते हैं, चिता-भस्म लगाते हैं। वास्तव में यह सब प्रतीकात्मक है। हर व्यक्ति में काम-क्रोधादि षट् - रिपु होते हैं। उन्हें तृतीय नेत्र ('ज्ञान-चक्षु') से भस्म करके उस 'चिता - भस्म' को हम लगा रहे हैं—हम स्वयं विश्व-स्वरूप हैं, यही 'भस्म - सङ्केत' है। षट् - रिपु का मारण होने पर ही मङ्गल होता है। यही 'शिव-तत्त्व' अर्थात् 'शिव' का अर्थ है।

सारांश यह है कि अपना पूरा जीवन, हर साँस मन्त्र-मय बना ले और स्वरूप की प्राप्ति कर ले। यही नाथ - पन्थी साधनाओं का मूल है।

## ( ४ )

# 'राम'-नाम का नाथ-पन्थी रहस्य

नव-नाथों ने भी 'राम-नाम' की ही साधना द्वारा सिद्धि प्राप्त की थी। 'रा' का अर्थ है 'ब्रह्म' और 'म' = 'माया'। 'राम' का उच्चारण

करते ही 'ब्रह्म' और 'माया' का अलग - अलग बोध होना चाहिए। प्रारम्भ में इसके लिए कष्ट सहने होंगे, परन्तु बाद में सुख-पूर्वक नाम-स्मरण चलेगा, यह सत्य है। उक्त प्रकार 'राम' का अर्थ समझ कर यदि राम-नाम – जप किया जाय, तो अत्यन्त लाभ-प्रद होगा।

'शाबर - मन्त्र - संग्रह' भाग ७, में 'गहिनीनाथ' द्वारा परम्परा से प्राप्त दो 'शाबर-मन्त्र' दिए गए हैं, उनमें मन्त्र क्रम २ में आए 'रा' अक्षर का यही महत्त्व है।

( ५ )

# श्रीनवनाथ-कृपा-प्राप्ति-प्रयोग

मन्त्र : "सत् नमो आदेश ! ॐ गुरु जी, सत्य का आसन, सत्य का सुत, सत्य का बाणा, रक्षा करे श्रीशम्भु जती। गुरु गोरखनाथ जी, अवधूत सोहं, कण्टी सोहं, माला सोहं, सुरती ध्यान लगाए। श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश-आदेश !

सत् नमो आदेश, गुरु जी को आदेश ! ॐ गुरु जी, ॐकार आदि-नाथ, ॐकार-स्वरूप बोलिए। उदयनाथ पार-ब्रती धरित्री-स्वरूप बोलिए। सत्यनाथ जी ब्रह्म जी जल-स्वरूप बोलिए। सन्तोषनाथ विष्णु खडङ्ग खण्डा तेज-स्वरूप बोलिए। आचम्ब आचम्बली आकाश - स्वरूप बोलिए। गजबेली गजं कथडनाथ जी गणेश हस्ती - स्वरूप बोलिए। ज्ञान-पारखी सिद्ध चौरङ्गी-नाथ जी अठराभार व्रनस्पती-स्वरूप बोलिए। माया-रूपी दादा मच्छिन्द्रनाथ जी माया-स्वरूप बोलिए। थडे पिण्डे, नव-निरन्तरे, रक्षा करे श्रीशम्भु जती। गुरू गोरक्षनाथ जी बाल - स्वरूप बोले।

**इतना नवनाथ-नाम-जाप सम्पूर्ण भया। नाथ जी गुरू जी को आदेश-आदेश ॥''**

**विधि**—नाथ - पन्थ में मालु कवि द्वारा लिखा एक अत्यन्त प्रासादिक ग्रन्थ है—'श्रीनवनाथ-भक्ति-सार।' पारायण के रूप में इस ग्रन्थ को निम्न विधि से पढ़ने से नव-नाथों की अवश्य कृपा होती है।

किसी भी शुभ - मुहूर्त (या गुरुवार) में ब्राह्म - मुहूर्त में पारायण प्रारम्भ करे। पहले भगवान् दत्तात्रेय और नव-नाथों के चित्र या मूर्ति की अष्ट-गन्ध, चन्दन, इत्र, सुगन्धित पुष्प, बिल्व - पत्र, धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प-माला, अगर-बत्ती आदि से पूजा करे। भगवान् दत्तात्रेय और नव-नाथ की आरती करे। पूजन में 'हल्दी' ( हरिद्रा ) और 'कुंकुम' का प्रयोग भूलकर भी न करे। सङ्कल्प करके उक्त मन्त्र को ७, ९, ११ या १०८ बार पढ़कर पारायण प्रारम्भ करे। कुल ४० अध्याय हैं। पारायण ७, ९ या ४० दिनों में पूर्ण करे। पारायण-काल में घर में अशौच आदि न हो। ४० दिन का पारायण ( नित्य १ अध्याय ) अच्छा होता है। उक्त मन्त्र का जप जितना अधिक हो, उतना ही अच्छा फल होगा।

पारायण-काल में ही कई अनुभव होने लगते हैं। सङ्केत मिल सकते हैं। स्वप्न में दर्शन तक हो सकते हैं। साधक की योग्यता के अनुसार अनुभव होते हैं। भय-प्रद अनुभव भी होंगे—डरें नहीं।

अन्तिम दिन का पाठ पूर्ण होने पर नारियल फोड़े और पारायण का फल नवनाथ को समर्पित करे। भोजन में दही, उड़द के बड़े अवश्य हों। १० ब्राह्मणों ( १ भगवान् दत्तात्रेय और ९ नवनाथ ) को भोजन कराए।

जब भी नवनाथ प्रत्यक्ष होंगे, उनका तेज अत्यन्त तीव्र होगा। उनसे वर-प्रसाद माँग ले।

उक्त मन्त्र गुरु द्वारा प्राप्त हो, तो अत्युत्तम। यदि वैसे ही पारायण करेंगे, तो भी कुछ-न-कुछ अनुभव अवश्य होंगे। लगातार ३ या ९ पारायण करके देखें – क्या-क्या चमत्कार होते हैं।

( ६ )

# नव-नाथ-पन्थी शक्ति-साधना

'नव - नाथ - पन्थ' का श्रीगणेश ही शक्ति-उपासना से होता है। व्यक्ति में निहित शक्ति यदि जागृत हो जाय, तो कुछ भी उसे अप्राप्य नहीं रहता। महा-शक्ति की जागृति के सम्बन्ध में लिख चुके हैं। अब 'गायत्री - शक्ति' की कृपा कैसे प्राप्त की जाय, इसे बताते हैं। 'गायत्री-देवी' यदि जागृत हो जायं, तो त्रिलोक-गमन की शक्ति मिल जाती है। इसके लिए 'साबर-मन्त्र' और 'गायत्री - मन्त्र' की एकता 'सोऽहं भाव' से समझ कर साधना करनी होती है। यह प्रक्रिया समझने में तो सरल है, परन्तु करने में अत्यन्त कठिन है। अब प्रत्यक्ष विधान देखें—

**साबर-मन्त्र : "ॐ द्रि ग्रा मृत्य स्था भुरु फट् युरु फट् ह्री कृ टी टौ फुट् फट्चुं।"**

उक्त 'साबर'-मन्त्र 'त्रिलोक-भ्रमण' करने की शक्ति देता है।

**गायत्री-मन्त्र : "श्री हि शरीरमरमक्रार्यु वृष्टी तुर्याकुर्म ह्री क्ली वृथी फचंम।"**

उक्त दोनों मन्त्र २३ अंक्षर के हैं। इनकी एकता 'सोऽहं' से कैसे करें ? 'सोऽहं'-मन्त्र स्वयं अजपा - जप है। 'सोऽहं' पर जितना भी लिखा जाय, कम है। इसकी बाह्य प्रक्रिया यों है—

'सो'—बाहर से प्रचण्ड शक्ति श्वास के साथ अन्दर लेना।

'हं'—अन्दर से कु-भावना, चिन्ता आदि का उछ्वास के साथ त्याग करना।

जब भी साधक का मनोलय होता है, तब ब्रह्म-रन्ध्र में होनेवाली ध्वनि के साथ चित्-शक्ति 'कुण्डलिनी' एक हो जाती है। 'सोऽहं' की गति के साथ उक्त दोनों मन्त्रों के अक्षरों की गति की एकता निम्न प्रकार करे—

सर्व-प्रथम उक्त मन्त्र को कण्ठस्थ करें। भाद्रपद शुक्ला नवमी को इसकी सिद्धि के लिए साधन प्रारम्भ करें। ब्राह्म मुहूर्त में स्नान कर शरीर पर 'पञ्च-जन्य भस्म' लगाएँ। नीम के वृक्ष के नीचे साग-वृक्ष के ६ पत्ते रखकर निम्न मन्त्र का १२ बार उच्चारण करें—

**मन्त्र : कुकर्क-कर्मस्नू भागवतिम् जलैस्वः ॥**

अब उक्त पत्तों पर 'गोरखी पाद-पर्णवी' आसन में बैठ कर मन्त्र-जप प्रारम्भ करें। नित्य १५१ बार मन्त्र - जप १५१ दिन तक करें। कुल ३२,८०१ जप होगा। इससे मन्त्र की सिद्धि होगी। फिर मङ्गल-वार या गुरुवार को एकान्त स्थान में मध्य - रात्रि में इस मन्त्र का अनुष्ठान करें। अनुष्ठान होते ही अपने सामने पहले एक श्वेत - बिन्दु (लगभग १० मिलीमीटर का गोल) दिखाई देगा। थोड़े ही समय में दूसरा रक्त-वर्णी बिन्दु दिखाई देगा। तदनन्तर तपकीर (सुँघनी) के रङ्ग का।

उक्त तीन बिन्दु सत्त्व-रज-तम तीन गुणों के निर्देशक हैं। इनके देवता हैं—(१) श्वेत बिन्दु : विष्णु। मध्य-कार। अनाहत ध्वनि।

(२) रक्त-बिन्दु : शिव। आद्य गुरु। प्रार्त्वल ध्वनि।

(३) तपकीर के रङ्ग का बिन्दु : ब्रह्मा। अहस्वाती आमुप ध्वनि।

कुछ ही समय बाद उक्त तीनों बिन्दु एक हो जाएँगे और 'श्रीसुद-र्शन' के समान वह बिन्दु घूमने लगेगा। यदि यह बिन्दु अपनी दाईं ओर हो, तो उसी पर 'त्राटक' करें। यदि अपनी बाँईं ओर हो, तो दो-तीन मिनट के लिए आँखें बन्द कर लें। बाद में आँखें खोलकर देखेंगे, तो सामने कुछ आकृति दिखाई देगी, जो सर्वथा अलग - सी प्रतीत होगी। ऐसा लगेगा कि यह अमानवी है और यह सत्य भी है।

उक्त आकृति 'आदि-माया त्रिपुर-सुन्दरी' की है, जो प्रत्यक्ष होकर साधक को देखती है। साधक की मनोकामना जान लेगी। साधक कच्चे मन का है या सचमुच पक्का है, यह आदि-माया जान लेगी और कुछ ही समय बाद—"दिगम्बरा दिगम्बरा, श्रीपाद - वल्लभ - दिग-म्बरा"—यह अत्यन्त मधुर अनाहत ध्वनि सुनाई देगी। यह ध्वनि ब्रह्मा - विष्णु और शिव के सेवक करते हैं। इसके बाद—साधक को अत्यन्त भयावह नाद—जो ब्रह्मा-विष्णु-शिव के भैरव करते हैं—

सुनाई देगा। उससे डरना नहीं चाहिए। कुछ देर बाद दूर से एक ज्योति अपनी ओर धीरे-धीरे आती प्रतीत होगी। अपने से ३-४ फीट दूरी पर यह ज्योति जब आएगी, तब भगवान् दत्तात्रेय प्रत्यक्ष होंगे या साधक की योग्यता के अनुसार किसी भी रूप में आएँगे। जटा-धारी साधु, योगी या भगवे कपड़े पहने विवेकानन्द जी जैसे योगी आदि किसी भी रूप में भगवान् दत्तात्रेय आ जाएँ, तो डरें नहीं। शिरसा साष्टाङ्ग नमस्कार करते हुए इच्छित वर माँग लें।

उक्त प्रकार की सिद्धि श्रीत्रिपुर-सुन्दरी भगवती द्वारा साधक की परीक्षा लेने के बाद ही होती है। अतः यह श्रीदत्तात्रेय - साधना भी श्रीशक्ति-साधना के अन्तर्गत ही है। इसलिए यह 'शक्ति - साधना' ही है। किसी 'शक्ति पीठ' (देवी-मन्दिर) में यदि नीम का पेड़ हो, तो वहीं यह साधना करनी चाहिए।

**'गोरक्ष पाद-पर्णवी आसन'** : अपना दाहिना पाँव घुटने से मोड़कर पीछे उलटा रखें। फिर बाँयाँ पाँव घुटने से मोड़कर दाहिने पाँव की जाँघ पर रखें। अपने बाँएँ हाथ को दाहिने हाथ की मुट्ठी से दबाकर रखें। श्वासोच्छ्वास सरलता से ही चलता रहे। यही 'गोरक्ष-पाद-पर्णवी' आसन है।

श्रीगोरक्षनाथ जी ने त्र्यम्बकेश्वर-गङ्गा-द्वार पर उक्त प्रकार का आसन लगाकर साधना की थी और माता भुवनेश्वरी ने प्रसन्न होकर उन्हें 'धूम्रास्त्र' दिया था। वह मन्त्र निम्न प्रकार है—

**"धुर्म कृव्यासनम् ह्रीम्, ज्क्लीटी स्वः त्रार्स अर्रसीर्रा।"**

उक्त मन्त्र से धुआँ-ही-धुआँ होता है। यह मन्त्र मुझे एक नाथ-पन्थीय साधु ने बताया, परन्तु इसका विधान रह गया। **अतः इस 'अस्त्र' की अधूरी जानकारी प्रकाशित करना उचित नहीं।** इस मन्त्र को 'सोऽहं' बीज से युक्त करके जप करना होता है। पूर्ण विधान मुझे ज्ञात नहीं है।

**दशहरा** : आश्विन शुक्ला दशमी के दिन नक्षत्र उदित होने के समय "विजय" नामक मुहूर्त होता है। इस मुहूर्त में की जानेवाली साधना सफल होती है। अतः इस पुण्य काल में अर्थात् नवरात्रि में उपासना करनी चाहिए।

दे। पानी का गड़वा रखे। सर्व-प्रथम वृक्ष को जल दे। फिर पूजनोपरान्त एक माला जप करे। सींडू वीर प्रत्यक्ष होकर दर्शन देते हैं और कामना पूर्ण करते हैं।

## (५) नव-नाथ का मन्त्र

ॐ आदेश, गुरू जी को आदेश। ओङ्कार - रूपी आदि-नाथ आकाश-स्वरूपी। सन्तोषनाथ विष्णु खण्डा खड्ग-स्वरूपी। गज-वेली कन्थड़ीनाथ गणेश जी हस्ति-स्वरूपी। अचला अचम्भेनाथ शेषनाग अचल - स्वरूपी। सिद्ध चौरङ्गीनाथ पूर्ण भगत चन्द्रमा - स्वरूपी। माया-रूपी मच्छेन्द्रनाथ। घटे-बढ़े पिण्ड गुरू गोरखनाथ। इतना नौ नाथ मन्त्र-जाप सम्पूर्ण भया। गुरू जी, नाथ जी ! आदेश, आदेश।

**विधि**—उक्त मन्त्र का प्रति-दिन एक माला जप करे। कम-से-कम दस हजार जप करने पर मन्त्र जागृत हो जाएगा। फिर किसी पीड़ित व्यक्ति को विभूति, धागा, लौंग, इलायची अभिमन्त्रित करके देने से तान्त्रिक बाधा की शान्ति होती है।

## (६) रक्षा-कारक मन्त्र

नागौरी से सुलतान, मुहम्मद से जोद्धा, बड़े खुदाय काम। चारों चक्र हनुमान जोद्धे ने मारे। मस्तक में सिन्दूर लगाऊँ। सवा सेर का रोट चढ़ाऊँ। मैं करूँ हिन्दी का पाठ। घेर - घार कर लगा लगाया, भेजा - भेजाया सब गुर्ज के बस में कर। पहली हक्का कौन चले ? गनिहर भैरों। दूजी हक्का कौन चले ? ख्वाजा पीर। तीजी हक्का कौन चले ? काली माई। चौथी हक्का हनुमान वीर चले। लगा-लगाया, भेजा - भेजाया, हिन्दु- मुसलमान, जात - कुजात के मन्त्र को बन्द कर। न करे, तो माता अञ्जनी का पिया दूध हराम करे। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। चले मन्त्र, फुरे वाचा।

**विधि**—ग्रहण-काल अथवा होली - दीवाली के समय इस मन्त्र को आरम्भ करके एक हजार जप करे। इसके बाद इस मन्त्र से विभूति आदि बनाकर देने से आभिचारिक बाधा की शान्ति होती है।

## (७) बाबा नानक जी का मन्त्र

अगम - अगोचर तू परमेश्वर। तू मेरा राखा सवनीं थाईं। भाई बुड्ढे नूँ पीढ़ी बख्शी। भाई वावे नूँ पीढ़ा। गुरु अङ्गद नूँ गुरयाई

(२) बाह्य उपासना का विधान यह है कि उपासना का स्थल चुने—शक्ति-पीठ, शिव - मन्दिर, घर का पूजा - स्थान या नदी - तट आदि। बाह्य उपासना ४५ दिनों की है। किसी भी अमावास्या को प्रारम्भ करे और दूसरी पूर्णिमा तक करता रहे।

ब्राह्म मुहूर्त में स्नान कर, श्वेत वस्त्र पहने। पूजा - साहित्य लेकर उपासना - स्थल में जाए। माँ चामुण्डा के चित्र या मूर्ति के सामने नमस्कार - मुद्रा में ( हाथ जोड़ कर ) आसनस्थ हो जाए। फिर निम्न प्रकार उच्चारण करे—

**"नमस्कारायं गुरु-शरणम्। अन्तर-जले स्वाहा॥"**

अब मूर्ति या चित्र की पूजा श्री गुरु द्वारा प्रदत्त क्रमानुसार करे। उसके बाद मूर्ति या चित्र पर २ मिनट तक त्राटक कर उच्चारण करे–

**"चामुण्डा नाम-स्मरणीनाम।"**

इसके बाद उक्त "श्रीचामुण्डा सोऽहं मन्त्र" का जप प्रारम्भ करे। कम-से-कम नित्य १ माला जप करे। पहले दिन ठीक ४ बजे ब्राह्म-मुहूर्त में जप प्रारम्भ करे। दूसरे दिन ५ बजे, तीसरे दिन ६ बजे—इस प्रकार उपासना का समय नित्य एक घण्टा आगे बढ़ाता जाए। ऐसी उपासना दूसरी पूर्णिमा तक करे।

४५ वें दिन दूसरी पूर्णिमा होगी। इस विधि के पूर्ण होने के बाद 'श्रीगुरु-पूर्णिमा' के दिन गुरु-आज्ञा लेकर पूरी रात इसी मन्त्र का जप करे। माँ चामुण्डा की कृपा अवश्य होगी। किस प्रकार होगी, यह व्यक्तिगत अनुभूति की बात है। लिखना सम्भव नहीं।

**काम्य प्रयोग**—(१) वृश्चिक-दंश का निवारण उक्त मन्त्र से होगा। (२) मन्त्र-जप करके भीषण स्थान पर भी आराम से सो सकेंगे। (३) शत्रु-कृत निन्दा या अपमान का निवारण मन्त्र-जप से ही होगा। (४) पीलिया रोग हो, तो इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित 'आक' (मदार) के ४ पत्ते नए गुड़ में या ताम्बूल में देने से लाभ होगा। (५) किसी यात्रा में अकेले हों, तो यात्रा में निकलने से पूर्व स्नान कर गीले कपड़ों से ही १ माला मन्त्र-जप करे। यात्रा में सहायक साथी मिलेगा और यात्रा सानन्द सम्पन्न होगी। (६) अभिचार-प्रयोगों का निवारण इस

मन्त्र से होगा। (७) इष्ट का सगुण दर्शन या स्वप्न-दर्शन तथा सम्वाद हो सकता है। (८) अन्य अनेक अच्छे अनुभव होंगे।

**विशेष**—(१) मन्त्र-जप करते समय मन्त्र, देवता व स्वयं को एक-रूप जाने। (२) उपासना-काल में स्थान एक ही हो। (३) कुछ भी हो, ४५ दिन की उपासना पूर्ण करे। (४) अपने अनुभव केवल गुरु से ही बताए। दूसरों को भूल कर भी न बताए। (५) मन्त्र - जप त्राटक-पूर्वक करे। मूर्ति या चित्र के भ्रू-मध्य या आँख पर त्राटक करे व जप करे।

( १० )

# अनुभूत साधना-क्रम

प्रत्येक साधक अपने इष्ट - देवता की अनुभूति चाहता है। ऐसे साधकों के लिए एक 'नाथ-पन्थी अनुभूत साधना-क्रम' यहाँ प्रस्तुत है। यह क्रम महा-राष्ट्र के एक नाथ-पन्थी योगिराज ने बताया था। उनके अनुसार इससे 'साक्षात्कार' तक हो जाता है—लगन चाहिए।

(१) नित्य विशिष्ट समय पर पवित्र होकर बिस्तर पर शवासन में लेट जाए। एक या डेढ़ मिनट तक केवल अपने श्वासोच्छ्वास पर ध्यान रखे। फिर अपने बाँएँ हाथ की कनिष्ठिका धीरे-धीरे बन्द करे। पूरा ध्यान कनिष्ठिका पर ही रहे। फिर इसी प्रकार क्रमशः अनामिका - मध्यमा - तर्जनी और अँगूठे को बन्द करे। यह क्रिया जितने आराम से हो, अच्छा है। बाँएँ हाथ की मुट्ठी बँध जाने पर उसी प्रकार दाहिने हाथ की कनिष्ठिका से प्रारम्भ कर दाईं मुट्ठी बाँधे।

तदनन्तर दाहिने हाथ का अँगूठा धीरे-धीरे खोले। फिर तर्जनी-मध्यमा-अनामिका और कनिष्ठिका को क्रमशः इसी प्रकार खोले। तब बाँएँ हाथ की मुट्ठी भी इसी प्रकार खोले।

यह एक 'आवर्तन' हुआ। इस प्रकार नित्य कम - से - कम तीन 'आवर्तन' करे। 'आवर्तन' करते समय जप आदि न करे। १५ या २१ दिनों तक यह क्रम करे। इससे मन अत्यन्त एकाग्र और निर्विचार होता है और अगले क्रम के लिए वह समर्थ बन जाता है।

(२) अब 'नाथ-पन्थी न्यास' करे। 'न्यास' का अर्थ है—स्थापना करना। जो पिण्ड में है, वही ब्रह्माण्ड में है। अतः इष्ट - देवता अपने से दूर या बाहर नहीं हैं। स्वयं में ही विराजमान हैं। उसे 'जागृत' करना ही 'नाथ-पन्थी न्यास' है।

## नाथ-पन्थी न्यास (१)

नित्य ब्राह्म मुहूर्त में सुखासन में बैठे या सोते समय रात्रि में शवासन में लेट जाए। जैसी भी सुविधा हो। यदि बैठकर साधना करनी हो, तो दीवार से पीठ लगाकर सीधे बैठे। अब १ मिनट तक श्वासोच्छ्वास पर ध्यान रखे। फिर निम्न क्रम से न्यास करे—

हमारे शरीर में २७ शक्ति - केन्द्र हैं। इन्हें जागृत करने के लिए इनके क्रम को ध्यान में रखे। यथा—

(१) बाँएँ पैर की रीढ़ की हड्डी, (२) दाहिने पैर की रीढ़ की हड्डी, (३) बाँएँ पैर की पिण्डली, (४) दाहिने पैर की पिण्डली, (५) बाँएँ पैर की जाँघ (माण्डी), (६) दाहिने पैर की जाँघ (माण्डी), (७) गुह्य स्थान के ऊपर का भाग, (८) नाभि, (९) हृदय, (१०) बाँयाँ फुप्फुस (फेफड़ा), (११) दाहिना फुप्फुस (फेफड़ा), (१२-१४) बाँएँ हाथ के तीन भाग, (१५-१७) दाहिने हाथ के तीन भाग, (१८) बाँयाँ कन्धा, ( १९ ) दाहिना कन्धा, ( २० ) बाँईं आँख, ( २१ ) दाहिनी आँख, (२२) बाँयाँ कान, (२३) दाहिना कान, (२४) मुँह, (२५) नासिका, (२६) भ्रू-मध्य, (२७) तालु।

अब अपने इष्ट-देवता का मन्त्र-जप करे। (गुरु से मन्त्र मिला हो, तो अति उत्तम)। प्रत्येक शक्ति-केन्द्र पर ४ बार जप करे। इस प्रकार २७ × ४ = १०८ जप होगा। जप करते समय यह भावना रखे कि मेरी इष्ट-देवता मुझमें ही स्थित है और वह इस मन्त्र-जप द्वारा शीघ्र ही जागृत हो रही है। यह एक 'आवर्तन' हुआ।

उक्त प्रकार नित्य कम-से-कम तीन आवर्तन अवश्य करे। यह पहला 'न्यास' चार मास तक करे। फिर दूसरा न्यास प्रारम्भ करे। यथा—

## न्यास-साधना (२)

इसकी पद्धति पहले 'न्यास' - जैसी ही है। केवल २७ केन्द्रों के स्थान पर यह न्यास अपने 'सप्त-चक्रों' पर करना है। प्रत्येक चक्र पर १६ बार मन्त्र-जप करे। जप के समय यह भावना रखे कि प्रत्येक चक्र शुद्ध हो रहा है और देवता जागृत हो रही है। नित्य ३ 'आवर्तन' करे। सप्त-चक्र प्रसिद्ध हैं। यह साधना भी चार मास तक करे। तब तीसरा न्यास प्रारम्भ करे। यथा—

## न्यास-साधना (३)

इष्ट-देवता के शरीर में २७ शक्ति - केन्द्रों पर यह न्यास करे। देवता जागृत हुई है और प्रसन्न है – ऐसी भावना मन्त्र - जप के समय रखे। नित्य ३ 'आवर्तन' हों। यह साधना भी चार मास तक करे। अब प्रत्यक्ष साक्षात्कार-हेतु निम्न साधना करे। यथा—

## साक्षात्कार साधना

इस साधना में केवल सप्त-चक्रों का ही विचार किया जाता है। इसके लिए ब्राह्म-मुहूर्त ही उत्तम है। विश्व में जो प्राण - शक्ति कार्य-रत है, उसे इस साधना द्वारा स्वयं में समाविष्ट कराते हैं। अतः यह साधना गुरु से आशीर्वाद तथा आज्ञा लेकर ही करे क्योंकि एक स्थिति ऐसी आती है कि उसमें 'गुरु-कृपा' ही सहायक होती है।

जैसा अन्य न्यासों में बताया है, उसी प्रकार बैठे। पद्मासन या स्वस्तिकासन अच्छा है। सिद्धासन तो सर्वोत्तम है, परन्तु गृहस्थों के लिए उचित नहीं है। पहले 'गुरु-स्मरण' करे। फिर इष्ट - मन्त्र का जप, 'मूलाधार - चक्र' पर ध्यान केन्द्रित करते हुए १६ बार करे। भावना यह रहे कि इष्ट - देवता द्वारा जो प्रचण्ड प्राण - शक्ति मुझमें समाविष्ट हुई है, वह मूलाधार को लपेट रही है और वहाँ के छोटे-छोटे दोष भी नष्ट हो रहे हैं। फिर 'स्वाधिष्ठान - चक्र' पर ध्यान केन्द्रित करे। ऐसा करते समय यह भावना करे कि 'मूलाधार' से प्राण-शक्ति 'स्वाधिष्ठान' में आकर उसको लपेट रही है और 'मूलाधार' मृत-प्राय हो रहा है तथा 'स्वाधिष्ठान' के सभी दोष नष्ट हो रहे हैं। १६ बार मन्त्र-जप करे।

उक्त प्रकार क्रमशः 'मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध' और 'आज्ञा-चक्र' तक जाए। 'आज्ञा-चक्र' से 'सहस्रार' तक भी जाए, परन्तु 'सहस्रार' में जप करते समय कोई भी भावना न रखे।

फिर प्राण-शक्ति को 'सहस्रार' से 'आज्ञा-चक्र' पर ले आए और इसी प्रकार 'विलोम'-क्रम से 'मूलाधार' तक चले। यह एक 'आवर्तन' हुआ। इस प्रकार नित्य कम-से-कम ७ आवर्तन करे।

यह साधना ७ मास तक करना अनिवार्य है। इष्ट का साक्षात्कार अवश्य हो जाएगा।

( ११ )

# साधना-क्रम का विश्लेषण

'नाथ-पन्थी साधना-क्रम' के विषय में निम्न बातों को ध्यान से पढ़ कर मनन करना आवश्यक है—

**क्रिया (१) :** अपना मन एक साथ कितने ही विषयों पर विचार करता है। साधक को इन 'अनेक' में से 'एक' में स्थिर होना है। जिसमें स्थिर होना है, वह ध्येय उच्चतम हो, तो 'साधना' परिपक्व होती है। यही इस क्रिया का उद्देश्य है। अपना पूरा ध्यान उँगलियों की ओर होने से मन 'एक - प्रवाही' होने लगता है, शान्त होने लगता है। एकाध क्षण के लिए मन पूर्ण निर्विचार भी होता है। 'मनः - शान्ति' और 'शवासन' से मन तथा शरीर दोनों स्वस्थ होने लगते हैं। यही स्थिति अगले क्रम के लिए वाञ्छनीय है।

**क्रिया (२) :** यह 'नाथ - पन्थी न्यास' का पहला प्रकार है। शरीरान्तर्गत २७ शक्ति-केन्द्रों को स्थिर कर उन्हें उत्तेजित करना इस न्यास का लक्ष्य है। २७ केन्द्रों का क्रम ध्यान में रखकर मन्त्र-जप करने से 'एक - प्रवाही' मन बलवान होने लगता है। २७ केन्द्रों पर ध्यान करना 'आन्तरिक त्राटक' है। इन केन्द्रों में इष्ट को जागृत करना ही भक्ति है। जप के समय श्वासोच्छ्वास लय-बद्ध होता है। यही 'प्राणायाम' है। मन्त्र-जप की यह अन्य-तम साधना है। यह साधना करते-करते कभी गहरी नींद आ जाती है। आधे घण्टे की नींद ५-६ घण्टों के

बराबर की विश्रान्ति देती है। जिन्हें 'निद्रा-नाश' या 'नींद न आने' की व्यथा हो, उनके लिए यह साधना वरदान - स्वरूप है। ऐसे बन्धु 'नींद' की गोली के पीछे न पड़कर इस साधना को अवश्य अपनाएँ। साधना के कुछ ही दिनों बाद साधक को दिन भर हल्का-हल्का - सा लगेगा, चेहरा प्रसन्न होने लगेगा, भूख भी ज्यादा लगेगी। ऐसे में कुछ सात्त्विक आहार करना चाहिए।

**क्रिया (३)** : यह 'न्यास' का दूसरा प्रकार है। शरीर के अन्तर्गत स्थूल २७ शक्ति-केन्द्रों के बाद अब प्रमुख सात शक्ति - केन्द्रों पर 'आन्तर - त्राटक' कर इनमें 'इष्ट' की जागृति करनी होती है। 'सप्त-चक्र' ही प्रमुख शक्ति-केन्द्र हैं। इस न्यास से ज्योति-दर्शन, इष्ट-दर्शन आदि स्वप्न या ध्यान में होने लगते हैं। भूख भी बढ़ेगी। कितना भी खाया, किन्तु तृप्ति नहीं हुई, ऐसा अनुभव हो, तो खजूर का पानी ३-४ दिन पीते रहने से इसका शमन होगा। कभी-कभी देह-भाव क्षण-मात्र को लुप्त होगा—इस स्थिति का वर्णन शब्दातीत है। देह-भाव का लुप्त होना ही 'देव-भाव' का आरम्भ है।

**क्रिया (४)** : इष्ट - देवता के २७ केन्द्रों पर न्यास करने से साधक इष्ट-देवता से तादात्म्य स्थापित कर लेता है। प्राचीन ऋषि-मुनियों के आशीर्वाद या शाप सत्य होने का रहस्य यही है कि ऐसी वाणी के उच्चारण - समय वे अपने इष्ट से प्रत्यक्ष एक - रूपता पा लेते थे।

**क्रिया (५)** : सप्त-चक्रों में मन्त्र - जप के द्वारा प्राण - शक्ति प्रवाहित करने की क्षमता मिलती है। इस साधना से सङ्कल्प-मात्र से सब कुछ करना सम्भव हो जाता है क्योंकि साधक स्वयं ईश्वर-स्वरूप बन जाता है। साधनावस्था में सप्त-चक्रों एवं सुषुम्ना के दिव्य दर्शन होने लगते हैं। इस क्रिया में मन्त्र-जप के समय 'सहस्रार - चक्र' पर कुछ भी 'भावना' नहीं रखते क्योंकि जिस प्रकार अन्य चक्रों के कुछ गुण-धर्म होते हैं, उसी प्रकार 'सहस्रार' का गुण - धर्म जीव - शिव की एकता ही है। ऐसी एकता में कैसी भावना और कौन रखेगा ? यह बात अनुभूति से ही समझ में आती है। इसके लिए गुरु - कृपा आवश्यक है।

**अनिवार्य बातें :** (१) गुरु-आज्ञा से ही साधना करे। गुरु के बिना यदि करेंगे, तो अनुभव अवश्य होंगे, परन्तु इन अनुभवों से उत्साहित होकर अधिक 'आवर्तन' न करना चाहिए क्योंकि बाह्य-मन और आन्तर - मन की एकता का प्रभाव सहन करना कठिन होगा। अतः चींटी की धीमी चाल ही इस साधना - क्रम में उचित रहेगी।

(२) सिद्धियों में कदापि न फँसना चाहिए।

(३) 'व्यक्तित्व के विकास' को ही अपना मूल उद्देश्य बनाना चाहिए। सिद्धियों द्वारा चमत्कार कर वाह - वाही प्राप्त करना सर्व-नाश की ओर ले जाएगा।

(४) इस साधना - क्रम में ५ क्रियाएँ हैं। पहली स्थूल है। अन्य चार उत्तरोत्तर सूक्ष्म हैं। अतः 'क्रम' को ध्यान में रखे।

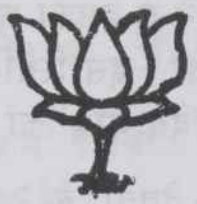

## भूल-सुधार

(शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ७)

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ६८ | १३ | आम्या वेजाळ | आम्या वेताळ |
| ६८ | १४ | नव-नाथ | नवनाथ |
| ७६ | २ | षांड् | धाड |
| ७६ | ४ | खांधावर | खांद्यावर |
| ७८ | ७ | धेऊन | घेऊन |
| ७८ | ९ | वैयाची | वैय्रची/वैरयाची |
| ७८ | ११ | चले मन्त्र | चलो मन्त्र |
| ९८ | १५ | बैतालाय | वैतालाय |
| ९९ | ८ | दैंत | दैत |

( १२ )

# वृश्चिक दंश का अनुभूत मन्त्र

**मन्त्र : "काली कुकडी, पाय पकडी, सौन्दडीच पान ।**
**उतर - उतर विचवा, तेच तुझ रान ॥"**

**विधि**—'सूर्य-ग्रहण' - काल में उक्त मन्त्र सिद्ध कर ले। पहले स्नान करके गीले कपड़े पहने ही पूजा-स्थान में आसनस्थ हो जाए। फिर—**'केशवाय नमः, नारायणाय नमः'** से आचमन करे। तब मन्त्र का १०८ 'जप' करे। इससे उक्त मन्त्र सिद्ध हो जाएगा।

**प्रयोग**—जिसे वृश्चिक-दंश लगा हो, उसे अपने सामने जमीन पर ही बिठा कर पूछे – 'कहाँ तक दर्द पहुँचा है ?' जहाँ तक जहर फैला होता है, वहाँ तक दर्द होता है। उस स्थान से अपना हाथ स्पर्श-पूर्वक जमीन तक फेरे। शरीर को स्पर्श करते हुए तथा मन्त्र पढ़ते हुए यह क्रिया करके उसका पैर या दंशवाला अङ्ग तथा अपना हाथ जमीन पर मारे। इस प्रकार २-३ बार करने के बाद फिर पूछे— 'अब कहाँ तक दर्द है ?' जहाँ तक बताए, वहाँ से फिर से उक्त क्रिया करे।

जब दंश-स्थान तक जहर उतर जाए, तब समझे कि पीड़ित व्यक्ति अच्छा हो गया है। दंश - स्थान पर अल्प मात्रा में ही दर्द रहेगा। उसे दूर करने के लिए मिट्टी का तेल (केरोसीन) लगाकर दंश - स्थान को गरम पानी से सेंके।

उक्त उपाय से केवल ६-७ बार हाथ फेरने से ही व्यक्ति अच्छा हो जाता है, ऐसा मेरा अनुभव है। यह कार्य बिना-मूल्य परोपकारार्थ ही करना चाहिए। पैसे का लालच न करे। उक्त मन्त्र मुझे अपने नाना जी से बचपन में ही मिला था। वे भगवान् राम के भक्त थे। उनके बताए इस मन्त्र को जो करना चाहें, वे किन्हीं सत्पुरुष या साधु का चित्र सामने रखकर पहले उक्त मन्त्र का २१ बार जप करे। प्रत्येक मन्त्र-जप पूरा होते ही "मन्त्रं गृह्णामि" का उच्चारण करके भावना

करे कि 'मैं उन साधु-पुरुष को गुरु बनाकर यह मन्त्र ग्रहण कर रहा हूँ।' बाद में शेष विधान ग्रहण-काल में पूर्ण करे।

यह मन्त्र मराठी भाषा में है। 'ळ' का उच्चारण 'ल' नहीं होता। यथा—"काळी कुकडी"···को "काली कुकडी" ऐसा कदापि न पढ़े। सही उच्चारण किन्हीं मराठी जाननेवाले से सीख ले। प्रत्येक ग्रहण-काल में १०८ जप करते रहें। इससे मन्त्र-शक्ति तेज होगी।

## वृश्चिक-दंश पर अन्य उपाय

(१) मोम-बत्ती पर फिटकरी का टुकड़ा गरम करके दंश - स्थान पर चिपका दे। यह जहर चूस लेगा। वह गिर जाए, तो दूसरा लगा दे। ऐसा बार-बार करे। विष उतर जाएगा।

(२) खाने के पान ( ताम्बूल ) में शिकेकाई का टुकड़ा (चने की दाल बराबर) डालकर पान खा ले। थूके नहीं। जहर उतर जाएगा।

(३) अप्रैल-मई के आस-पास आम के वृक्ष में फूल लगते हैं, जिन्हें 'मोहोर' (बौर) कहते हैं। इन्हें लेकर अपने हाथ पर रगड़े। जितना ज्यादा रस हाथ में लगा सके, लगा ले। हाथ धोए नहीं, वैसा ही सूखने दे। ऐसा २५ दिन करे। इससे हाथ में जहर नष्ट करने का गुण आ जाता है। यह गुण ६-७ मास तक रहेगा। दंश-स्थान को इस हाथ से दबा देने से ५-१० मिनट में जहर नष्ट हो जाएगा।

उक्त ३ उपायों में से पहले दो अनुभूत हैं। तीसरा उपाय एक नाथ-पन्थी साधक ने बतलाया था।

### शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ७ (पृष्ठ ७५) के कठिन शब्द

| शब्द | अर्थ |
|---|---|
| वाच्छा | इच्छा |
| खाँधावर | कन्धों पर |
| कवळासात | परसदार में |
| कपाळी | माथे पर |
| टिळा | तिलक |
| खिळा | कील |
| वैरचाची | दुश्मन की |
| मूठ आली | अभिचार-प्रयोग आया |

# प्रचलित शाबर मन्त्र

**प्रस्तुत-कर्त्ता : 'कुल-वाणी-रत्न' पं० रामशङ्कर उपाध्याय**
पूर्व-पोस्टमास्टर, ग्राम रेका, पो. आथर द्वारा कोरानसराय, जि. बक्सर

## १. विषैले जन्तुओं का विष-निवारण

**(क) एरई हाविल हासी बहु-सर रहीम ॥**

**विधि**—पीतल की थाली की पेन्दी पर उक्त मन्त्र एक पंक्ति में पूरा लिखे। इसी तरह दूसरी और तीसरी पंक्ति में भी लिखे। पुनः "जै गुरुदेव" कहकर यह थाली विष-ग्रस्त व्यक्ति की पीठ पर सटा दे। यदि शरीर में विष रहेगा, तो थाली चिपक जायगी, अन्यथा गिर जायगी। चिपकने पर थाली विष चूसना प्रारम्भ कर देगी और अधिकांश विष चूसकर गिर जायगी। तब पुनः थाली को पूर्व - वत् अभिमन्त्रित कर चिपका दे। यह क्रिया तीन बार करे। विष पूर्णतः समाप्त हो जायगा।

**(ख) पर्वत ऊपर सुरही गाय। ओकरा गोबरे बिच्छी बिआय ॥ बिच्छी चढ़े डाढ़े - डाढ़े, मन्त्र चले पाते-पाते। दुहाई अमा माई की, काली माई की ॥**

**विधि**—मन्त्र पढ़ते हुए 'दूब' (घास) की एक चुटकी फुनगी (मुलायम पत्ती) तलहथी में लेकर उसमें चूना मिलाकर लुगदी बना ले और उसे बिच्छू से दंशित स्थान के नीचे जोड़ पर चिपका दे। विष उतर कर दूब तक आ जायगा। पुनः नई लुगदी बनाकर उसके नीचे के जोड़ पर चिपकाए। ऐसा बार - बार करे। विष समाप्त हो जायगा।

**(ग) पर्वत ऊपर सोरही गाय। ओकरे खुरी बिच्छी बिआय ॥ आठ काठ नौ पोर। बिच्छी उतरे पोरे-पोर ॥ ईश्वर महादेव की दुहाई, बान तोहार ॥**

**विधि**—उक्त मन्त्र पढ़कर डङ्क लगे हुए स्थान पर फूंक मारे।

### २. बाई-पीड़ा (वात-दर्द) निवारण

**'बाई झारो पोरे - पोरे। बाई झारो जङ्घ से। बाई चले—हट।**

**विधि**—रोगी को जमीन पर बैठाकर उसके दोनों हाथ जमीन पर चिपका दे। अब उक्त मन्त्र पढ़ते हुए रोगी के दोनों हाथों के बीच से अपनी उँगली से आगे की ओर रेखा खींचे। रोगी का हाथ भी आगे की ओर सरकता जायगा। मन्त्र पढ़ते हुए रेखा खींचता रहे। 'बाई' (वात-पीड़ा) ठीक हो जायगी।

### ३. लङ्घन-निवारण

**राम लछुमन की ककही, सीता माता झारे केश। यहाँ की विद्या ना, काँवरू कामाक्षा की विद्या। शङ्कर-पार्वती की दुहाई। जै गुरुदेव॥**

**विधि**—बाँस की बाती (हरी टहनी) को बीच से फाड़ कर रोगी खड़ा होकर अपनी कमर पर दोनों ओर एक - एक 'बाती' का छोर दोनों हाथों से दबाए रखे और 'बाती' के दूसरे छोरों को दूसरा आदमी रोगी के सामने खड़ा होकर अपनी कमर के दोनों ओर अपने हाथ से चिपकाए रखे। अब उक्त मन्त्र पढ़े, तो दोनों बातियों के बीच का भाग निकट चलकर सट जायगा और रोग छूट जायगा। ऐसा तीन बार करे।

### ४. चोर (चमक) दर्द-निवारण

**राम चले धनुष साजे, सीता जी झारे केश। लछु-मन चलले चोर धरे, ठाँवे परे विशेष॥ दुहाई गौरी-पार्वती की॥**

**विधि**—जहाँ चोर - दर्द हो, वहाँ चुटकी से पकड़कर उक्त मन्त्र पढ़कर फूँके। तीन बार करने से दर्द दूर हो जायगा।

### ५. कटे-जले घाव की चिकित्सा

**राम लछुमन दोउ भाइ। काटा घाव फूँका जाइ॥ नाहीं घाव, नाहीं पूज। सिद्ध गुरू उस्तादे पाँव॥ काँवरू-काँवरू कामाक्षा-कामाक्षा आज्ञा हाड़ी जीते॥**

विधि—उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित भस्म या धूल कटे-जले स्थान पर डालकर मन्त्र द्वारा फूंके। बहता हुआ रक्त बन्द हो जायगा, दर्द दूर होगा और घाव नहीं पकेगा। शीघ्र ही भरकर ठीक हो जायगा।

### ६. टोना-निवारण

**ॐ नमो आदेश गुरु को। लूना चमारीज गत की बिजुरी, मोती हेल चमके। अमुक के पिण्ड में ज्यान करे, विज्यान करे, तो उस लण्डी के ऊपर पारो। दुहाई तख्त सुलेमान पैगम्बर की फिरे। मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा॥**

विधि—मोर-पङ्ख से उक्त मन्त्र द्वारा सात बार झाड़े।

### ७. शिर-दर्द-निवारण

**बाट झारे बहनी, कपार झारे जोगिनी, भौंह झारे ममिता, करेज झारे ललिता। ओझा की ओझाई बाँधो, डाइन के चक्कर बाँधो। माई-धीया-डाइनी के डाइन बाँधो, बापे-बेटा-ओझा की ओझाई बाँधो, चलत मसान बाँधो। यहाँ की ना सोख, कावरू कामाक्षा की सोख। सत्-गुरु के बन्दे पाव, हे गुरु शरन तुम्हार।**

विधि—उक्त मन्त्र पढ़ते हुए माथे पर फूँक मारे। इस मन्त्र से नजर-गुजर भी झाड़ा जाता है।

### ८. आधा शीशी, ज्वर, चमक, पेट-दर्द-निवारण

**ॐ कारी चिरई चौकही, राव तीरे बासा।**
**या किसी हाँक दे हनुमन्त वीर, आधा शीश बिनासा॥**

विधि—उक्त मन्त्र पढ़कर फूँक मारे। इसका प्रयोग किसी भी साधारण रोग में किया जाता है।

९. दृष्टि-दोष आदि से दुधारू पशु के दूध न देने पर

श्रीगणेशाय नमः। ॐ काली-काली महा-काली, मसान छोड़, माया का पिण्ड। नौ दिया नौ बाती, टोनहिन के टोना मारती, आपन गुन गावती, आदि-वाचा छोड़ परमेश्वरी। इन्द्र की ताड़ी, ताम्बे की टोकरी। रोग-दोष, भूत के जाल। काबरू देश कामाक्षा भगवती की दुहाई॥

विधि—उक्त मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित भभूत या जल पशु के थन पर लगा दे।

१०. आत्म-रक्षा

ॐ चौकी हनुमत वीर की, वाण-ध्वजा फहराय।
मारु-मारु मारुत - सुत, मुष्टिक शत्रु नसाय॥
मेरे इष्ट रामचन्द्र जी, अगुआ हनुमन्ता बीर।
चौक सुदर्शन - चक्र की, रक्षा करे शरीर॥
टोना ब्रह्म - भूत - प्रेत सङ्ग, डाइन डाइ।
साँप बिच्छू चोर बट, सब कुछ निष्फल जाइ॥

विधि—उक्त मन्त्र पढ़कर तीन बार ताली बजाए। जहाँ तक ताली की आवाज जायगी, वहाँ तक चोर-बटमार, भूत - प्रेत नहीं रह पाएँगे और आप सुरक्षित रहेंगे।

आवश्यक निर्देश—उपर्युक्त सभी मन्त्रों को कण्ठस्थ कर पर्व-योग में कुछ हवन कर सिद्ध कर ले।

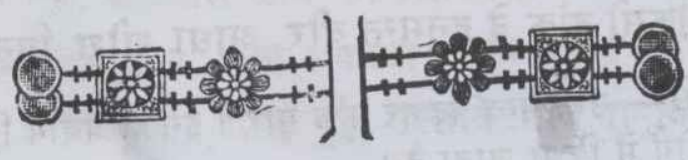

# बंगाली शाबर-मन्त्र-संग्रह

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री सन्तोषकुमार धुटके
महात्मानगर, नासिक (महा-राष्ट्र)

## १. साँप के जहर को बाँधना

**"धवनि-धवनि-धवनि सार-धवनि, धरिते विष नाई। आर हाडे - मासे धवनि फटे। धवनि धरिते विष ना ए उठे॥"**

**विधि**—उक्त मन्त्र को पढ़कर, जहाँ तक साँप का विष चढ़ गया है, वहाँ से कुछ ऊपर जोर से कसकर तागा बाँधना चाहिए। तागा बाँधने का एक मन्त्र और भी है—

**"तागा तागा तागा। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर—तिन देव लागा। ए तागा नडे-चडे। ईश्वरी करतार करे।"**

तागा बाँधने के समय यदि तागे के ऊपर विष हो और नीचे तागा बाँधा हो, तो तागे के बन्धन को निम्न किसी एक मन्त्र को पढ़ते हुए काट दे—

**(१) "तागा तागा तागा। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर—तिन देव लागा। श्मशानेर घाटेर शृगाल का डेरा। आय विष तुई लागा, छिडे भस्म हयेजा॥"**

**(२) "धन्वि बाँधे धान धन्या। धन्वी बाँधे धान फुलका। धन्वि बाँधे गोरक जाति। धन्वि काटे गौरी-पार्वती॥"**

### २. अञ्चल में बाँधने का मन्त्र

**"ओ पारे धोपानि कापड काचे। पद्म पाति विष-भावे धोपानि तूइ गुरु। आमि तोर शिष्य। अञ्चले बाँधिया अमुकार (नाम) अङ्गे बाँधिलाम काल-कूट विष॥"**

**विधि**—सर्प के विष को अञ्चल में भी बाँधने का प्रयोग है। उक्त मन्त्र द्वारा अपने कपड़े के अञ्चल में बन्धन करे। अँगौछे में बन्धन करना हो, तो निम्न मन्त्र पढ़े—

**"आकाशेर तले पडलो गरुड गामछा लइया धरे सकल विष। नाई गामछार वार। विष नाई विष-हारीर आज्ञा॥"**

### ३. जल को अभिमन्त्रित करने का मन्त्र

**"आदर लाउन मशन मशिले। याहा ते विष उपजिले तार कान्देन दुर्गा-कान्देन कान्देन मा विष-हारी आई विष खाई से जाहि आ। शिवाइ जने खाइलो, रसले खाइलो देखया मनसार आज्ञा॥"**

**विधि**—एक नई कोरी हण्डी में जल लेकर उसमें दूब के पाँच नाल डालकर उक्त मन्त्र को पानी पर पढ़े। उसके बाद पढ़े हुए जल को रोगी को दिखाते ही साँप का विष दूर हो जायगा।

### ४. विष को फूँक से उतारना

**विधि**—काली सरसों की जड़ अमावस की रात्रि में तोड़कर रख ले। इस जड़ को अंगुली के बीच में रखकर भूमि पर हाथ लगा कर नीचे लिखा कोई एक मन्त्र बार-बार पढ़कर भूमि पर रखे और हाथों पर फूँक मारे—

**(१) "जे लाला ते लाला पातियाला शिव। दृष्टे उठिल काल - कूट विष। क्षौर नांगल काञ्चन विष। तात उठे काञ्चनेर विष। असमय परीराय स्मरण निलआई। पद्मार आइ पद्मा उडियाय। दुधीपाते हते चालाय। जोर विष तोर पाय॥"**

(२) "चल चल, हात चल। चाओंमयी विषय बल। दोला हात उजान धाइ। आचलीर विष गाडत पाइ। हात चली विषत पर पधार आज्ञा नेतु चवर। गुरूर आज्ञा मोर मन्त्रे गुचिअय। जरत् कारुर बघ लागे गो हानीर पाय॥"

(३) "ॐ सिद्धि, शंखूर अङ्ग, अष्ट बेटा तोर अङ्ग, बेटार नाम काई पूजेर नाम। अङ्गयान चौर नाम। छाइ खरान निर्विष खारण ओरे गोसांई मोर कि इल ढेके मारिते विष, मोमो, मोमो, काँइ, काँइ विषनाई॥"

(४) "रत्क भु कु सु कु मुत्कार हार। चापवे धैयाछि विषनाइ तार। ए देवी आधार काहिनी॥"

**विशेष**—उक्त मन्त्र पढ़कर अपने हाथ पर फूंके। जिस स्थान में विष होगा, वहीं पर हाथ जाएगा।

### ५. थप्पड़ मारने का मन्त्र

"थापडे विष करिलाभ पानि।"

**विधि**—उक्त मन्त्र पढ़कर रोगी को थप्पड़ मारे, तो विष उतर जाता है।

### ६. फूँकने का मन्त्र

"शंखुर पेटार धन मूले तिन फूसे विषकरि लाभ पानि॥"

**विधि**—उक्त मन्त्र पढ़कर फूंक मारे।

### ७. थूक से विष हटाने का मन्त्र

"थु-थु, देवीर काष्ठे खाओ। आरे विष माटी जाओ॥"

**विधि**—उक्त मन्त्र पढ़कर जिस स्थान पर सर्प ने काटा हो, वहाँ पर थूके। इससे विष उतर जाता है।

### ८. विष को झाड़ने का मन्त्र

"करोचि खट वट वैहुति नाड । महादेव बइले गात वड जड । चोट लागिल्क जन्मसरि जन्मान्तर-गते स्मरि हरि हरि । जा रे विष तुइ अन्तरीक्षे हरि । उजल शङ्कर मणि हरे । धाई शब्दे विष मरे । उडिल विष स्फटिक वर्ण नाई विष हरि शरणे ।।"

विधि—उक्त मन्त्र से झाड़ा देने से विष उतर जाता है।

### ९. जल पिलाने या तेल लगाने का मन्त्र

"ओम नाके शङ्कर रचित । जेइ जाने गुरु चरित । साहार करो गोते न थाके हारिश दन्त हारिश, नाक हारिश, गुह्य हारिश, ज्योति सुता मोति मुता, वेह जाने ग्रामेर चतुराच्छेदे । अगत्या ब्रह्म-हत्या पातक भवति । यदि विद्या न सिद्धति । अगत्या ब्रह्म-हत्या पातक भवति ।।"

विधि—उक्त मन्त्र से जल को अभिमन्त्रित कर विष-ग्रस्त व्यक्ति को पिलाए या सरसों का तेल घाव पर लगाए, तो विष उतर जाता है।

### १०. घाव को फूँकने का मन्त्र

"घोर मेघ आंधार गति । कि साँप खेले न जानि जाति । आट नाग खोल चित्त । वार वोढा नेर जाति । एलूई चिति, वेलूई चिति, केथो चिति, कडूई चिति, रोंको चिति, निलो चिति, गेछो चिति, डोलो चिति, चित वेचिति, साप आपापा भीम रुल प्रकृति, विछे माकडशा छत्रिश जाति । जे जाहार जानि जनम स्मौरि पडि । पालटरे विष तोंके चण्डाल जाति । तोके श्रीमहा-गरुड हुङ्कारान्ते ।।"

विधि—उक्त मन्त्र तीन बार पढ़कर घाव के मुख पर फूंके, तो विष उतर जाता है।

### ११. थाली चिपकाने का मन्त्र

"थालापडि थूलपरि धां धिं वलिये। अमुकेर (नाम) अङ्गेर विष पाला उडिये। थालापडि थूलपडि धां धिं स्वाहा। अमुकेर [नाम] अङ्गे विष लागे तलगै थारुगा। कार आज्ञ कंसासुर नृपितर आज्ञे धनपति स्वाहा॥"

विधि—कांसे की साफ धोई हुई थाली लाकर उक्त मन्त्र नौ बार पढ़कर थाली को रोगी की पीठ पर लगा दे। यदि विष होगा, तो थाली पीठ पर चिपक जायगी। यदि विष न होगा, तो थाली गिर जायगी।

### १२. दर्द दूर करना

वात रे वात, जान लोम तोर जाति अमावस्या मङ्गलवारे तो उत्पत्ति। उइया-वात, पूइया-वात, जूइया-वात, पाथुरि-वात, सजष्ठिया - वात, रामे बोलेन हरुत। लक्ष्मणे बोले-न चल चल अमुकेर [नाम] अङ्गे थाकिवार पैल लकां पड सिद्धि गुरु श्रीरामेर आज्ञा, गङ्गा - यमुना त्रिवेणी अमुकार काहिनी अमुकार [ नाम ] खण्ड कत ठना मानि॥

विधि—उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल रोगी को पिलाए, तो सब प्रकार के दर्द दूर होते हैं।

### १३. पेट से आँव, खून निकलना बन्द करना

सागरेर कूले उपजिल शूल, आरे पीओ पीओ पानि। अमुकेर [नाम] सूचिनाम रक्त-शूल छाडानि धर्मेर आज्ञा॥

विधि—उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल पिलाने से आँव और खून आना बन्द होता है।

## १८. रुद्राक्ष का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। मुखे ब्रह्मा, मध्ये विष्णु, लिङ्ग नाम महेश्वरं। सर्व-देव नमस्कारं, रुद्राक्षाय नमो नमः। गगन-मण्डल में धुन्धुकार, पाताल निरञ्जन निराकार। निराकार में चर्ण-पादुका, चर्ण - पादुका में पिण्डी। पिण्डी में वासुक, वासुक में कामुक, कामुक में कूर्म, कूर्म में मरी। मरी में नाग-फणी। अलख पुरुष ने बैल के सींग पर राई ठहराई। धीरज-धर्म की धूनी जमाई। वहाँ पर रुद्राक्ष, सुमेर-पर्वत पर जमाइए। उसमें से फूटे छैः डाली। एक गया पूर्व, एक गया दक्षिण। एक गया पश्चिम, एक गया उत्तर। एक गया आकाश, एक गया पाताल। उसमें लाग्या एक-मुखी रुद्राक्ष, श्रीरुद्र पर चढ़ाइए। श्री ॐ-कार आदि-नाथ जी को, दो-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए चन्द्र-सूर्य को, तीन-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए तीन लोकों को, चतुर्मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए चार वेदों को, पाँच-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए पाँच पाण्डवों को, छै-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए षट्-दर्शन को, सात-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए ( सप्त ऋषि ) सप्त-समुद्रों को, अष्ट-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए अष्ट - कुली नागों को, नव-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए नव नाथों को, दश-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए दश अवतारों को, ग्यारह - मुखी रुद्रा क्ष चढ़ाइए ग्यारह रुद्र को, द्वादश - मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए बारह (सूर्य) पन्थ को, तेरह-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए तेतीस कोटि देवी-देवताओं को, चौदह-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए चौदह भुवन (चौदह रत्न) को, पन्द्रह-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए पन्द्रह तिथियों को, सोलह - मुखी रुद्राक्ष चढ़ा-इए सोलह शृङ्गार को, सतरह - मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए श्री सीता माता को, अठारह - मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए अठारह भार वनस्पति (अठारह पुराण) को, उन्नीस - मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए अलख पुरुष को, बीस-मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए विष्णु भगवान् को, इक्कीस - मुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए इक्कीस ब्रह्माण्ड शिव को, निरमुखी रुद्राक्ष चढ़ाइए निराकार को। इतना रुद्राक्ष-मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी आदेश, आदेश।

## १९. आसन लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश, गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी सत्य की धरती, सत्य का आकाश। सत्य की माला, सत्य की जाप। सत्य का आसन,

सत्य का पूत । आसन बैठे, योगी अवधूत । आसन ब्रह्मा, आसन इन्द्र । आसन बैठे, हरि गोविन्द । आसन बैठ के जपिए जाप, कोटि जन्म के उतरन्ते पाप । आसन बैठे, सिंहासन बैठे । बैठे गिरि की छाया । पाँच तत्त्व ले आसन पर बैठे, सत्-गुरु सत्य का शब्द सुनाया । बिना मन्त्र आसन लगाय, सो योगी नरक को जाय । मन्त्र पढ़ आसन लगाय, सो योगी अमर-पुर जाय । नाथजी गुरुजी आदेश, आदेश ।

## २०. जाप की कार देने का मन्त्र

सत नमो आदेश, गुरुजी आदेश । ॐ गुरुजी सत्य का आसन, सत्य का सूत । सत्य का बाना, रक्षा करे श्री शम्भू यती गुरु गोरक्षनाथ जी अवधूत । सोहं कण्ठी, सोहं माला । सोहं सुरति ध्यान लगाना । श्री नाथजी गुरुजी आदेश, आदेश ।

## २१. कुबेर-भण्डार गायत्री

सत नमो आदेश, गुरुजी को आदेश । ॐ गुरुजी, ॐ सोहं आकाश । डिब्बी पाताल काठी, धरती का चूल्हा करूँ, आकाश को ठाया । नव-नाथ सिद्धों ने बैठकर भण्डार किया । चढ़े डिब्बी, उतरे रिद्धि-सिद्धि काली । पीली शिर जटा माई, पार्वती का उपदेश । शिव-मुख आवे, शक्ति-मुख जावे । शक्ति-मुख आवे, शिव-मुख जावे । हाथ खड़ग तूत की माला, जाप जपे श्री सुरियाबाला । ऋद्धि पुरे हर, धृत पूरे गणेश । अलील पूरे ब्रह्मा, माया पूरे महा-काली, हीरा पूरे हिङ्गलाज । नव-खण्ड में जोत जगाई । ऋद्धि लावो भण्डारी भाई । ऋद्धि खूटे, सदा-शिव का जड़ाव टूटे । ऋद्धि खूटे, माता सीता सतवन्ती का सत्य छूटे । ऋद्धि खूटे, माता पार्वती का कङ्कन टूटे । ऋद्धि खूटे, मान-धान का मान टूटे । चन्द्र-सूर्य दो देव साखी, इतना कूबेर - भण्डार-गायत्री-जाप सम्पूर्ण भया । नाथजी गुरुजी आदेश, आदेश ।

## २२. भैरो चोला-जाप

सत नमो आदेश, गुरू जी को आदेश । ॐ गुरू जी ! तुम भैरों काली का पूत, सदा रहे मतवाला । चढ़े तेल - सिन्दूर, गल फूलों की माला । जिस किसी पर सङ्कट पड़े, जो सुमिरे तुम्हें उसकी रक्षा करे । तुम हो रक्ष-पाल । भरी कटोरी तेल की, धन्य तुम्हारा प्रताप । काल भैरो, अकाल भैरो, लाल भैरों, जल-भैरों, थल-भैरो, बाल - भैरो,

विष करिया आन सिद्धि गुरु श्रीरामेर आज्ञा वाटेर कालिका चण्डिर ।।

विधि--उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल पिलाए, तो सभी प्रकार के पशुओं के विष दूर होंगे ।

### १६. ततैया भौंरे का विष उतारना

चूण-चूण-चूण विषेर पाणी । हाडेर मितर - मासरे कूण्डे । मर विष तुई चुणे पूडे ।

विधि--उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल पिलाए ।

### २०. सुख-प्रसव मन्त्र

छं कौरा-देव्यै नमः । ओं आदेश गुरू को । कौरा वीर का बैठी हात सब दिराह भज्ञाक साथ फिरे बसे नाति विराति । मेरी भक्ती, गुरू की शक्ती, कौंरा देवी की आज्ञा ।।

विधि--उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल प्रसव के समय स्त्री को पिलाए, तो बच्चा शीघ्र पैदा होगा और कोई कष्ट न होगा ।

### २१. बोडा साँप का विष उतारना

श्रीहरि-श्रीहरि, बल ओरे आमार भाई । कामाख्या-मायेर वरे वीर विषनाई । नीछाक विषेर जोर आरनाई । विष-प्रसाद दिवरे तोरे छाखाइ । रिश सर्व - काजे मनशा पूजा विष दुघ कला । महेक-महेक कराडइ । मोर बाला चन्द्र सूर्य शाक्षी भाई । आमार बाकी सार । टम्बर भैरवेर फिरे शीघ्र ऐसे धर । पानकर भैरू ठाकूर निनउ आचिल ध्यां ध्यां ठ्यां ठ्यां निहत हईला आय आय । वर शिव छापार छाना षत । आमार एइ जल सारे विष हई लहत । नाइ विष, नाइ विष, नाइ विष, कार आज्ञे कौरु पीर आज्ञे ।।

विधि—उक्त मन्त्र पढ़कर रोगी को बाँस के ऊपर सुलाए और जल की धार अर्थात् शिर पर पानी बराबर डाले।

## २२. रक्षा-मन्त्र

राम-कुण्डली ब्रह्म - चाक। तेंतिश कोटि देवा - देवी अमुक ( नाम ) कि वेडिया थाक। अमुकेर ( नाम ) अकेर वाण काटम्, शर काटम, सन्धान काटम, कुज्ञान काटम, काटवाणे काटे राजा रामचन्द्रेर वाणे काटे। कार आज्ञा, राजा रामचन्द्रेर आज्ञे। गुरू झण्डो अमुकेर (नाम) अङ्गे शीघ्र लागूगे॥

विधि—उक्त मन्त्र से गण्डा या ताबीज बनाया जाता है। रक्षा-हेतु उसका उपयोग होता है।

## २३. भौतिक आत्म-रक्षा मन्त्र

झाडि काडि कापड - पिन्दि वीर मुष्टे बाँधि बाल। बुले एलाम मशान-भूम होते भैरव काटर हाते लोहार बाडी वाम हाते चामदडि। आज्ञा दिल राजा चुडं हाते लोहार किला मुदगर घिनि, निगलि धुण्डि कार आज्ञें, राजा चुडङ्गर आज्ञें विग्लि धुण्डि॥

## २४. भूत छुड़ाने का मन्त्र

तेल-नीर तेल-पसार चौरासी सहस्त्र डाकिनीर छेल, एते लेरभार मुइ तेल पडियादेम, अमुकार (नाम) अङ्गे अमुकार (नाम) भार आडदन शूले यक्षा-यक्षिणी, दैत्या-दैत्यानी, भूता-भूतिनी, दानवा-दानिवी, नीशा - चौरा शुचि - मुखा गारुड तलनम वार भाषइ, लाडि भोगाइ आमि पिशाचि अमुकार (नाम) अङ्गेथा, काल जटार माथा खा ह्रीं फट् स्वाहा। सिद्धि गुरुर चरण राडिर कालिकार आज्ञा॥

# निवेदन

शाबर मन्त्रों से सर्व-साधारण लोगों का कल्याण अति प्राचीन-काल से होता रहा है। भारत के पर-तन्त्र रहने से जहाँ उसकी अन्य दिशाओं में अवनति हुई, वहाँ उसकी महत्त्व-पूर्ण 'मन्त्र-विद्या' का विकास भी रुक गया।

'शाबर - मन्त्र-विद्या' को कुछ तो अज्ञान - वश, कुछ अपना एकाधिकार बनाए रखने के लिए स्वार्थी व्यक्तियों ने छिपाया। छिपाते-छिपाते यह दशा हुई कि आज यह विद्या ही लुप्त-प्राय हो चुकी है।

मन्त्र - विद् साधकों एवं 'मन्त्र - विद्या' के प्रशंसकों, जिज्ञासुओं के लिए यह गम्भीर विचार का विषय है। उन्हें सोचना - समझना चाहिए कि किस प्रकार से इस 'मन्त्र-विद्या' को अपने पूर्व - गौरव पर प्रतिष्ठित किया जाए। निःसन्देह यह कार्य सिद्ध या सिद्ध प्रतीत होनेवाले मन्त्र-प्रयोगों को गुप्त रखने से नहीं होगा। उलटे ऐसे प्रयोगों को जनता के समक्ष रखना होगा, जिससे श्रद्धालु व्यक्ति उनके सम्बन्ध में प्रयोग करके देख सकें और जान सकें कि 'मन्त्र-विद्या' में कितना बल है।

इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए हमारे द्वारा तान्त्रिक मन्त्रों का अपूर्व 'मन्त्र-कोष' प्रकाशित किया गया और अब 'साबर-मन्त्र-संग्रह' का आठवाँ भाग प्रकाशित हो रहा है। यदि आपके पास शाबर-मन्त्रों का संग्रह हो, तो हमारे पास भेजिएगा। हम उन्हें सहर्ष प्रकाशित करेंगे।

—प्रकाशक

# छत्तीसगढ़ के शाबर मन्त्र

**प्रस्तुत-कर्त्ता : पण्डित कान्तिकुमार दुबे**

नया रिसदा भदरा पारा, पो० बालकोनगर
जि० बिलासपुर (म. प्र.)-४९५६८४

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७ में छत्तीसगढ़ में प्रचलित शाबर मन्त्रों को स्थान दिया गया। इसके लिए सम्पादक को धन्यवाद। छत्तीसगढ़ में 'शाबर मन्त्र' बहुत ही प्रचलित हैं। यहाँ ओझा, बैगा आदि बहुत सरलता से तथा आत्म-विश्वास के साथ 'शाबर मन्त्रों' का प्रयोग कर लोगों को विविध कष्टों से मुक्ति दिलाते हैं। आज का पढ़ा - लिखा समाज यद्यपि इन पर विश्वास कम करता है, तथापि प्रायः बाधा-ग्रस्त व्यक्ति को हजारों रुपए खर्च करने के बाद भी अस्पताल या डाक्टरों द्वारा कोई आराम नहीं मिलता, बीमारी का ही पता नहीं चलता, किन्तु 'अनपढ़' कहे जानेवाले बैगा, गुनिया या ओझा 'शाबर मन्त्रों' के बल पर फूँक कर उसे स्वस्थ कर देते हैं, तब आश्चर्य होता है।

छत्तीसगढ़ के उक्त 'गुनी' लोग 'शाबर' मन्त्रों को कण्ठस्थ रखते हैं, लिखित रूप में कुछ भी नहीं, जिससे 'शाबर' मन्त्र लुप्त होते जा रहे हैं।

जहाँ तक 'शाबर' मन्त्रों की 'गोपनीयता' की बात है, वह 'साधना-पद्धति' की जटिलता के कारण ही है क्योंकि 'शाबर-मन्त्र' की साधना में वैदिक विधि के समान पवित्रता को उतना महत्त्व नहीं प्राप्त है। इसी से विद्वान् पण्डित उन्हें हेय दृष्टि से देखते हैं। फिर भी 'शाबर मन्त्रों' के तात्कालिक प्रभाव को देखकर उन्हें उनकी उपयोगिता माननी ही पड़ती है।

आज के वैज्ञानिक युग में भूत-प्रेत पर विश्वास नहीं किया जाता और 'भूतावेश' को 'मानसिक रोग' कहते हैं। यदि किसी ऐसे रोगी को मानसिक रोग के डाक्टर के पास ले जाएँ, तो महीनों चिकित्सा कराने के बाद भी वह स्वस्थ नहीं हो पाता, किन्तु 'शाबर' मन्त्रों से

जो उसे दो दिन में ही ठीक कर देता है, उस ओझा को कौन नहीं मानेगा ?

'कामाख्या तन्त्र' में 'वीर-साधना' के प्रसङ्ग में लिखा है—

"शुक्र-शोणित-मूत्रेषु, वीरो यदि घृणी भवेत् ।
भैरवी कुपिता तस्य, सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥
वीराचारं महेशानि ! न निन्देत् मनसाऽपि च ।
वीरो यस्तु महा-देवि, स्वेच्छाचारी सदा शुचिः ॥
पञ्च-तत्त्वैः कलौ देवि ! पूजयेद् यः कुलेश्वरीम् ।
तस्यासाध्यं त्रिभुवने, न किञ्चिदपि विद्यते ॥"

छत्तीसगढ़ी 'शाबर'-मन्त्रों की 'साधना-विधि' पूर्णतः उक्त श्लोक के अनुरूप दिखाई देती है। कदाचित् इसी से इन मन्त्रों को अत्यन्त गुप्त रखा जाता है और केवल विश्वसनीय शिष्य को ही ये मन्त्र कण्ठस्थ कराए जाते हैं।

आगे कुछ 'छत्तीसगढ़ी शाबर मन्त्र' दिए जा रहे हैं। ये सभी उग्र मन्त्र हैं। इन मन्त्रों से भूत-प्रेत या बीमार - ग्रस्त व्यक्तियों को, जिनकी बीमारी के कारण जल्दी समझ में नहीं आते, २१ बार 'भभूत' से फूंकने पर वे ठीक हो जाते हैं।

**(१) कारे करूवा कारे पाठ, तोर हबरत मां करेजा फाट। छाती फार के करेजा ला। हेर अहो अहारो रकत-मांस के करो फरहरे। अढ़ाई बोबरा देवी ला। चढ़ाओं तीन बोबरा। महादेवला अढ़ाई पारबती ला। हिल-मिल घाट रकत सम्हार के कहा। काट - काट करजा सीढ़ी चढ़ावों। उलट भाखों देव पठाऊँ। जेला कहों, तेला खाबे। जेला कहों, तेला बचाबे। सो तिरिया कराव चढ़े। सुख बोबरा बराइन कामा। चढ़ाइन चील, देबी मां चढ़ाऊँ। हे देवी ! तोला फलाना चढ़ा देहें, तैं ले ले॥**

(२) काली देवी, कलकत्तावाली। गुर के दिया, फूस के बाती। बिद्या पढ़ेन, मङ्गल राती। जारे बैरी के मस्तक मां बैठबे। बैठ के गुदी खाबे। नैन फोर, पानी पीबे। छाती बैठ, करेजा खाबे। रकत के कुल - कुल्ला करबे। बैरी के जान ला। टोर के आबे, तब पारबती के नाम कहाबे। सच्चा कालिका देवी कहाबे॥

(३) कारी करौवा, कारी रात। जा-जा करौवा गङ्गा के पार। बैठे होही, बोह के लानबे। सूते होही, त बोह के लानबे। सरग ले गिरे, तो गरजन पार। आजे के सोंच, काले के सोंच। केस कास के मुरगा, लोहा के छकड़ा टोर-टार गुरू काँवर भरे। छाती फोर, करेजा खाबे। सिर फोर के गुदी खाय। पांजा फोर के, लहू पीबे आँखी के। अब दुल-दुला खाय नाक के। गुद खाय दूनो नयन के। बाँटी खेलत आय, तब तो करूबा सोनइता रहो कहाया॥

पान मँगाहूँ, पनागर ले, सत - लोक ले, जल बैकुण्ठ ले। श्री-फल, मँगा के परवाना देथों, अस्थीर हो जा।

उक्त मन्त्र पढ़कर भूत - प्रेत - ग्रसित व्यक्ति को २½ बीरा पान खिलाना चाहिए। कभी-कभी भूत-प्रेत-बाधा-ग्रसित रोगी ठीक नहीं होता, बल्कि और जोर से अनाप-शनाप बोलने लगता है। तब निम्न-लिखित मन्त्र को पढ़कर फूंकना चाहिए। इससे उक्त मन्त्र अपना कार्य करने लगता है—

"सुन - सुन देवी, निरगुन कारी। सुन देव अरजी हमारी। २१ माता के बोल, खाली हो जा॥"

उक्त मन्त्रों को किसी शुभ दिन या मङ्गल, शनिवार की रात्रि में एकान्त में दीपक जला, नींबू, नारियल, सिन्दूर चढ़ाकर अर्ध-रात्रि में जप कर सिद्ध कर ले। मन्त्र में बताए उग्र कर्म के लिए श्मशान में नग्न होकर जप किया जाता है। इसलिए शान्ति-कार्य हेतु ही जप किया जाय, यही उचित है। उग्र-जप में गुरु का मार्ग-दर्शन आवश्यक है।

प्रथम मन्त्र का जप करने के बाद आठ 'बोबरे', जो गीले आटे को तेल में सान कर बनाए जाते हैं और जिनमें गुड़ मिला रहता है या आठ बड़े बनाकर देवी को चढ़ाकर नदी या तालाब में विसर्जित कर देने चाहिए। इससे रोगी व्यक्ति ठीक हो जाता है।

# पाठकों के पत्र

"....'शाबर-मन्त्र-संग्रह' का प्रकाशन अत्यन्त सुन्दर और उपयोगी है। सात भाग प्रकाशित कर आपने बहुत बड़ा कार्य किया है। उदार-मना प्रस्तुत - कर्त्ताओं ने यद्यपि स्वेच्छा से अनुभूत या सिद्ध प्रयोग भेजे हैं, तथापि आपने गुप्त खजाने को प्रकट करने का जो प्रयास किया है, वह सराहनीय है।...."

—सुखदेव शर्मा

ग्राम/पो० खाखोली, द्वारा मौलासर
जिला नागौर (राजस्थान)

# दुर्लभ शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री प्रदीपकुमार नन्दगोपाल व्यास
कोट मुहल्ला, डीडवाना (राजस्थान)

## १. देह-रक्षा-मन्त्र

"ॐ नमो आदेश गुरू ने तल कीलूं, तलवाई कीलूं, कीलूं लोह का खीला। मूंठ कीलूं, मशाण कीलूं, कीलूं वामन माला। मूंज की जेवड़ी, वज्र का कड़ा। मेरी पीठ पर हनुमान खड़ा। शब्द साचा, चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

**विधि :** शुभ दिन मङ्गलवार की रात्रि को धूप-दीप कर पश्चिमाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बैठे। हनुमान जी का ध्यान करते हुए उक्त मन्त्र का २१ माला या कम-से-कम ११ माला 'जप' करे। अगले मङ्गलवार तक नित्य रात्रि में 'जप' करे। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। पुनः आवश्यकतानुसार अपने शरीर पर २१ बार उक्त मन्त्र पढ़कर फूंक मारे। फिर चाहे जहाँ जाए, किसी प्रकार का भय नहीं होगा। होली, दिवाली और ग्रहण में १०८ बार 'जप' कर ले।

## २. नृसिंह-मन्त्र

"ॐ नृसिंह बाला, ॐ नृसिंह बाला, ॐ नृसिंह बाला। घट-पिण्ड का तुम रखवाला। तुमरे सुमिरे होवे उजियाला, खुले जब घट के कूँची-ताला। दृष्टि-काल महा-विकराल, चार खूंट के बाँधन-हार। ऋद्धि-सिद्धि का श्रीलक्ष्मी जी ! भरो भण्डार। ॐ सत्य नृसिंह कमल, नृसिंह भक्त-वत्सल। नृसिंह भक्त-वत्सल, नृसिंह योग - ध्यानि ध्याय के, ढोय के, चार खूंट की रिद्धि-सिद्धि आसन पर आनी। उलट लाल ललाट सोहे, चार खूंट पृथ्वी को नृसिंह मोहे। ॐ साहेब मेरा शब्द का साँचा। ॐ साहेब मेरा वचन का गाढ़ा। ॐ साहेब मेरा गहर - गम्भीरा। ॐ राजा-राणी को कील। दैत्य-दानव को कील। नारी - स्यारी को कील। डाकनी-डङ्क को कील। टोना - टामरा को कील। छल-छिद्र को कील। भोंघरा-भोटी को कील। चण्डी-चुड़ैल को कील। नौ नाड़ी,

बहत्तर कोठों को कील । ताव-तिजारी को कील। एकत्तरा - बहत्तरा कील । बारह जाती बाघ कील । नो कोटी नाग कील । चोर - चर्पट कील । आकाश के दैत्यों को कील । पाताल के दैत्यों को कील । नाके-घाटे कील । मरे मसान कील । गुनी-गुनियों को कील । नदी-नाले को कील । कुआँ-बावड़ी को कील । दुष्ट-मुष्टों को कील । ॐ कील, ॐ कील, ॐ कील । मेरा कीला करे घात, छाती फाट मरे । जो पिण्ड पर करे घात, उलटी घात उसे परे। ॐ खं खं खं फट् स्वाहा इति । श्री पिण्ड-प्राण की रक्षा नृसिंह करे । सङ्कट में सुमिरूँ नृसिंह, हकार में हनुमान । धक्के - धूम में, खाँसी - खुर्री में, मिरगी या मसान में, रक्तिया मसान में, दुहाई नृसिंह की ।

## ३. हनुमान जी का सर्व-कार्य-सिद्धि मन्त्र

"ॐ विनायक कण्ठा बेठो आय । सबके पहली सिमर सूं भूल्या राय बताय । अञ्जनी-पुत्र, पवन - पुत्र, सुद-पुत्र ! मैं हुङ्कारू, जद ही आओ । मेरा काम सिद्ध कर ल्यावो । हनुमान ! बजर की काया । जद हुङ्कारू, जद ही धाया । मैं जाणू पारी जातः, तू जलम्यो अमावस की रातः । लूंग - सुपारी - जायफल—तीनू पूजा लेय । सीध पैरूँ, बैठ के तीधारा खाण्डा लेय । अटक-अटक लङ्का-सा कोट, समुन्द्र - सी खाई । लोखी कील, बजर का ताला, आ बैठे हनुमन्त वज्र रखवाला । आव हनुमन्त ! जल्दी आव । हमारा काम सिद्ध करि ल्याव । शब्द साँचा, चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ।

**विधि :** लौंग-सुपाड़ी-जायफल की धूप आदि और अन्त में दे । बीच में बत्तीसा धूप दे । एक पाव खोवे के लड्डू का प्रति - दिन भोग लगाए और उसे लड़कों को बाँट दे । पहले १२१ बार पानी से, बाद में १२१ बार गाय के कच्चे दूध से स्नान कराए, फिर खोये के लड्डू को पान पर रखकर हनुमान जी को चढ़ाए । पूजन रात में आठ बजे के बाद करे । पूजा या जप ऐसे स्थान में करे, जहाँ पर स्त्रियों का आना-जाना न हो । मङ्गलवार से आरम्भ करे और फिर नित्य कम-से-कम ११ माला 'जप' करे । ४१ दिन तक करे । इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा । बाद में नित्य कम - से - कम १ माला 'जप' करता रहे । होली-दिवाली-ग्रहण आदि में विशेष 'जप' करे । आवश्यकतानुसार 'प्रयोग' करे ।

## ४. अभिचार-निवारक-हेतु मन्त्र

"बिस्मिल्ला रहिमान रहीम, जे अमुक को पान लागे, तो बहरूम की दुहाई।"

**विधि :** 'नाग-पञ्चमी' को कमर तक जल में खड़े होकर उक्त मन्त्र १०८ बार जपे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। नित्य 'जप' करे। पेशाब का छींटा न लगे। पेशाब अपने पैरों के नीचे से न जाय। नदी-नाले का उल्लङ्घन न करे। बाद में आवश्यकतानुसार १०८ बार मन्त्र पढ़कर नीम की डाली से झाड़े।

## ५. सर्व आधि-व्याधि-रक्षा-कारी मन्त्र

"ॐ गुरू जी बजर जञ्जीर, बजर की धारा। साधू-सन्त के हो रखवारा। जासूँ शब्द चलसूँ धारा। बाँधूं खेड़ा चौपन धारा। बाँधूं ठग-ठगनी का रोसू। लोहा-अग्नी का झोल बाँधूं और बाँधूं दूती का बोल। चोर-चकार-मकार-खूनी और खून बाँधूं। गुलाम केरी अब्बा बांधूं। आँवे तीरी पीड़ा बाँधूं। टोणा-टशमणा बाँधूं। काया कछ बाण बाँधूं। आकाश की बिजली बाँधूं। अग्नि-बृख बाँधूं। अखैट पीर बाँधूं। पाँचू पीर बाँधूं। डङ्किनी का मुख बाँधूं। देशापति राजा बाँधूं। माया केरा फन्द बाँधूं। मैं बाँधूं पाताल। सही सत-गुरू वचना प्रमाण। सन्त कबीर सिर पर खड़्या। सब हींसा सरदार सत्पुरुषा। चौकी फिर सत सुगरथ है। साथ सन्त कबीर कहे, शब्द से मेटा मिट विकार। लय हँसा सत-गुरू साईं। तात-घात शरण, तन-रोग नहीं व्याप। ताप-घाप मिट जाई। छल-छेदर सन्मुख खड़्या, दरशना ठहराई। अटन-पटन मूठ नहीं व्याप। उल्टी चल धाई, जहर-विष खाय निकट नहीं आव, उल्टी हो जाई। कहत कबीर मिट दुःख धुन - धुन। सत्गुरू आन की लाख दुहाई। शब्द साचा, पिण्ड काचा। चलो मन्त्रो, ईश्वरो वाचा।"

**विधि :** धूप-दीप जलाकर शुभ दिन से उक्त मन्त्र का २१ दिन लगातार २१ बार प्रति-दिन जप करे। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। बाद में नित्य 'जप' करे। आवश्यकतानुसार 'प्रयोग' करे।

## ६. पीलिया झाड़ने का मन्त्र

ॐ गढ़ पाटन सूं किया। आई जुरकी पाल, जुरकी पाल में जाल। जाल में कटोरी। कटोरी में स्यार की सूई। नीम का पत्ता, पीलियो

फूल। छोत नन्दाई, रताव अताव। घटेगा रोग, बढ़ेगा शरीर। शब्द साँचा, पिण्ड काँचा। चलो मन्त्र, ईश्वरी वाचा। गुरू का वचन, जुग-जुग साँचा।"

**विधि :** अगर-बत्ती, धूप लेकर ग्रहण-काल में ११ माला जपे, तो मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। होली, दिवाली, ग्रहण में १-१ माला जप करे। आवश्यकता पड़ने पर पीलिया, रताव, छोत नन्दाई पर झाड़े।

## ७. सर्व-सिद्धि-प्रयोग

(१) "मणि - भद्राय चटकाय सर्व - सिद्धि करे जाप, मम स्वप्न दर्शाय, कुरु कुरु दर्शाय।"

**विधि :** ११ माला नित्य जप कण्डीर-पुष्प (जवा - कुसुम) पर करे। फूल पर फूँक मारता जाए। वही फूल सिर में रख सो जाय। फूल नित्य लाए। दीपक, गूगुल, अगर - बत्ती, लोबान की धूप देता रहे। ८ दिन का प्रयोग है।

(२) "ॐ गुरू जी दिया दुधारा, कर्मन की पूरो आस। जङ्गल में मङ्गल करो, गेगट करो आस। रिद्धि-सिद्धि का पूरो भण्डारा, लागी कूँची खुला भण्डार। गणेश कुञ्ची सम्पूर्ण हुई। अनन्त करोड़ सिद्धा में बैठ गोरखनाथ जी बोल्या। शब्द साँचा, पिण्ड पाका। गुरू जी का वचन, जुग-जुग ही साचा।"

**विधि :** रात्रि में गूगुल जला कर, ११ माला प्रति-दिन जप करते हुए ८ दिन तक जप करे।

## ८. देवाङ्गना-प्राप्ति मन्त्र

**ॐ ह्रीं नमः।**

**विधि :** लाल पुष्प या कुमकुम की माला पहन कर ५ माला प्रति-दिन जप करते हुए सात दिनों तक उक्त मन्त्र का जप करे। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा।

## ९. आकर्षण-मन्त्र

"ॐ नमो बाप सलेमान ! सभा पूरी बैठा, तिहा स्त्री पुकारने लागी—अहो अहो, बाप सलेमान ! देखूं तेरी सकत। बाबा आजम क लिङ्गनी, ॐ ठ ठ ल्याव-ल्याव, वेग-वेग पुर, मन - इच्छित पांवु। ॐ ह्रीं क्लीं स्वाहा।"

**विधि :** गुरुवार की रात्रि में स्नान कर, सफेद वस्त्र पहन, सफेद पुष्प-माला गले में पहने। फिर श्वेत पुष्प, घी का दीपक, लोबान, धूप से पूजा कर उक्त मन्त्र का सात हजार जप करे। उठते उमय पञ्चामृत से होम करे, तो कार्य सिद्ध होगा।

## १०. बावन वीर का शत्रु-नाशक मन्त्र-प्रयोग

"वायलो खुदियो वीर, तल्यहा नाडि-तोड़क। थुलि-मञ्ज श्मसानस्य दूर्ग, हृद् - वन्थि तारक। समुद्र सोखणो वीर, लोह-भञ्जन में बच। सृखला भञ्जनो वीर, विष खर्पर वै तथा। रुण्ड - माली आगियोऽथ वाय खोल, यम-घण्टश्च काल वै। अकालो अग्नि - कान्ति च, विष-कान्ति तथैव च। रक्तियो कोइलो वीर, कालियो काल - वेलय। काल-धर देद्र-वारो यम-वारो तथैव च। देवारि-दुरतारी च, हरारी झापडस्तथा। माण-भद्र कापडियो, केदारो नारसिंह वै। गोरलो घरटश्चैव, कण्टको बङ्ग-बिरवै महा-वगश्च। सन्तोष महा-सन्तोष एव च। भवरश्चाति-भवर, सहस्राक्ष तथैव च। साह - सङ्ग क्षेत्र - पालो, भूत-भक्षक भैरव। शाकिनी मारको वीर, वेददी - भञ्जनतस्था। शालिवाहन भूपालो, राजा आद्र-कुमारक। नेत्र-तत्त्वा समाख्याता, सह-मूल-सम्मता। अहो बावन-वीरा, मे शत्रु-विध्वंसनं कुरु।

## ११. बावन वीर का मन्त्र

"ॐ नमो पैठाण-पुर पैठण-देव, अङ्ग-जित मानव-अङ्ग-जित, वैरी-दलन घरद-वैरी तणे उतारै मरद तिण नगरी। राज सालवाहन राज करे। तेह गणो पञ्चास वीर कुण-कुण। वायलो १, खुदियउ २, तल-पहर ३, नाडितोड ४, सूल-भञ्जन ५, मुसाण-लोटन, ६, गढ-पाडन ७, समुद्र-तारण ८, समुद्र-सोखन ९, लोह-भञ्जन १०, साँकल-तोड़न ११, विष-खापरियो १२, रुण्ड - माल १३, आगियो १४, वाय - खील १५, यम-घण्ट १६, काल १७, अकाल १८, अग्नि-कान्ति १९, विष - कान्ति २०, रगनिया २१, कोहलो २२, कालियो २३, काल-वेल २४, कार-घरट्ट २५, इन्द्र-वार २६, यम-वार २७, देवारी २८, दुरतारी २९, हरारी ३०, झापड़ो ३१, माण-भद्र ३२, कापडिया ३३, केदारो ३४, नारसिंह ३५, गोरलो ३६, घरट ३७, कण्टक ३८, बग ३९, महा - बग ४०, सन्तोष ४१, महा-सन्तोष ४२, भमर ४३, महा-भमर ४४, सह-

स्राक्ष ४५, सात-सङ्ग ४६, खेत्र-पाल ४७, भूत-वाण ४८, शाकिनी-मार ४९, वेद-रति-भञ्जन ५०—इत्येवमादिक पचास वीर। एक समु-राजा शालिवाहन ५१, बावनुमुराजा आद्र-कुमार। अहो बावन-वीर! एह पात्र के पिण्ड पीड़ा कर। न करे, तो बावन वीर की आज्ञा फुरै। एक पात्र में बन्द डाकिनी, बन्द शाकिनी, बन्द भूत-प्रेत, बन्द पिशाच, बन्द जाड़-झोटङ्ग बन्ध। दुश्मन घाव घाले, मार-मार, तोड़-तोड़, त्रिशूल सूं तोड़। अहो बावन वीर! ए पात्र को पीड़ा कर। पीड़ा न करे, तो बावन वीरा कीरी आज्ञा फुरै। जः जः जः, ठः ठः ठः स्वाहा॥ ॐ हनुमान, रगत्या भैरूं, चौसठ जोगणी, बावन वीर, चौंकी हनुमान की, ज्वाला माई की चौकी सही॥

## १२. मणि-भद्र क्षेत्र-पाल का मन्त्र

(१) "ॐ ह्रीं श्रीं चिन्ति, चिन्ता-मणि पूरी। पूरी लक्ष्मी आनय। ॐ ह्रीं श्रीं गणेशाय नमः॥ ॐ आं ह्रीं क्रों, क्ष्वीं, क्लीं ब्लूं, द्रां द्रीं, ॐ नमो भगवते, मणि-भद्राय, क्षेत्र-पालाय, कृष्ण-रूपाय, चतुर - भुजाय, जिन-सासन-भक्ताय! हिलि हिलि, मिलि मिलि, कलि कलि, चक्षु-मायु स्वाहा॥"

**विधि :** मणि - भद्र, क्षेत्र - पाल के उक्त मन्त्र का जप सात सहस्र (सात हजार) रक्त-पुष्पों से करे। प्रयोग-काल में २४ श्वेत पुष्प, १०८ रक्त-कण्डील पुष्प ( जवा - कुसुम ) के साथ एक शत जप करे। इससे देवता प्रत्यक्ष होकर शुभ या लाभ-हानि की सूचना देंगे।

(२) "ॐ नमो खोडिया खेतर-पाल! हाथ कपाल, मष्तर पाल। उभय प्रत्यक्ष—आकाश-पाल, पाताल - पाल। कीर - वकीर नेड़ो, जिहा आवे। मम वाञ्छित देहि, शीघ्र आगमनं कुरु कुरु स्वाहा॥"

**विधि :** मङ्गलवार २७ हजार जप करे। नैवेद्य में लपसी, लड्डू, वटक (बड़ा) दे। इस मन्त्र से राजा-प्रजा वशीभूत होते हैं और वैरी का मारण होता है।

## १३. आत्म-रक्षा का मन्त्र

(१) "काया राख कालका, तालु राख तालिका। हियो राख हणवन्त वीर, पूठ राख हणवन्त वीर। सीस राख चौख पीर, पाँच पीर रक्षा करें। सवा भार लोह का कोठा, ते माहिं हमारा जीव

बैठा श्रीभीम वैताली। श्री गुरु गोरखनाथ करै रखवारी। हमार डील ऊपर कोई इष्ट कर – मुष्ट कर – छल कर – छिद्र करे, जाण कर – विजाण कर। सोई करे, सोई मर। गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति। चलो मन्त्र, फुट फुट स्वाहा ॥"

**विधि :** नित्य २१ माला जप करे और मङ्गल-मङ्गल बालकों को भोग दे।

(२) "ॐ नमो आदेश गुरू कूं। सवा मण लोह का कोठा घडिया, जिसमें पिण्ड हमारा धरिया। तला धरती, ऊपर आकाश। भूत-प्रेत का काडू सांस। तांबे का कोट, कथीर की खाई, जहाँ बैठा जती हनुवन्त की माई। ब्रह्मा की कूंची, ईश्वर का ताला। म्हारा जीव का गुरू गोरखनाथ रखवाला। गुरू की सगत, हमारी भगत। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

**विधि :** उक्त मन्त्र पढ़कर अपनी देह पर फूंके।

(३) "ॐ नमो आदेश गुरू कूं। कपाल राखे कुमारिका, भुवनेश्वरी, त्रिपुरा-बाला, काम-राजा, पार्वती, प्राण-नाथ, छत्र-पति, नव-कोटि कात्यायनी, त्रिपुर-सुन्दरी, ज्वाला - मुखी, तारा, तोमरा, देवी कालिका, भवानी। पच्चो बैठे लिलाट। चन्दन केरा तिलक करो। वीरी हमारो लात, बाऊ वीर हनुमन्त। जे तज्यो मन चिन्त्यो, सो साजे हिवाऊँ। तेहि मोकू गुरू की सगत, हमारी भगत। चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। शब्द साचा, पिण्ड काचा।"

**विधि :** उक्त मन्त्र २१ बार पढ़कर शरीर के ऊपर फूंक दे। पुनः निम्न मन्त्र से २१ बार शरीर को फूंके।

"ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः सर्वं रक्ष रक्ष स्वाहा।"

## १४. वशीकरण के मन्त्र

(१) "ॐ नमो कांगरू की नारी, लूणा चमारी, वीणा जे इक वड। जल बाँधूं, तो मछया लागे। मछा कुटु, तो जल लागे। भेंस दू, तो पाड़ा लागे। अस्त्री कुटु, तो पुरुष लागे। पुरुष कुटु, तो अस्त्री लागे। लागी-लागी हो हणवन्त वीर वेताल। मोहनी-सोहनी-जोहणी, तीन एक मिलावणी। डाँगुर्च पे मही दीन बसइ, मोहू सारो गाँव। राजा मोहू, अड़ोसी-पड़ोसी मोहू। आपो छाडी जगत सहू मोहू। गुरू की सगत, मेरी भगत। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा ॥"

**विधि :** उक्त मन्त्र ११ बार पढ़कर नमक पानी की मटकी में डाले। साध्य वशीभूत होता है।

(२) "ॐ नमो लोह का कोठा, तिस माँह हमारा जीव पेठा। ईश्वर कुची, ब्रह्मा ताला। त्याँ बेठा हणवन्त वीर रखवाला। राजा-प्रजा आवे, मार-मार करन्ता। ते दुथु वीर पाय पड़ता। हाथ उठावे, तो हाथ खीलू। मुख बोले, तो जीभ खीलू। पाँव उठावे, तो पाँव खीलू। गुरू की सगत, मेरी भगत। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥"

**विधि :** ८ बार नित्य जपे।

(३) "ॐ नमो आदेश गुरू कु। फूल - फूल - फूल की बाड़ी, फूल तोड़ लुणयो दे चमारी। फूल हस, फूल विगस। फूल म बीर नारसिंहा बस। जे कोई ले तूल, फूल की बास, जल्दी आव हमार पास। कसम कू पीठ, हमकु हीया, देखु वीर नारसींघ तेरा किया। ओर कु देख, जल-बल-चल हम देख। हस क चल, जीवत चाट पगथली। मुवा सेव मसाण। हमारा चलाया नहीं चल, तो अलख पुरुस की आण। सब्द साँचा, पीण्ड काचा। चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥"

**विधि :** पहले 'सूर्य-ग्रहण' में जप कर सिद्ध करे। फिर 'प्रयोग' में लाए।

(४) "ॐ नमो अल्ला हो, बिसमिल्ला रहिमान। अमुक को मायथा ताली माण। इस करी त्रोष फुरीद की आज्ञा। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा॥"

**विधि :** उक्त मन्त्र पढ़कर साध्य को वस्तु खिलाए।

(५) "बिस्मिल्ला रहमान रहीम। अल्लाह बीच हथेली के महूम्मद बीच कपाल। उसका नाम मोहनी, मोहे सब संसार। जो मुझे करे मार - मार, उसे मेरे बाए कदम तले डार। जो न माने, तो मुहम्मद की आण। उस पर पड़े बजर का बाण। वर हक्क ला इलाह, मुहम्मद मेरा रसुल अल्ला॥"

**विधि :** शनिवार को दीपक जलाकर, फूल - मिठाई रखकर ८ दिन तक १०८ बार 'जप' करे। दूसरे शनिवार को साध्य के बाँएँ पैर के नीचे की मिट्टी लाकर, उस पर उक्त मन्त्र पढ़कर साध्य पर डाल दे।

## १५. पञ्चांगुलि देवी की साधना

**ध्यान-मन्त्र :** ॐ पञ्चांगुली महा-देवी, श्री सीमन्धर-शासने ।
अधिष्ठात्री करस्यासौ, शक्तिः श्रीत्रिदशेशितुः ॥

**जप-मन्त्र :** ॐ नमो पञ्चांगुली, पञ्चांगुली ! परशरी, परशरी ! माता मयङ्गल वशीकरणी, लोह - मय - दण्ड - मणिनी, चौंसठ काम-विहण्डनी ! रण-मध्ये, राउल-मध्ये, शत्रु - मध्ये, दीवान - मध्ये, भूत-मध्ये, प्रेत-मध्ये, पिशाच-मध्ये, झोटिङ्ग-मध्ये, डाकिनी-मध्ये, शाकिनी-मध्ये, यक्षिणी-मध्ये, दोषणी-मध्ये, शेकनी-मध्ये, गुणी - मध्ये, गारुडी-मध्ये, विनारी-मध्ये, दोष-मध्ये, दोषाशरण - मध्ये, दुष्ट - मध्ये, घोर कष्ट मुझ ऊपर बुरो जो कोई करावे, जड़े-जड़ावे, ततचिन्ते चिन्तावे, तस माथे श्री माता पञ्चांगुलि देवी तणो वज्र निर्धार पड़े । ॐ ठः ठः ठः स्वाहा ।

**विधि :** देवी का षोडशोपचार-पूजन कर उक्त मन्त्र का जप करे । यह साधना कार्तिक मास में हस्त नक्षत्र में प्रारम्भ कर मार्ग-शीर्ष मास के हस्त नक्षत्र में पूर्ण करे । प्रति-दिन एक माला (१०८ बार) जप करे । जप के बाद नित्य पञ्च - मेवा की दस आहुतियों से मन्त्र-होम करे । ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है । तदनन्तर प्रति-दिन ७ बार हाथ को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर उसे सर्वाङ्ग पर फेर लिया करे । इससे हस्त - रेखाओं द्वारा जन्म - कुण्डली बनाने में पर्याप्त सहायता मिलेगी ।

## १६. हाजरात (प्रत्यक्ष दर्शन) के मन्त्र

### (१) ॐ शिव गोरख ।

**विधि :** रात्रि को १२ बजते ही पूर्व की ओर मुख करके मन्त्र जपने बैठ जाय । घी का दीपक, अगर - बत्ती जलाकर और पानी का लोटा भर कर रखे । सूर्योदय होने तक जप करे । फिर लोटे के जल से सूर्य भगवान् को अर्घ्य दे । इसी प्रकार नित्य ४१ दिन तक करे ।

### (२) या माशारल जिनने ।

**विधि :** गुरु या शुक्र की रात्रि को पश्चिमाभिमुख होकर उक्त मन्त्र की १० माला ४१ दिन तक जपे । जप का समय निश्चित कर

ले। लोबान की धूप दे। जप का स्थान भी एक ही रहे। कैर (काष्ठ) का कोयला चमेली के तेल में घिस कर अँगूठे के नख पर लगाए। उक्त मन्त्र को २१ बार पढ़कर फूँक मारे। इससे 'हाजरात' का कार्य प्रारम्भ होगा। यह 'हाजरात' स्त्रियों पर भी चढ़ती है। एक स्त्री के नाखून पर लगाने से अन्य चार स्त्रियाँ भी देख सकती हैं।

## १७. 'मूठ' उतारने का मन्त्र

"ॐ नमो अवल वीसमला। रहमान रहीम। महम्मदा पीर कहाँ चले ? मसाण चले। कीरण बन्ध, कुटाल बन्ध, येड़ा बन्ध, चेड़ा बन्ध, भूत बन्ध, प्रेत बन्ध। खपर में खाणा, मसाण रणा। बावन वीराचीं चौकी, आपकी चौकी। बेठावता आवे, दूजा की चौकी उठाय डार। आगिया वैत बाँध, भैंसासुर वीर बाँधु। पीपल का मुजीया बाँधु। कावरू देश की कुमख्या देवी बाँधु। डाकणी बाँधु, साकणी बाँधु, सारी बाँधु, कुसली बाँधु, मरी बाँधु, जरी बाँधु, मेसकु बाँधु, फीरती मईस कु बाँधु, गावटी मईस कु बाँधु, मसाण का मईस ताव बाँधु. तिजारी बाँधु, चोथारी बाँधु, सात पुत्र अजेपाल का बाँधु, गाँव बाँधु, गावटा बाँधु, नदी बाँधु, नाला बाँधु, घर का दरवाजा बाँधु, तेली-तँबोली की मूठ बाँधु, मार भाग की मूठ बाँधु, डोरा कटा की मूठ बाँधु, माल स्याल की मूठ बाँधु, कुमार चमार की मूठ बाँधु, पटेल - पटवारी की मूठ बाँधु, हाकम हुकम की मूठ बाँधु। कुण बाँध, नारसिंह वीर बाँध। न बाँध, तो बहन भाणजीरी सेजा पर पाँव धर। अठारा गऊ चीं हत्या, अठारा ब्राह्मण चीं हत्या, अठारा अस्त्री चीं हत्या, अठारा बालका की हत्या, अठारा भार बनासपति चीं हत्या। गुरू की शक्ती, हमारी भक्ती। चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।"

**विधि :** पाँच खाजा, खारक ( छुहारा ), खोपरा ( गरी का गोला), चावल, कुमकुम, नीबू का भोग लगाए। सवा हाथ लाल कपड़े का मण्डल बनाए। कपूर का दीपक करे। माहेश्वरी (माहेसुर) की पूजा करे। पानी के ऊपर हाथ रखकर १००८ बार मन्त्र जपे। होली, दिवाली, दशहरा को पूजा करे। मूठ उतारने का यह मन्त्र सिद्ध हो जायगा। आवश्यकतानुसार प्रयोग करे।

## १८. सर्व-कामना-सिद्धि का मन्त्र

"कलकत्ता भैरूँ चढ़ता, हनुमन्त वीर। माता अञ्जनी की दुहाई, माता कालका की दुहाई, जालँस्या पीर की दुहाई, बीबी फातमा की दुहाई।"

**विधि :** भैरूँ जी के सवा पाँच सेर बाकला, हनुमान जी के सवा पाँच सेर का प्रसाद चढ़ाकर साधु-ब्राह्मणों को बाँटे। जालस्याँ पीर को सवा पाव प्रसाद तथा बीबी फातमा को सवा पाव तिलों की रेवड़ी चढ़ाना।

## १९. अति वृष्टि-शान्ति-प्रयोग

"ॐ नमः हनवन्त वीर। अञ्जनी पवन देवता की आण। जहू ऐसी मेघ-मण्डली वर्षं सी इत-उत फाट-फूट सत-खण्ड जायसी।"

**विधि :** उक्त मन्त्र को पहले दीपावली की रात्रि में १ माला जप कर सिद्ध कर ले। फिर अति वर्षा के समय इस मन्त्र का ७-७ जप करके तीन बार ताली बजाकर आकाश की ओर मुख करके फूँक मारने से अति वर्षा करते हुए मेघ भी तत्काल फट जाते हैं। इस मन्त्र को जपता हुआ बरसते हुए पानी को झाड़ू से दूर करके उस झाड़ू को सीधा खड़ा दे, तो वर्षा बन्द हो जायगी।

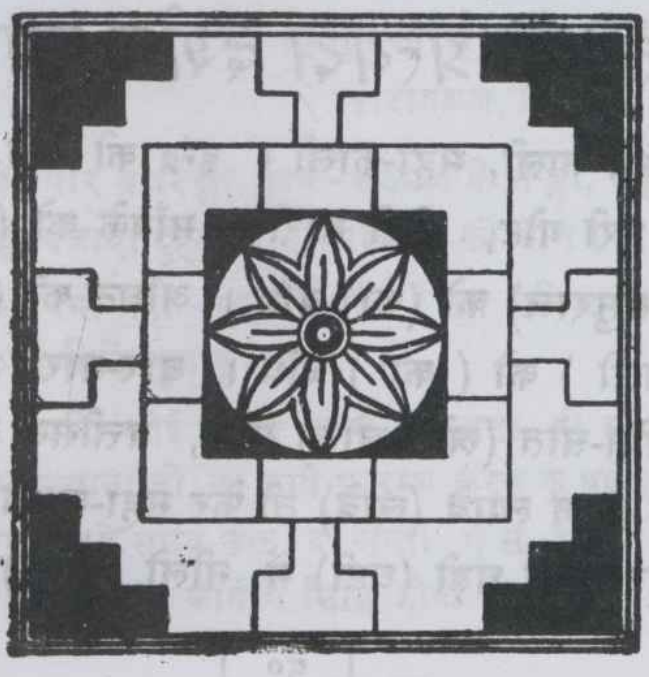

# भैरव जी का शाबर मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : 'तन्त्राचार्य' डा. जगदीशरण बिलगइयाँ 'मधुप'
चामुण्डा महा-शक्ति पीठ, दतिया (म० प्र०)

भैरों उचके, भैरों कूदे। भैरों सोर (शोर) मचावै। मेरा कहना ना करे, तो कालिका को (का) पूत न कहावै। शब्द साँचा, फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

विधि—होली की रात में, पोतनी (सफेद) मिट्टी या लाल मिट्टी से चौका देकर अण्डी (एरण्ड) की सूखी लकड़ी पर तेल का हवन करे। जब लौ प्रज्वलित हो, तब उसी प्रज्वलित लौ को चमेली के फूलों की माला पहना दे। सिन्दूर, गदिरा, मगौड़ी, इत्र, पान चढ़ा कर गूगल का हवन करे। १००१ बार उक्त मन्त्र जपे। मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। आगे नवरात्रि, दीवाली एवं अन्य सिद्ध पर्वों में १ माला 'जप' करे। 'जप' के पूर्व पूजन, हवन करे। जब कोई कार्य सिद्ध करना हो, तो जहाँ 'मेरा' कहना लिखा है, वहाँ 'मेरा अमुक कार्य' कहे।

# काली के प्रत्यक्ष दर्शन का मन्त्र

काली-काली, महा-काली। इन्द्र की बेटी, ब्रह्मा की साली। हरी गोट, पीरी सारी। माँयके को (का) बाँध, सासरे (ससुराल) को (का) बाँध। औघट को (का) बाँध, गैल (गली) को (का) बाँध। बार-बार (बाल-बाल) में से, सोत-सोत (स्रोत-स्रोत) में से, बत्तीसउ दाँत में से, ऐंच-खेंच के न ल्याबे (लावे) तो फेर महा-काली न कहावे। तीन पहर, तीन घड़ी (घटी) में, नीलो (नीला) धुआँ, पीरी

(पीली) रज (धूल) उड़ा के न आवे, तो काल-भैरों की सेज पै पग धरै।

**विधि**—मद्य, नौ लौंग, सिन्दूर की टिपकिया (गोल बिन्दी) लगावे। जिस जगह बैठे, उसी जगह दीवाल पर सिन्दूर से त्रिशूल की आकृति बनावे। मुर्गी का अण्डा और फूल-पुड़िया चढ़ावे। एक माला जप पूरा होने के बाद 'मद्य' से हवन करे। 'जप' रात्रि के दस बजे बाद करे। प्रति - दिन १ माला 'जप' करे। ४१ दिन तक रात्रि में 'जप' करे। यदि नव-दुर्गा में करे, तो नौ दिन में 'जप' पूर्ण होगा।

उक्त मन्त्र से सभी कार्य पूर्ण होते हैं, किन्तु इसका उपयोग दूसरों को पीड़ा पहुँचाने में कदापि न करे।

# सर्व-कार्य-कारी सिद्ध मन्त्र

**प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० रामजी पाठक**
दारागञ्ज, प्रयाग-राज (उ० प्र०)

(१) "ॐ पीर बजरङ्गी, राम - लक्ष्मण के सङ्गी, जहाँ-जहाँ जाए, फतह के डङ्के बजाए, दुहाई माता अञ्जनि की आन।"

(२) "ॐ नमो महा - शाबरी शक्ति ! मम अनिष्ट निवारय-निवारय। मम कार्य-सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।"

**विधि :** यदि कोई विशेष कार्य करवाना हो अथवा किसी से अपना काम बनवाना हो, तो कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व अथवा व्यक्ति-विशेष के पास जाते समय उक्त दो मन्त्रों में से किसी भी मन्त्र का जप करता हुआ जाए। कार्य में सिद्धि होगी।

विविध कार्य साधक

# अम्बिका-मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० रामलखन उपाध्याय, वैद्य
ग्राम बंधवा, पो० मेजा रोड, प्रयाग-राज (उ० प्र०)

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ५ के पृष्ठ ५५ पर श्री भैरवानन्दनाथ द्वारा प्रेषित 'शाबर - मन्त्र - वल्लरी' क्रम - संख्या १० पर 'विविध कार्य-साधक अम्बिका मन्त्र' प्रकाशित है। प्रेषक के अनुसार यह सिद्ध मन्त्र है। अलग से सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। नित्य कुछ 'जप' पर्याप्त है। मन्त्र के जप से विविध कामनाओं की पूर्ति होगी। जगज्जननी का मन्त्र है। एक दिन मैं इस मन्त्र को कण्ठस्थ करने के लिए 'जप' कर रहा था कि जगदम्बा की कृपा से एक रहस्य, जो कि मन्त्र में निहित है, उभर कर सामने आया। तथ्य यह है कि इसमें एक 'यन्त्र' भी छिपा हुआ है। उसकी निर्माण - विधि इस मन्त्र में ही दी गई है, जो निम्न प्रकार है—

अष्ट-भुजी ८, एक नाम ॐ-कार १, षट्-दर्शन ६। त्रि - भुवन ३, पाँच पाण्डवा ५, सात दीप ७। चार खूंट एवं चतुर्भुज ४, नव-खण्ड ९, चन्दा-सूरज २!

इस प्रकार उक्त मन्त्र के अनुसार एक चतुर्भुज बनाए। उसे ९ भागों में विभक्त करे। फिर उक्त अङ्कों को उनमें क्रमशः भरे, तो निम्न प्रकार का 'पञ्च-दशी यन्त्र' बन जाएगा। यथा—

| | | |
|---|---|---|
| ८ | १ | ६ |
| | ५ | ७ |
| ४ | ९ | २ |

**विशेष** : उक्त 'पञ्च-दशी यन्त्र' को 'सूर्य-यन्त्र' भी कहते हैं। 'सूर्य' के लिए सोना एवं ताँबा दोनों प्रशस्त हैं। 'चन्द्रमा' शीघ्र-गामी ग्रह है। 'सूर्य' का मित्र भी है। शीघ्र फल-दायी भी है। चन्द्रमा के लिए चाँदी प्रशस्त है। अतः उक्त 'अम्बिका - यन्त्र' से शीघ्र एवं प्रभावी फल चाहनेवालों को चाहिए कि उक्त 'पञ्च-दशी यन्त्र' को अपनी सामर्थ्य के अनुसार—सोना या चाँदी या ताँबे पर उत्कीर्ण कराकर भगवती का स्वरूप समझ कर 'पूजन' करे। पूजन के पश्चात् १०८ बार अथवा यथा - शक्ति मन्त्र का 'जप' करे। इससे इच्छित कार्यों की पूर्ति होगी।

# अनुरोध

जानकर महानुभावों से अनुरोध है कि 'शाबर-मन्त्र-संग्रह' के आठ भागों में प्रकाशित मन्त्रों के सम्बन्ध में यदि उन्हें कुछ विशेष बातें ज्ञात हों, तो उसे लिखकर प्रकाशनार्थ भेजने की कृपा करेंगे। साथ ही, यदि उनके पास अन्य अप्रकाशित 'शाबर - मन्त्र' हों, तो उनकी भी प्रतिलिपियाँ भेजने का अनुग्रह करेंगे, जिससे मन्त्र-विद्या के इस महत्त्व-पूर्ण अङ्ग पर शोध करनेवालों को कोई कमी प्रतीत न हो।

—सम्पादक

# शीघ्र फलदायी—शाबर प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : पं० भूपेन्द्रदत्त शर्मा
१४५ नया बाँस, नदी मार्ग, मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)२५१००२

## १. हनुमान जी की कृपा हेतु

**मा मुगनर बनर-कमर गासा नासे स्वाहा ॥**

**विधि :** ब्रह्मचर्य-पूर्वक २१ रात्रियों में उक्त मन्त्र का २१ हजार 'जप' करे। साधना-काल में बन्दर आदि का भय होगा। भयभीत न हो, साधना पूरी करे। अन्त में श्रीरामचन्द्र जी और श्रीहनुमान जी का आशीर्वाद प्राप्त होगा। प्रत्येक समस्या का समाधान स्वयं हनुमान जी करेंगे। मन्त्र-साधना से पूर्व श्रीराम व श्रीहनुमान जी का यथोपचार सहित पूजन कर लेना चाहिए।

## २. पीर मजार की कृपा हेतु

**या बुद्दूह बतदहत बिल बुद्दूह वल बुद्दूह फी बुद्दूहिका या बुद्दूह।**

**विधि :** पहले किसी निर्जन स्थान पर बनी हुई मजार या पीर पर गुरुवार की शाम को जाकर उसे गुलाब-जल (जल में इत्र मिलाकर) से पवित्र करे। एक नई चादर व श्वेत रङ्ग का प्रसाद बताशे आदि चढ़ाए। अगर-बत्ती जलाकर उक्त मन्त्र को इस्लामी रीति से ६६ बार पश्चिम दिशा को मुख करके 'जप' करे—केवल गुरुवार से गुरुवार तक जप करे। मन्त्र के प्रभाव से पीर की कृपा होगी। प्रत्यक्ष दर्शन भी हो सकते हैं। जब तक मन्त्र की साधना करे, तब तक प्रसाद-इत्र नित्य चढ़ाए।

## ३. चमत्कारी प्रयोग

('शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७ के पृष्ठ २८ पर मैंने 'एक चमत्कारी प्रयोग' दिया था। इस भाग में उस मन्त्र की भाँति 'दूसरा' व 'तीसरा चमत्कारी प्रयोग' प्रस्तुत कर रहा हूँ।)

## (क) सरीऊ सदीऊ ।

**विधि :** पहले रात्रि के समय किसी भी वार को एक अलग कक्ष में लकड़ियाँ जलाए। उक्त मन्त्र पढ़ते हुए जलती लकड़ियों में गुग्गुल डालता जाए। कुछ देर पश्चात् आतिश-बाजी की आवाजें आने लगेंगी। जब आतिश-बाजी की आवाज आने लगे, तो शीघ्र 'मन्त्र'-जप छोड़कर सो जाए। ऐसा ११ दिन तक करे। ग्यारहवें दिन वह आतिश-बाजी की आवाज अनायास ही मानव आवाज में परिवर्तित हो जाएगी। यह भी हो सकता है कि जलती लकड़ियों व गुग्गुल का धुआँ मानवाकृति में परिवर्तित हो कर आवाजें करने लगे। कुछ देर पश्चात् वह आकृति या आवाज जप-कर्ता से कहेगी कि मुझे क्यों बुलाया है ? तब तुरन्त उसको अपना उद्देश्य बता दे। जो भी कार्य होगा, वह पूरा होगा। दुरुपयोग न करे। लोक - कल्याण की भावना से कार्य करे।

## (ख) जिन्हारी उन्नहारी ।

**विधि :** जब कोई व्यक्ति स्वयं के द्वारा अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गया हो और उसके शव को श्मशान अथवा कब्रिस्तान में ले जाने की तैयारी हो रही हो, तब वहाँ जाकर मृतक के नाम-रूप का ध्यान करके उक्त मन्त्र की ३३ माला (हकीक की माला से) 'जप' करे। अगले दो दिनों तक मृतक के घर शोक में रहकर ३३-३३ माला का 'जप' और करे। तीसरे दिन किसी समय मृतक की आत्मा जप-कर्ता के सम्मुख उपस्थित हो जाएगी। जब जप - कर्ता मृतक के घर जाकर 'जप' करे, तो माला को अपनी सुविधानुसार वस्त्र की दाईं या बाँईं जेब अथवा वस्त्र के नीचे कहीं भी रखकर जप कर सकता है। इसके लिए किसी प्रकार का कोई विशेष नियम नहीं है।

## ४. तान्त्रिक सुगन्ध

राई, राल, लाल चन्दन, जटा- मांसी, कपूर, खाँड़, गुग्गुल, सफेद चन्दन का चूरा –इन सबको (क्रमानुसार दो गुना) लेकर इतने गौ-घृत में मिलाए, जिससे पूरी सामग्री अच्छी तरह मिश्रित हो जाए। सामग्री को कूट कर ही गौ - घृत में मिलाए। यदि किसी के घर में प्रेत-बाधा हो, तो इस सामग्री को गौ के उपले के अङ्गारे पर धूनी

दे। प्रेत-बाधा दूर होगी, साथ-ही-साथ क्लेशादि दूर होकर परिवार में उचित व्यवस्था आरम्भ हो जाएगी। यदि किसी के व्यापार-स्थान में ग्राहकों का आकर्षण न हो रहा हो, तो व्यापार - स्थान में यह सामग्री धूनी के रूप में प्रयोग करे। व्यापार की उन्नति-प्रगति होगी।

## भूल-सुधार

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ६ व ७ में अनुक्रमणिका में मेरे स्थान का नाम भूल - वश 'मुजफ्फरपुर' छप गया है। स्थान का सही नाम है—मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)।

'शाबर-मन्त्र-संग्रह', भाग ७ के पृष्ठ २२ पर, 'चौंतिसा यन्त्र' छपा है। उस यन्त्र की चौथी पंक्ति का चौथा कोष्ठक रिक्त छप गया है। रिक्त कोष्ठक में अङ्क ४ समझें। इसी भाग के पृष्ठ १२२ पर मेरे स्थान का 'पिन कोड' अशुद्ध छपा है। शुद्ध पिन कोड है—मुजफ्फर-नगर २५१००२ (उ० प्र०)

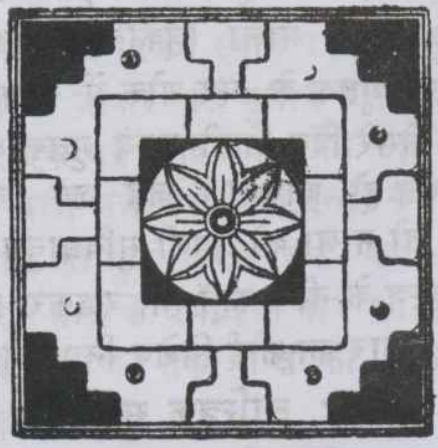

# सिद्ध जंजीरा मन्त्र

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्री प्रदीपकुमार नन्दगोपाल व्यास

कोट मुहल्ला, डीडवाना (राजस्थान)

## १. हनुमान मन्त्र (जँजीरा)

"ॐ हनुमान पहलवान, बरस बारह का जवान ! हाथ में लड्डू, मुंह में पान। खेल-खेल गढ़ लङ्का के चौगान। अञ्जनी का पूत, राम का दूत। छिण में कीलौं, नौ खण्ड का भूत। जाग - जाग हनुमान हुङ्काला, ताती लोहा लङ्काला। शीश जटा डग डेंरू उमर गाजे, बृज की कोटडी बृज का ताला। आगे अर्जुन पीछे भीम, चोर नार चम्पे न सींव। अजरा झरे, भरचा भरे। ईं घट-पिण्ड की रक्षा, राजा रामचन्द्र जी, लक्ष्मण कुँवर, हनुमान करें।"

**विधि :** २१ दिनों तक नित्य एक माला का जप करके मन्त्र सिद्ध करे। हनुमान मन्दिर में अगर-बत्ती करे। २१ वें दिन मन्दिर में एक नारियल और लाल वस्त्र की ध्वजा चढ़ाए। मन्त्र - जप के बीच चमत्कार हो, तो घबराए नहीं। यह मन्त्र भूत - प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, नजर, टपकार एवं शरीर की रक्षा के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

## २. भैरव मन्त्र (जँजीरा)

"ॐ गुरू जी ! काला भैरूँ कपला केश, काना मदरा भगवाँ भेस। मार-मार, काली-पुत्र ! बारह कोस की मार। भूतां हाथ कलेजी खूं हां गेडिया, जां जाऊँ भैरूँ साथ। बारह कोस की रिद्धि ल्यावो, चौबीस कोस की सिद्धि ल्यावो। सुत्यो होय तो जगाय ल्यावो, बैठ्यो होय तो उठाय ल्यावो। अनन्त केशर की भारी ल्यावो, गौरां पार्वती की बिछियाँ ल्यावो। गेल की रस्तान मोय, कूवे की पणियारी मोय। हटचाँ बैठचा बाणिया मोय, घर बैठी वणयाणी मोय। राजा की रजवाड़ मोय, महला बैठी राणी मोय। डंकणी को, संकणी को, भूतणी को, पलीतणी को, ओपरी को, पराई को, लाग कुं, लपट कुं, धूम कूं,

धक्का कूँ, अलीयाँ को, पलीयाँ को, चौङ को, चौगट को, काचा को, कलवा को, भूत को, पलीत को, जिन को, राक्षस को, बैरिया से बरी कर दे। नजरा जड़ दे ताला। इता भैरव नहीं करें, तो पिता महादेव की जटा तोड़ तागड़ी करे। माता पार्वती का चीर फाड़ लँगोट करे। चल डकणी - सकणी चौड़ू मेला बाकरा, देस्यू मद की धार। भरी सभा में द्यूं ओलयो, कहा लगाई थी वार। खप्पर में खा, मुसाणा में लौटे। ऐसे कुण काला भैरू की पूजा मेटे। राजा मेटे राज से जाय, प्रजा मेटे दूध - पूत से जाय। जोगी मेटे ध्यान से जाय। शब्द साँचा, ब्रह्म बाचा। चलो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।''

**विधि :** शनिवार की रात्रि में उक्त मन्त्र का जप शुरू करे। एक तिकोना पत्थर बनाए। उसके ऊपर तेल, सिन्दूर व पान चढ़ाए। अपने सामने उसे स्थापित करे। एक नारियल रखे। नित्य तेल का दीपक जलाए। धूप में छड़-छड़ीला, कपूर, केशर, लौंग डाले। नित्य २१ बार मन्त्र पढ़े। २१ वें दिन भैरूँ सिद्ध होंगे। दर्शन दें, तब बाकला पान, सुपारी आदि दे। बकरे की पूरी कलेजी दे। एक बोतल शराब की धार दे। इससे भैरूँ सिद्ध हो जाएंगे। इससे मन्त्र में उल्लिखित सभी प्रयोजन और कार्य सफल होंगे।

## ३. साँगलियाँ की धूनी का सरभङ्ग मन्त्र (जँजीरा)

ॐ गुरू जी ! सेत घोड़ा सेत पलान, चढ्या बाबा महमदा पठान। कोल हिन्दु, कोल मुसलमान, कोल का बाँध्या, जमीन - आसमान तारिया। गुरू जागिया, मुसाण मैं सेया। बाबा रहमान, तले धरतरी धीर धरावे, उपर अमर सकल पर सोए। सरभङ्ग पुन सकल पर वापे, सरभङ्ग इन सकल पर गाजे। सरभङ्ग चन्द सकल पर वापे। सरभङ्ग सूरज की किरण, सूरज-सी जोत में सरभङ्गी, सबका सङ्गी। सबको भेद बताओ। ऊँचा-नीचा राजा पकड़ू, भ्रान्त कबहूँ न लाऊँ। मैं अघोड़ का चेला, फिरूँ अकेला। न कोई शीश निवाऊँ। मैं भटयारी कामणगारी, घर-घर लाय लगाय द्यूं नारी। कामन - टूमन करूँ सनेवा, राखूं बरसता मेहवा। शिखर चोढ़ द्यूं वाणी, पढ़न्ता कबहूँ न मागे पाणी। जोर करे तो जाने न द्यूं, इन्द्री पकड़ निवाऊँ। राजा कर द्यूं, काला मिंढ़ा हाकिम कर द्यूं भैंसा। मौ नाथा में बोलूं, ऊँचा-ऊँचा।

क्या त्यागी, क्या वैरागी, क्या भोपा, भरड़ा भाँड़। इतरे की तो मुण्ड माई, मच्छेरी का माथा मुण्ड। मच्छेरण्डी का मुण्डा-माथा, मत बाँध कूड़-कपट का गाथा। जोगी बड़ा जगत के भीतर। तां तक ध्यान धरिया, जोग - सर कूख से कर ह्यूं न्यारा। उलटा चरखा चलाऊँ। उल्टा साद समेटूं बाणी, गोरखा बोल्या उल्टी बाणी। कूव उपर चादर टाणी। मङ - मसान धुनी घाली। आसन डेरा डालूं, जगत बुलाऊँ डेरे। हरी लीरी, बावन भैरूं, छप्पन कलुवा, नौ नारसिंह, सात बायाँ बीच बायली, बाही म्हारी दासी। उठ मूठ कामन-करतूत, छल-छतर, धक्का-धूम, भूत-पलीत, जीन - खपीस, कचिया - मुसाण, जलोटिया-फलोटिया, डाकिनी-साकिनी, नजर-टपकार, छतीस रोग, बहत्तर बलाय, बाँध करता लाय। मेरा हकाला कारज सही नहीं करो, तो राजा रामचन्द्र की करोड़ - करोड़ बार दुहाई। फिरे छट सोद अन आसमान खोदूं, तीजी ताली इतरे में अटकाऊँ नाड़ा। कदेई न निकसे बाला, सूखा छोड़ गरब में राखे। तीजी घड़ी बढाऊँ बाला, सूखा छोड़ गरब में राखे। तीजी घड़ी बढाऊं बाला, धीरी कर उपचार चलाऊँ। आखर आगे चले ना पाखर, मारु मेख बजर को टाकर। मन्त्र उड़द के गोला बाऊँ, पत्थर फोड़ के जड़ाऊँ। सीधाई का मूसा पकड़-ठोक ह्यूं धड़ माई, टिकालिया मुसाण की छाई। लागे फकड़ की टक्कर, जङ्गी सा बादशाहा होज्या,सूक साक लकड़ सरभङ्ग लीला जाप सम्पूर्ण, सही सत का गछि बैठ के, बीजी आपो आप कही।

**विधि :** ४१ दिनों तक प्रति-दिन सुबह-शाम-दोपहर में कुएँ पर उक्त मन्त्र का ५१ बार जप करे। जप की अवधि में एक ही अन्न खाए, एक ही समय खाए। पूर्व - पश्चिम - उत्तर—तीनों दिशाओं में दीपक जलाए। तीन बार भोग लगाए। शराब, बाकला का भोग लगाना चाहिए। जितने कार्य मन्त्र में लिखे हैं, वे सभी सम्पन्न होंगे।

## ४. सिद्ध भैरव-मन्त्र

ॐ काला भेरूं, कबरा केश। काना कुण्डल, भगवा वेष। तिर पतर लियो हाथ, ६४ जोगनियाँ खेले पास। आस माई, पास माई। पास माई, सीस माई। सामने गादी बैठे राजा, पीड़ो बैठे प्रजा मोहि। राजा को बनाऊँ कूकड़ा, प्रजा का बनाऊँ गुलाम। शब्द साचा, पिण्ड काचा। गुरू का बचन जुग-जुग साँचा।

**विधि :** भैरो जी के चित्र या मूर्त्ति के सम्मुख धूप-गुगल देकर उक्त मन्त्र की १ माला नित्य जपे। 'मद्य' अर्पित करे। ८ दिन करे। आठवें दिन भैरव जी को 'बलि' दे। 'बलि' में एक नारियल, बाकला सवा पाव, रोट सवा सेर, लाल कनेर के फूल दे।

## ५. श्रीबटुक भैरव उतारा विधि

कहीं यदि किसी आत्मा का असर हो अथवा ग्रह - बाधा से सन्तानादिकों में बाधा पहुँचती हो, तो श्रीबटुक जी के उतारे से शान्ति प्राप्त होती है। रविवार - रविवार अथवा रविवार, सोमवार, मङ्गलवार -- तीन दिन करे।

उतारे के लिए सरसों के तेल में बने ११ उरद के बड़े, ११ उरद की दाल-भरी कचौड़ियाँ, ७ मेल की मिठाई १-१, लाल फूल, सिन्दूर, ४ बत्तियों का दीपक, १ नींबू, १ कुल्हड़ जल ले। सिन्दूर को चार बत्तीवाले दीपक के सरसों के तेल में डाले। फूल, कचौड़ी, बड़े, मिठाई सभी सामग्री एक पत्तल पर रखे तथा मन-ही-मन यह कहे कि "यह भोग हम श्रीबटुक भैरव जी को दे रहे हैं, वे अपने प्रमथ भूत-प्रेतादिकों को खिला दें और सङ्कट-ग्रस्त व्यक्ति के ऊपर जो आत्मा है या ग्रहों की कु-दृष्टि है, उसे शान्त कर दें।" समस्त सामग्री को सङ्कट-ग्रस्त व्यक्ति के सिर के ऊपर ७ बार उतारा करके किसी चौराहे पर रखवा दे। सामग्री रखकर लौट आए, पीछे न देखे।

उतारा परिवारवालों से कराए। अपने लिए हो, तो स्वयं करे।

## ६. कृत्या-निवारण हेतु प्रयोग

आई की, माई की, आकाश की, परेवा पाताल की। परेवा तेरे पग कुन कुन। सेवा समसेर जादू गीर समसेर की भेजी। ताके पद को बन्द कर, कुरु कुरु स्वाहा।

**विधि :** एक नींबू को चार टुकड़ों से चीरे। चारों टुकड़ों पर ४-४ बार उक्त मन्त्र पढ़कर चारों कोनों में फेंक दे। इससे 'कृत्या' का निवारण हो जाएगा।

पूज्य पं० शिववल्लभ जी की कृपा से प्राप्त

# श्रीबगला महा-विद्या
# शत्रु-विध्वंसन-प्रयोग

प्रस्तुत-कर्त्ता : श्रीकौशिकाचार्य जी महाराज

श्री पीताम्बरा-साधना-धाम, १७८ कृष्णानगर
गुरुद्वारा मार्ग, नैनी, प्रयाग-राज (उ० प्र०)-८

[ जब कोई शत्रु अस्त्र आदि लेकर सामने आता हो और प्राण सङ्कट में पड़ गया हो या कोई अपनी जीविका को नष्ट करना चाहता हो या सब तरफ से शत्रुओं में घिर जाय और कोई उपाय सूझता न हो, ऐसी भयङ्कर विपत्ति में ही इस प्रयोग को करे। वैसे ही कौतूहल के वश होकर या आजमाइश के लिए इस 'प्रयोग' को नहीं करे क्योंकि महा-विद्या वल्गा-मुखी इससे कीलित हैं और कौतूहल करने-वाले का अनिष्ट होता है या प्रयोग निष्फल जाता है। यह गुरु की शपथ भी है। ]

**विधि :** शनिवार के दिन जिस व्यक्ति की मृत्यु हुई हो और उसी दिन जिसको जलाया हो, ऐसे मुर्दे की चिता के समीप शनिवार की अर्ध-रात्रि में गुड़ और शराब लेकर जाए। चिता को प्रणाम कर गुड़ को अग्नि में डाल दे और शराब से उस चिता के कोयले बुझा कर ले आवे। उन कोयलों का चूरा कर, हरताल मिलाकर स्याही बना ले। उस स्याही से, नीम की कलम से, श्मशान के उस घड़े पर, जिससे मुर्दे को नहलाया गया हो, उस घड़े के पेंदे के ठीकरे पर नीचे लिखा यन्त्र लिखे। यथा—

पुरुषाकृति यन्त्र में बगला - महा - विद्या का विलोम मन्त्र लिखे। 'हा' दाएँ पैर में, 'स्वा' बाँएँ पैर में। 'सर्व - दुष्टानां' विलोम इस प्रकार लिखे, जो नाभि हृदय में वर्तुल बन जाए। 'ह्लीं'-बीज भी ब्रह्म-रन्ध्र पर 'ल्हीं' लिखे। इसमें 'प्रणव' को त्याग देना चाहिए।

हृदय-प्रदेश पर शत्रु का नाम लिखकर चारों ओर 'ह्रीं' लिख दे। अब साधक सरसों के तेल का या मीठे तेल का 'दीपक' श्मशान में छोड़े हुए वस्त्र की बत्ती बनाकर जलावे। 'दीपक' को उड़द की दाल के ऊपर रखे। साधक पीताम्बर पहन कर पीला तिलक लगा कर, हल्दी से 'दीपक' की पूजा करे। पीले पुष्प चढ़ाए और दीपक की लौ में भगवती का ध्यान कर वल्गा - मुखी के मन्त्र का एक हजार बार विलोम जप करे। मद्य-मांस का भोग लगाए। यदि 'दीपक' की लौ सीधी जाए, तो कार्य सिद्ध समझे और लौ टेढ़ी-मेढ़ी या बत्ती से तेल में बुलबुले उठें, तो कार्य-सिद्धि में विलम्ब जाने।

यदि शत्रु का समूल नाश चाहे, तो 'दीपक' को १०८ बार विलोम मन्त्र पढ़कर बाँएँ हाथ से इस प्रकार उलटा कर दे कि नीचे रखा ठीकरा टूट जाए। 'दीपक' श्मशान की मिट्टी (जो मूल, आर्द्रा, भरणी नक्षत्र में शनिवार को लाई हुई हो) से बनाना चाहिए। विलोम मन्त्र इस प्रकार है—

**।। हुं फट् हावास् ल्हीं यशनावि ध्दिबु यलकी व्हांजि यभतंस् दंप खं मु चं वा नांटाष्दु वर्स खिमुलागब ल्हीं फट् हुं ।।**

इस मन्त्र के प्रयोग से बलवान-से-बलवान शत्रुओं का समूह उसी प्रकार नष्ट हो जाता है, जैसे अग्नि से तुषों का ढेर।

# जिज्ञासाएँ और समाधान

## [ १ ]

**समाधान-कर्त्ता : श्री अनिलगोविन्द बोकील**

हडपसर, पुणे (महा-राष्ट्र)

'शाबर - मन्त्र - संग्रह', भाग ७ के प्रकाशित होने के बाद मुझे अनेक पत्र प्राप्त हुए हैं। सभी पत्र - लेखकों तथा पाठक - बन्धुओं को धन्यवाद ! इन पत्रों से यह ज्ञात होता है कि यदि कोई नई विद्या प्रकाशित होती है, तो भारतीय बन्धु उन्हें अपनाते हैं। कुछ बन्धुओं को 'मन्त्र'-जप के समय ही अनुभव हुए। यह हमारे लिए सन्तोष की बात है। कुछ बन्धुओं को भाषा में कठिनाई का अनुभव भी हुआ है। ऐसे बन्धुओं की जिज्ञासाओं का समाधान पत्र द्वारा किया जा चुका है। यहाँ उस समाधान को अन्य बन्धुओं के लाभ की दृष्टि से प्रस्तुत किया जा रहा है। यथा—

(१) शाबर-मन्त्र-संग्रह, भाग ७, पृष्ठ ७७-७८ - (६) वीर-जागृति। 'खोबरा' से सूखे नारियल का तात्पर्य है। मराठी में इसे 'खोपरा' या 'कोपरा' भी कहते हैं।

(२) पृष्ठ ७६, पंक्ति ६ में छपा है—"दूसरे 'अमुक' के स्थान पर इच्छित का नाम प्रत्यक्ष प्रयोग के समय लेना।" इस वाक्य का अर्थ दूसरे शब्दों में इस प्रकार है—"सिद्धि - विधान करते समय पहले 'अमुक' के स्थान पर इच्छित वीर का नाम पढ़े। दूसरा 'अमुक'-शब्द वैसा ही कहा जाएगा। 'सिद्धि-विधान' के बाद प्रयोग के समय, जो दो 'अमुक' - शब्द हैं, उनमें से पहले 'अमुक' के स्थान पर सिद्ध किए गए वीर का नाम लिया जाएगा और दूसरे 'अमुक'-शब्द के स्थान पर जिसके लिए प्रयोग करना है, उसका नाम लिया जाएगा। उदाहरणार्थ, यदि 'हनुमान वीर' इच्छित वीर हैं और 'देवदत्त शर्मा' नामक व्यक्ति के लिए प्रयोग करना है, तो इस प्रकार पढ़ा जाएगा—"हनुमान-वीर दौड़े जादू-टोना, 'देवदत्त शर्मा' को पकड़ना।"...आदि

जब वीर कार्य पूछेगा, तब कार्य का निवेदन उससे अपनी भाषा में करे।

(३) पूजा की समस्त सामग्री को पूजा के बाद पीले वस्त्रों में बाँधकर आक के पौधे के पास 'यन्त्र'-सहित गाड़ देना चाहिए। जलते हुए चारों दीपक भी। वस्त्र में डालने से दीपक बुझेंगे ही। गाड़ते समय सभी सामग्री पर मिट्टी स्वतः गिरेगी।

(४) कुछ बन्धुओं को मन्त्र-जप करते समय भय - प्रद अनुभव भी हुए हैं। ऐसे बन्धुओं ने पूछा है कि भय लगे, तो क्या करना चाहिए ? इसके लिए हमने विधि में ही स्पष्ट कर दिया है। जिन्हें डर लगता हो, वे इस 'प्रयोग' को न करें। वेताल आदि की जागृति मनोरञ्जन की बात नहीं है। अतः पूर्णतया निडर बन्धु ही 'प्रयोग' करें। अन्यथा हानि हो सकती है और हम उसके लिए उत्तर-दायी नहीं।

(५) सभी जिज्ञासु बन्धुओं से निवेदन है कि यदि हमारे द्वारा प्रेषित प्रयोगों के सम्बन्ध में कुछ पूछना हो, तो पत्र द्वारा पूछ सकते हैं अथवा सम्भव हो, तो मिल सकते हैं। पत्र द्वारा पूछते समय उत्तर हेतु आवश्यक लिफाफा या डाक-टिकट अवश्य भेजें। धन्यवाद।

## [ २ ]

**समाधान-कर्त्ता : श्रीयुत चन्दूलाल गण्डालाल शाह**
जामनगर (गुजरात)

**१ प्रश्न-कर्त्ता : श्री ओङ्कारप्रसाद शुक्ल** शहडोल (म० प्र०)

प्रश्न १ : शाबर मन्त्रों का उत्कीलन आवश्यक है या नहीं ?

उत्तर १ : शाबर मन्त्रों का उत्कीलन करना आवश्यक नहीं है क्योंकि शाबर मन्त्र सिद्ध मन्त्र माने गए हैं।

प्रश्न २ : शाबर-मन्त्र-साधना के पहले 'सुमेरु-मन्त्र' या 'मेरु-मन्त्र' का जप करना आवश्यक है या नहीं ?

उत्तर २ : शाबर-मन्त्र-साधना के पहले मेरु या सुमेरु मन्त्र का जप आवश्यक है। 'कवच' या 'आत्म - रक्षा' का मन्त्र भी, जपना चाहिए।

प्रश्न ३ : शाबर-मन्त्र-साधना में बड़े मन्त्र को कागज पर लिखकर और सामने रखकर 'जप' किया जा सकता है या नहीं ?

उत्तर ३ : कागज पर लिखकर 'जप' किया जा सकता है। इसमें कुछ विशेष लाभ भी है। शुद्ध मन्त्र-जप से अल्प समय में मन्त्र चैतन्य होता है और कार्य-सिद्धि होती है।

प्रश्न ४ : किसी महा-पर्व में दो-तीन साधनाएँ एक साथ की जा सकती हैं या नहीं ?

उत्तर ४ : दो-तीन साधनाएँ एक साथ नहीं करनी चाहिए। एक बार में एक ही 'प्रयोग' करे। यदि समय बचे, तो उसी 'प्रयोग' की अधिक आवृत्ति करे।

प्रश्न ५ : 'दीपावली' में जो 'जप' का उल्लेख है, वह क्या प्रत्येक अमावास्या को किया जा सकता है ?

उत्तर ५ : हाँ, किया जा सकता है, किन्तु 'दीपावली' के दिन कम-से-कम १०८ बार मन्त्र-जप अवश्य ही करना चाहिए क्योंकि 'दीपावली' की अमावास्या दुर्लभ है। फिर विकल्प की भी अपनी मर्यादा है।

प्रश्न ६ : यदि शाबर-मन्त्र-साधना का अनुष्ठान चल रहा हो और बीच में उसे छोड़कर बाहर जाना पड़े, तो शेष अनुष्ठान को आगे पूर्ण करने से कार्य-सिद्धि होगी या नहीं ?

उत्तर ६ : कार्य-सिद्धि तो भाग्य-वश है। श्रद्धा, विश्वास व अपेक्षित जाग्रति न छोड़े। यदि किसी परिस्थिति - वश प्रयोग अधूरा छोड़ना पड़े, तो बाद में पूरा प्रयोग फिर से करे। आधा पहले और आधा बाद में न करे।

प्रश्न ७ : रविवार या मङ्गलवार से प्रारम्भ होनेवाली साधनाएँ शनिवार से प्रारम्भ हो सकती हैं या नहीं ? प्रयोग का आरम्भ दिन में करें या रात्रि में ?

उत्तर ७ : प्रयोग-विधि में जिस वार का निर्देश हो, उसी वार से प्रारम्भ करे। रवि या मङ्गल के प्रयोग शनिवार से न करे। जिस प्रयोग की विधि में शनिवार का उल्लेख हो, केवल वही प्रयोग शनिवार से करे। वार आदि के सम्बन्ध में अपनी इच्छानुसार परिवर्तन न करे। जिस मन्त्र की प्रयोग - विधि में साधना का समय न लिखा हो, वह ब्राह्म - मुहूर्त में या सूर्योदय से करे। जिस मन्त्र की प्रयोग-विधि में रात्रि का उल्लेख हो, वह रात्रि में ही करे।

### २ प्रश्न-कर्त्ता : श्रीयुत एस० एस० कोकरे

बेलगाँव (कर्नाटक)

प्रश्न १ : विधि-विधान से अनेकों प्रयोग करने के बाद भी हमारी समस्याओं का अन्त नहीं हो रहा है। कोई ऐसी साधना बताएँ, जिससे 'प्रत्यक्षीकरण' हो और समस्याओं का अन्त भी हो।

उत्तर १ : आपके ग्रह अनुकूल नहीं हैं। इससे साधनाएँ निष्फल हो जाती हैं। ग्रहों के विपरीत होने पर निम्न - लिखित मन्त्र का भी जप करे—

**हरि ॐ तत्सत् जय गुरुदत्त।**

उक्त मन्त्र के सतत जप से ग्रहों की अनुकूलता होगी। साधनाएँ भी सफल होंगी। कुछ अन्य उपाय भी हैं, यथा - (क) ७ गुरुवार को हल्दी मिलाकर पीला चावल बनाए और पक्षियों को खिलाए। (ख) व्यापार के स्थान पर नीबू व मिर्च बाँधे तथा उसके साथ एक कोयले के टुकड़े को किसी स्त्री के बाल से बाँधकर लटका दे। (ग) साधना-कक्ष में श्रीदत्तात्रेय भगवान् का चित्र रक्खे।

देव-देवी का प्रत्यक्षीकरण भाग्य - वश होता है। आशा बनाए रहें। पात्रता बढ़ाएँ। शुभ कर्मों द्वारा यथा-शक्ति यथा-मति पुण्योदय करे। निरीक्षण-परीक्षण करते हुए आत्म-शोधन, आत्म - दर्शन करे। अन्तरङ्ग की हलचल से भी भाग्योदय होता है।

### ३ प्रश्न-कर्त्ता : श्रीयुत शान्तीलाल शारदा

भीलवाड़ा (राजस्थान)

प्रश्न : वीर-साधना का सात्विक प्रयोग बताएँ।

उत्तर : 'घण्टाकर्ण' महा-वीर का स्तोत्र-पाठ ११ बार या मन्त्र-जप १० माला करे। मङ्गलवार को गुलाब का फूल अथवा गुलाब के फूलों का हार चढ़ाए। ३ या चार मास में कार्य-सिद्धि होगी।

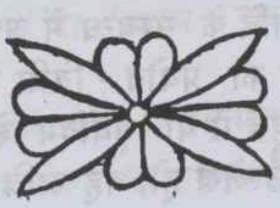

# उपयोगी प्रकाशन

| | |
|---|---|
| हिन्दुओं की पोथी | २५.०० |
| वर्ण-बीजाक्षर-साधना | ४०.०० |
| भैरवोपदेश | १००.०० |
| अनुभूत साधना | २५.०० |
| बीजात्मक सप्तशती | २५.०० |
| श्रीबटुक-भैरव-स्तोत्र | २५.०० |
| दीक्षा-प्रकाश | ३५.०० |
| साधना-रहस्य | ६०.०० |
| स्वर-विज्ञान | ७५.०० |
| मन्त्र-कोष | ३००.०० |
| सचित्र मुद्राएँ एवं उपचार | ३०.०० |
| श्रीबगला-साधना, पुष्प १ | ६०.०० |
| नव-ग्रह-साधना | १००.०० |
| महा-पर्व नवरात्र-विशेषांक | १००.०० |
| महा-पर्व दीपावली-विशेषांक | ४५.०० |
| सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग | २०.०० |
| श्री श्रीविद्या-साधना, पुष्प १ से ५ | २००.०० |
| श्रीयन्त्र-रहस्य | २०.०० |
| विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती) | ४५.०० |
| सप्तशती के विविध प्रकार | २५.०० |
| श्रीबाला-कल्पतरु | ३५.०० |
| श्रीसूक्त-विधान | ३५.०० |
| श्रीरमा-पारायण | ३५.०० |
| श्रीकमला-कल्पतरु, पुष्प १ से ३ | १२०.०० |
| श्रीदुर्गा-साधना, पुष्प १ व २ | ५५.०० |
| मन्त्र-कल्पतरु, पुष्प १ व २ | ७०.०० |

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान

**कल्याण मन्दिर प्रकाशन**

अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज - २११००६